मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

शाबर मन्त्र-संग्रह

भाग-१२

मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

कल्याण मन्दिर प्रकाशन
इलाहाबाद-२११००६

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

शाबर मन्त्र-संग्रह

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

(बारहवाँ भाग)

आदि-सम्पादक
'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल
सम्पादक
ऋतशील शर्मा

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

दूरभाष (०५३२)२५०२७८३
मोबाइल : ९४५०२२२७६७

सर्वाधिकार सुरक्षित

चौथा संस्सकरण
गुप्त नवरात्र, सं० २०६९ वि०
(२० जून, २०१२)

मूल्य : ४०-००

मुद्रक :
परा-वाणी प्रेस
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

अनुक्रम

दो शब्द २

१. शाबर मन्त्रों से रोगोपचार ५

❀ 'कुल-वाणी-रत्न' पं. रामशङ्कर उपाध्याय, बक्सर (बिहार)

२. तीन उपयोगी मन्त्र १४

❀ डॉ. अजितनारायण सिंह तोमर, मिर्जापुर (उ. प्र.)

३. 'कैथी'-लिपि के शाबर मन्त्र १५

❀ पं. दिनेशचन्द्र शास्त्री, वैशाली (बिहार)

४ त्वरित फल-प्रद श्रीगणेशोपासना १७

❀ श्री अनिल गोविन्द बोकील, पुणे (महा-राष्ट्र)

५. शाबर मन्त्र का अद्भुत चमत्कार २०

❀ श्री सुधीरकुमार, बेगूसराय (बिहार)

६. शाबर मन्त्र २१

❀ श्री रामगोपाल सिंह, मेरठ (उ. प्र.)

७. तीन शाबर मन्त्र २९

❀ श्री सूर्यराज अनन्तस्वरूप टण्डन, अमरोहा (उ. प्र.)

८. सर्प-विष-नाशक तुलसी-मन्त्र ३१

❀ श्री जगदीशनारायण बिलगइयाँ 'मधुप' दतिया, (म. प्र.)

९. विलक्षण शाबर मन्त्र ३२

❀ श्री रजनीशकुमार, परेड, कानपुर (उ. प्र.)

१०. सरल शाबर-मन्त्र-संग्रह ३५-९२

* श्री चन्दूलाल गण्डालाल शाह, जामनगर (गुजरात)

(१६) वर्षा-सम्बन्धी मन्त्र ३५
(१७) चोरी से सम्बन्धित मन्त्र ३७
(१८) मोहन मन्त्र ४१
(१९) आकर्षण मन्त्र ४६
(२०) वशीकरण मन्त्र ४९
(२१) प्रसव-सम्बन्धी मन्त्र ६४
(२२) स्त्री-सम्बन्धी मन्त्र ६७
(२३) विष-निवारक मन्त्र ६९
(२४) सर्प-स्तम्भन मन्त्र ७२
(२५) हिंसक जीव-जन्तु-सम्बन्धी मन्त्र ७३
(२६) अग्नि-सम्बन्धी मन्त्र ७५
(२७) शत्रु-त्रासन-मन्त्र ७८
(२८) शत्रु-त्रासन के कुछ टोटके ९१
(२९) 'वशीकरण' हेतु टोटका ९२
(३०) ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त करने हेतु टोटका ९२

११. शाबर-मन्त्र-प्रयोग ९३

* सैय्यद महम्मद सादिक कादिरी बापु, जामनगर (गुजरात)

१२. दुर्लभ शाबर-मन्त्र १०८

* 'कुल-वाणी-रत्न' श्री भूपेन्द्रदत्त शर्मा, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

शाबर-मन्त्रों से रोगोपचार

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' पं. रामशङ्कर उपाध्याय

वैद्य-विशारद, मानस-मनीषी एवं तन्त्र-तितिक्षु,

ग्राम रैका, पो. आथर, जि. बक्सर (बिहार)-८०२१२६

देहातों प्रायः हम देखते हैं कि अनेक रोग मन्त्रों से ही दूर हो जाते हैं। चिन्तन करने पर बात समझ में नहीं आती क्योंकि रोग प्रायः कीटाणुओं से होते हैं। मन्त्रों से क्या वे कीटाणु नष्ट हो जाते हैं? सर्प-दंश में विष इञ्जेक्शन द्वारा शरीर में प्रवेश करता है। क्या वह विष मन्त्र से प्रभाव-हीन हो जाता है? यदि हाँ, तो कैसे? मेरे गाँव के पड़ोस में एक गाँव है—'कञ्जिया'। वहाँ एक सिद्ध महात्मा हैं। उन्होंने एक घर में गायत्री- मन्त्र का इतना जप किया है कि वह स्थान ही सिद्ध हो गया है। दूर-दूर से लोग सर्प-दंशित या बिच्छू - दंशित रोगी को लाते हैं। वहाँ पहुँचते ही विष समाप्त हो जाता है और रोगी हँसते-खेलते घर लौटता है। ये सब चमत्कार हैं। तो हम उन मन्त्रों का उपयोग करें, जिनसे रोग - निवारण होता है। यहाँ भिन्न-भिन्न रोगों के 'शाबर मन्त्र' दिए जा रहे हैं।

१. रोग-दोष दूर करने का मन्त्र

आक अरण्डो फूल मँगावे, पुनि तापर सेन्दूर लगावे।
गुग्गुल-धूप देय अति चायन, मन्त्र-राज यह करिके गायन॥

ॐ श्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि : रोगी के शिर से उतार कर बाँएँ कोने में वह धूप गाड़ दे, तो सभी रोगों के दोष मिट जाएंगे।

२. घाव-झारने का मन्त्र

राम मारे पेढुकी, लछुमन ओढ़े घाव।
फूले औ न पाके, दरै सूखि जाय॥

३. बेरवा, घिनही, जहरवात, थनैली, इलगोहिया का मन्त्र

लङ्का के दानव पलङ्का के पूत। अञ्जनी के पूत नरक हवा झारे, अञ्जनी के पूत बेरबा झारे, अञ्जनी के पूत घिनही झारे, अञ्जनी के पूत जहर - वात झारे। अञ्जनी के पूत थनैली झारे, अञ्जनी के पूत गाहिया झारे। नाचत आवे—नाचत जाय। खेलत - खात पखण्डे जाय। पिण्ड की सामनत्री हङ्कु - डङ्कुनी आलीम-सालीम दुख स्वाहा हो जाय। राम-लछुमन तीनों भाय, बेरवा के पान में खाय। राम-लछुमन तीनों भाय, धूकं च नरक हवा झारे, धूकं च जहर-वात झारे, धूकं च थनैली झारे, धूकं च गोहिया झारे। हमरे झारे लेड़ झूरि जाय॥

४. कर्ण-पीड़ा-निवारक मन्त्र

आसमीन न गोट वन्हीं, कर्न-हीन न जायते। दोहाई महा-वीर की, जो रहे कान पीर की। अञ्जनी-पुत्र कुमारी, बाँएँ पुत्र महा-बल को मारी। ब्रह्मचारी हनुमन्ताई नमो नमो। दोहाई महा-वीर की, जो रहे पीर मुण्ड की॥

५. प्रेत भगाने का मन्त्र

त्वन्माया - मोहिताः सर्वे, ब्रह्माद्यास्त्रिदि वौकसः।
गता हि त्वाम ज्ञानन्तो, देवि ! त्रिशूल - धारिणि !॥

विधि : उक्त मन्त्र पढ़कर होम कर दे, भूत भाग जायगा।

६. ज्वर-नाशक मन्त्र

(क) सर्व-ज्वर-नाशक :

ॐ नमो वानरस्य मुखं, घोरमादित्य-सम-तेजसम्।
तस्य स्मरण-मात्रेण, ज्वरो नश्यति तत्-क्षणात्॥

(ख) एकाहिक ज्वर :

समुद्रस्योत्तरे तीरे, द्विविदो - नाम वानरः ।
तस्य स्मरण - मात्रेण, ज्वर एकाहिको गतः ॥

(ग) जड़ैया बुखार :

वज्र-हस्तो महा-कायो, वज्र-तुण्डो महेश्वरः ।
हतोऽसि वज्र-तुण्डेन, भूम्यां गच्छ महा-ज्वरः ॥

विधि : उक्त मन्त्र को 'भोज-पत्र' पर लिखकर रोगी के गले या भुजा पर बाँध दे ।

पुनः—ॐ वाण-युद्धे महा-घोरे, द्वादशार्क-सम-प्रभे ।
जातोऽसौ हि महा-वीर्यो, मुञ्चत्वेकाहिको ज्वरः ॥

विधि : उक्त मन्त्र को लाल चन्दन से पीपल के पत्ते पर लिख कर रोगी पुरुष की दाहिनी और स्त्री की बाँई भुजा पर बाँधे, तो विषम ज्वर दूर हो ।

(घ) सर्व-ज्वर-नाशक मन्त्र :

ॐ नमो भगवते ! छिन्दि छिन्दि, अमुकस्य ज्वरस्य शिरः प्रज्वलित परशु-पाणये पुरुषाय फट् ॥

विधि : उक्त मन्त्र को 'भोज-पत्र' पर लाल चन्दन से लिख कर गले में बाँध दे । अथवा—रेशम के सात तार के डोरे में मन्त्र पढ़-पढ़कर २१ गाँठ लगाए । फिर वह गण्डा गले में बाँध दे । अथवा मन्त्र पढ़कर छुरी से धरती पर काटता जाय और रोगी पर फूंक मारता जाय ।

(ङ) एकान्तरा ज्वर-नाशक :

ॐ गङ्गायामुत्तरे कूले, अपुत्रौ तापसौ मृतौ ।
ताभ्यां तिलोदकं दद्यान्मुञ्चत्येकाहिको ज्वरः ॥

विधि : चौराहे पर या पीपल वृक्ष में या चूहे के बिल में तिल-सहित जल की १०८ अँजुली दे । दो घण्टे में ज्वर उतर जायगा ।

७. चातुर्थिक ज्वर-नाशक मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय, नमः क्रोधेश्वराय, नमो ज्योतिः-पतङ्गाय, नमो नमः सिद्ध-रुद्र आज्ञापयति स्वाहा ।

विधि : सात पीली सरसों से उक्त मन्त्र पढ़कर सात बार रोगी के शरीर में जोर से मारे ।

ये सभी मन्त्र सिद्ध हैं । कण्ठस्थ कर प्रयोग करे ।

८. जड़ियों द्वारा रोगोपचार

ज्वर-निवारक जिन जड़ियों का प्रयोग मैं करता हूँ और जिनसे सफलता मिलती है, उनमें से कुछ नीचे दे रहा हूँ—

(क) रविवार के दिन अपामार्ग की जड़ लाल रङ्ग के सात तार के डोरे में बाँधकर रोगी की कमर में बाँध दे । 'विषम ज्वर' छूट जायगा ।

(ख) चौलाई की जड़ लाल या काले तागे में बाँधकर रोगी के सिर के बाल में बाँध दे । किसी भी तरह का ज्वर हो—छूट जायगा ।

(ग) उल्लू पक्षी के दाहिनी तरफ के पङ्ख को सफेद सूत में बाँध कर रोगी के बाँएँ कान में लटका देने से 'इकतरा ज्वर' दूर हो जाता है ।

(घ) घनरा की जड़ या मदार की जड़ सूत से कान में बाँधने से 'जाड़ा-बुखार' दूर हो जाता है ।

(ङ) सहदेई की जड़ कान में बाँधने से 'चौछिया ज्वर' दूर होता है ।

(च) गूमा का रस आँखों में आँजने से 'विषम ज्वर' दूर होता है ।

(छ) मकड़ी का जाला लाल कपड़े में लपेट कर सरसों के तेल में भिगोकर काजल पारे । इस काजल से रोगी की आँख में अञ्जन लगाने से 'महा-ज्वर' भी भाग जाता है ।

(ज) छिपकली की पूँछ रविवार को काटकर रोगी की भुजा में बाँध देने से 'विषम ज्वर' दूर हो जाता है ।

९. बवासीर-नाशक सिद्ध मन्त्र

(१) ॐ मिमित्तिद्विः ॐ ठः निवासिनि ! गरलं विषं स्वजीर्णं सम्भवं नानाशं नाशय नाशय ठं ठं ठं फट् स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र से कुश द्वारा सात बार अभिमन्त्रित जल पीने से सात दिन में 'बवासीर' दूर हो जाता है।

(२) काली काली महा-काली मतरो बहुभिर्गच्छ यत्-किञ्चित् विहितं तत् कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित जल पीने से 'बवासीर' दूर हो जाता है।

(३) ॐ का का करता करोरि करता आकर करता जो-जो करता सो-सो होय। हे रसना रस ही से पर-बस विष दूर होय। दोहाई लोना चमारी की।

विधि : शौच के पानी को इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर उसी से शौच करे। पानी को जमीन पर न रखे। ऐसा ११ दिन करने से 'बवासीर' दूर हो जाता है।

१०. रोग, ग्रह एवं भूत-प्रेत-नाशक 'नरसिंह'-मन्त्र

ॐ नमो नर - सिंहाय हिरण्य-कशिपु-वक्षःस्थल-विदारणाय त्रिभुवन - व्यापकाय भूत - प्रेत - पिशाच डाकिनी-शाकिनी-कुलोन्मूलनाय स्तम्भोद्भवाय समस्त - दोषान् हन हन, सर सर, चल चल, कम्पय कम्पय, मथ मथ, हुं फट्, हुं फट्, ठः ठः, महा-रुद्र आज्ञापयति स्वाहा।

विधि : मोर-पङ्ख से मन्त्र पढ़ते हुए २१ बार झाड़े।

११. रोग-निवारण हेतु औषधि खाने का मन्त्र

ॐ नमो महा-विनायकाय अमृतं रक्ष रक्ष, मम फल-सिद्धि देहि, रुद्र-वचनेन स्वाहा।

विधि : किसी भी रोग में औषधि को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर लें, तब सेवन करे। औषधि शीघ्र एवं पूर्ण लाभ करेगी।

१२. सन्निपात-ज्वर-नाशक मन्त्र

(क) सात समुद्र की सात बेटी, सातो करें समुद्र में खेती। सन काटे सन बाटे, सन का करे बयारी। भाग-भाग रे सन, हनुमन्त वीर पहुँचे आइ। मेरी आन, मेरे गुरु की आन, ईश्वर-गौरा पार्वती-महादेव की दुहाई।

(ख) कङ्काली कङ्काली कहाँ चली ? कजरी वन। कजरी वन काहे का ? चन्दन-वृक्षा काटे का। चन्दन-वृक्षा काहे का ? काला कोयला करे का। काला कोयला काहे का ? छप्पन छुरी गढ़े का। छप्पन छुरी काहे का ? सन्निपात काटे का। यदि सन्निपात काट के इसी वक्त सारे समुद्र में न बहाए, तो माता काली कङ्काली न कहाए। दोहाई गुरु गोरखनाथ ! बङ्गाल खण्ड, कामरू कामाक्षा देवी की आन।

विधि : दोनों मन्त्र कण्ठस्थ कर ले, जिससे एक ही साँस में बिना अटके पढ़ सके। ग्रहण, दिवाली में इन मन्त्रों को जगा लिया करे। प्रयोग करते समय कोई एक मन्त्र पढ़ते हुए धरती पर सात आड़ी और उन्हें काटती हुई सात खड़ी रेखाएँ लोहे के चाकू या कील से खींचे। दिन में तीन समय झाड़े। रोगी को तुरन्त आराम होगा।

१३. शिर-पीड़ा-निवारक मन्त्र

बार झारे बारुनी, कपार झारे जोगिनी। भौंह झारे ममिता, कलेजा झारे ललिता। ओझा के ओझाई बाँधो, डाइन के चक्कर बाँधो। माई - धीया डाइनी के डाइन बाँधो, बापे - बेटा ओझा के ओझाई बाँधो। चलत मसान बाँधो। यहाँ के ना सीख, कावरू कामाच्छा के सीख, नैना

जोगिन के सीख। सत-गुरु के बन्दे पाँव, हे गुरु ! सरन तोहार !

विधि : मन्त्र पढ़ते हुए हाथ से ललाट झाड़े।

१४. बिच्छू-डङ्क का मन्त्र

पर्वत ऊपर सोरही गाय, ओकरे खुरी बिच्छी बिआय। आठ काठ नौ पोर, बिच्छी उतरे पोरे-पोर। ईश्वर महा-देव की दुहाई, बान तोहार।

विधि : डङ्क - स्थान से मन्त्र पढ़ते हुए नीचे की ओर हाथ सहलाए। कई बार करे, जब तक दर्द दूर न हो।

विशेष : उक्त दोनों मन्त्र छप्पर के नीचे या घर में प्रयोग न करे। बन्धन के बाहर, खुली हवा में रोगी को लाकर झाड़े।

१५. बद-हजमी-नाशक मन्त्र

राम-दूताय हनुमान, पवन-पुत्र हनुमान।

विधि : उक्त मन्त्र से तुलसी की सात पत्तियों को ३१ बार अभिमन्त्रित कर रोगी को खिला दे। शीघ्र लाभ होगा।

१६. पेट-दर्द-निवारक मन्त्र

ॐ नमः शिवाय।

विधि : उत्तर की ओर मुंह कर कुशासन पर बैठकर हाथ में थोड़ा कपूर लेकर १०८ बार उक्त से अभिमन्त्रित कर रोगी को खिला दे, शीघ्र लाभ होगा।

(सन्त श्री विश्वनाथानन्द जी, नियाजीपुर बक्सर की कृपा से प्राप्त)

१७. सर्व-रोग-नाशक मन्त्र

अच्युतानन्त गोविन्द, नामोच्चारण भेषजात्।
नश्यन्ति सकलाः रोगाः, सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥

विधि : सर्व-प्रथम आश्विन मास में धन्वन्तरि-त्रयोदशी के दिन स्नान कर शुद्ध आसन पर बैठकर घी का 'दीपक' जलाकर उक्त मन्त्र का एक लाख अट्ठाइस हजार 'जप' कर सिद्ध करे। यदि एक दिन में

'जप' पूरा न हो, तो लगातार दो या तीन दिन तक 'जप' करे। फिर रोगी झाड़े। रोगी का हाथ अपने हाथ में लेकर मन्त्र जपे। एक घण्टा बीतते-बीतते रोगी को आराम होगा और उसमें नई जीवनी - शक्ति आ जाएगी। इसके बाद रोगी को इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित जल, दूध, पथ्य या औषधि आदि देना चाहिए। रोगी अवश्य ही रोग-मुक्त हो जाएगा। बिना सिद्ध किए शुद्ध व सात्विक भाव से 'प्रयोग' कर सकते हैं।

१८. अन्न-पचाने का मन्त्र

(१) अगस्त्यं कुम्भ-कर्णं च, शनिं च बड़वानलम्।
आहारं पाचनार्थाय, स्मरेत् भीमं च पञ्चकम्॥

विधि : भोजनोपरान्त उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए ७ बार हाथ पेट पर फेरे। इससे गैस्टिक रोग में भी लाभ होता है।

(२) अज्र हाथ वज्र हाथ, भस्म करे सब पेट का भात।
दुहाई हजरत शाह कुतुब आलम पण्डवा की॥

विधि : उक्त मन्त्र पढ़ते हुए ११ बार पेट पर हाथ फेरे।

१९. गठिया वात-दर्द-नाशक-मन्त्र

ॐ मूल नमः धुक्षतमः, जाहि जाहि ध्वांक्षतमः।
प्रकीर्ण अङ्ग प्रस्तार, प्रस्तार मुञ्च मुञ्च॥

विधि : शनि या मङ्गलवार को मोर पङ्ख से झाड़े।

२०. कमर-पीड़ा-निवारक-मन्त्र

चलता आवे उछलता जाय। भस्म करता उह उह जाय। सिद्ध गुरु की आन, मन्त्र साँचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : १००८ बार उक्त मन्त्र जप कर सिद्ध करे। आवश्यकता पड़ने पर कुमारी कन्या के हाथ का शुक्ल-पक्ष में काता सूत लेकर उसे १०१ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर रोगी की कमर में बाँध दे। इससे सभी प्रकार की कमर-पीड़ा दूर होती है।

२१. स्त्रियों के मासिक में अधिक रक्त रोकने का मन्त्र

आर बाँध, धार बान्ध। रक्त की बूँद बान्ध। मेरी आन, मेरे गुरु की आन। ईश्वर - गौरा पार्वती - महादेव की दुहाई।

विधि : उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित जल या औषधि रोगी को पिलाए।

२२. बर्रे-ततैया-डङ्क-निवारक मन्त्र

आन ततैया, मान ततैया कोदन की दुहाई। उतर-उतर री ततैया, हनुमान ने कही। मेरी आन, मेरे गुरु की आन। ईश्वर-गौरा, पार्वती-महादेव की दुहाई।

विधि : लोहे की कील या कण्डे की राख से सात बार झाड़े।

२३. फोड़ा-फुंसी तथा कीड़ा-नाशक मन्त्र

उसपुड़ी पुसपुड़ी छिटक चाँदनी। हे विष महा-विष निर्विषी पानी। मेरी आन, मेरे गुरु की आन। ईश्वर-गौरा पार्वती-महादेव की दुहाई।

विधि : पशुओं को फोड़ा-फुंसी तथा घाव में कीड़ा होने पर अपने बाँएं पैर से चौराहे की सात कङ्कड़ी लेकर, प्रत्येक कङ्कड़ी को मन्त्र पढ़कर पशु के घाव के समीप शरीर पर मारे। ऐसा तीनों समय करे। कीड़े मर कर गिर जाएंगे।

२. दाद-नाशक-मन्त्र

विषक विष के पानी, विष करिया मक्षा, उजरा दाद-दिनाय के क्षे क्षे करिए। मेरी आन, मेरे गुरु की आन। सिद्ध यती गुरु गोरखनाथ बङ्गाल-खण्ड कामरू - कामाक्षा देवी की आन।

विधि : उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल रोगी को पिलाए।

तीन उपयोगी मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : डा० अजितनारायण सिंह तोमर उर्फ
स्वामी अच्युतानन्द
'कुल गुरु', प्रणम कुमारी सेवा संस्थान, प्रणम-धाम,
ग्रा. कन्तित, पो. विन्ध्याचल, जि. मिर्जापुर (उ. प्र.)

१. सर्व-बाधा-निवारक-मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरून का, ईश्वर वाचा। अजरी-बजरी, बाड़ह बजड़ी में कजड़ी। दसों द्वार छवा, और के घाले तु पलट हनुमन्त वीर उसी को मारे। पहली चौकी गणपति, दूसरी चौकी में हनुमन्त। तीसरी चौकी में भैरव, चौथी चौकी देत रक्षा करन को। आवे श्रीनरसिंह देव जी। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। दुहाई प्रणम देवी की।

विधि : पहले दस रात्रियों में कम - से - कम २१ माला 'जप' कर मन्त्र सिद्ध करे। फिर आवश्यकतानुसार 'प्रयोग' करे।

२ सर्प-भगाने का मन्त्र

फरीद बाबा की कामरी, औ अँधियारी रीष। तीन चीज याद राखौ, नाहर चाहुर विष।

विधि : उक्त मन्त्र पढ़कर चारों ओर सरसों छिड़के।

३. वर्षा, आग, आपत्ति आदि को रोकने का मन्त्र

ऐसन बाँधो डैसन बाँधो, बाँधो मन के काया। तीन लोक के पृथ्वी बाँधो, बगलामुखी माया। बाँध-बाँध रे बैरी भूत। आपन गुन लाए ले, पराए गुन छुड़ाए दे। तुरिया मालिन जुगुमी अखमियाँ। श्रीगौरा - पार्वती की दुहाई। दुहाई प्रणम देवी की। ●●●

'कैथी'-लिपि के शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० दिनेशचन्द्र शास्त्री
श्री अवध ज्योतिष कार्यालय, ग्रा. मलाही अकबर, पत्रा. सराय,
जि. वैशाली (बिहार)–८४४१२५

प्रस्तुत 'शाबर-मन्त्र' हमारे पास 'कैथी'-लिपि में है। श्री ऋतशील शर्मा जी के निवेदन पर इन्हें 'देव नागरी' में परिवर्तित कर प्रस्तुत कर रहा हूँ। मन्त्र जिस रूप में हैं, उसी रूप में प्रस्तुत हैं। आशा है कि विज्ञ बन्धुओं को शोध-कार्य में इनसे सहायता होगी और ये लुप्त न होंगे।—प्रस्तुत-कर्त्ता

१. आसन बाँधने का मन्त्र

अइठक बानो बइठक बानो, बानो चारो दिशा। माई-धिया डाइन बानो, बापे - पूता ओझा बानो जइवे कौना दिशा। जहाँ ले लागे मोर ताली, तहाँ पर वज्र के केमारी। हम खोली त खोला, मेरे गुरु खोलत खोले। गुरु भाई खोले न खुले, दोसर खोले छाती फाट मरे।

२. सर्प निकालने और बुलाने का मन्त्र

(क) एक कारी कमरी दोसर अन्हारी रात, छोड़ सर्पा हाट-बाट आग्रल गरुण के ठाठ। दोहाई ईश्वर - महादेव गौरा-पार्वती के। सर्पो चली जास—सरसों।

(ख) नाही कारी कमरी, नाही अन्हारी रात। आब सर्पा हाठ-वाट, नाहीं गरुड़ के ठाठ। सर्पा चली आयो।

उक्त मन्त्र (ख) सर्प बुलाने का है, इसे पढ़कर घर में सरसों छींटे।

४: आग बुझाने का मन्त्र

असान वानो विसान वानो, वानो भोरा घाठ। साठ श्रानो, कोठि वैसन्दर वानो। हस्त हमारा माई आनहो

देखा, समझ के मोहि देखि बुझाई। हनुमत वानो, पानी शीतल होइ जाई। अगिन भवे तके भकेत जसमती, हाथा हाँ वैसन्दर वानो नारायण तेहि शक्ती। गुरु की शक्ति, मोरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

५. कटोरा हाँकने का मन्त्र

जम्भ चले, जामेश्वर चले। स्वर्ग ही राजा इनर चले, पाताल ही राजा का सुको चले। चौसठ सौ जगिन चले, स्वांस चले। जम्भ चले, वाटन चले। एही वाटे गेलन चोरा, एही वाटे चले कटोरा—काँशा के कटोरा।

त्वरित फल-प्रद श्रीगणेशोपासना

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री अनिल गोविन्द बोकील
१८/१ ड, गोंधळेनगर, हडपसर, पुणे (महा-राष्ट्र)-४११०२८

(१) अभिचार-निवारक 'सोऽहं गणेश-साधना'

महा-शिव-रात्रि, भाद्रपद शुक्ल या अन्य शुभ - मुहूर्त पर साधना प्रारम्भ करे। साधना ब्राह्म-मुहूर्त में करे। स्नानादि के बाद साधना-कक्ष तक खड़ाऊँ पहन कर जाए, तो अति उत्तम। 'चन्दन' या 'भस्म' लगाकर बैठे। साधना-कक्ष में साधक के अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति नहीं होना चाहिए। साधक स्वयं भी साधना - समय छोड़कर अन्य समय वहाँ न जाए।

चिष्ट-चिष्ट प्रवृत्ते गुरू राम चतुष्टे ह्रीं क्लीं कुर्मस्टे।

श्रीगणेश - पूजन के बाद उक्त मन्त्र नित्य ५१ बार **सोऽहम्** के साथ एकता करके जपे। **सोऽहम्** के साथ एक - रूप करने की पद्धति 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ८, पृष्ठ ३३-३५ पर प्रस्तुत है। इस प्रकार २१ दिन साधना करने से मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र - सिद्धि होने पर मन्त्र द्वारा सभी प्रकार के अभिचारों का निवारण होता है। कुछ व्यक्तियों में अन्य आत्मा, प्रेतात्मा आदि का सञ्चार होने से वे प्रायः दुःखी रहते हैं। ऐसे पीड़ित व्यक्ति को सामने बैठाकर सिर पर हाथ रखकर ११ बार मानसिक रूप में मन्त्रोच्चारण करे। इससे पीड़ित व्यक्ति तुरन्त बोलने लगेगा। उससे सभी जानकारी लेकर आत्मा को—प्रेतात्मा को, व्यक्ति को छोड़कर जाने की आज्ञा दे तथा निम्न मन्त्र १३ बार पढ़कर भस्म अभिमन्त्रित करे व पीड़ित व्यक्ति पर फूंके—

गणे गणयं तद् कार्यं सुफलम्।

इससे तत्काल अभिचार दूर होता है। पीड़ित व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि ऐसे कार्य निःशुल्क ही करने चाहिए। यही नाथों का 'आदेश' है। इसे धनार्जन का साधन कदापि नहीं बनाना चाहिए।

(२) ज्वर-निवारण-विधि

श्रीगण-कृते कृतज्ञ तदस्वो गणा नमो ।

बिधान : उक्त मन्त्र स्वयं-सिद्ध है। पीपल (अश्वत्थ) के पत्ते पर उक्त मन्त्र 'अष्ट-गन्ध' व अनार की कलम से लिखे। फिर प्रार्थना करे। श्रीगणेश - स्तवन का पाठ करे। 'दूर्वा' की १" लम्बी ३ जड़ें सामने रखे। हाथ में पर्ण लेकर 'गणेश - स्तवन' कर उक्त मन्त्र २१ बार पढ़े। बाद में जड़ों को पानी में पीस कर ज्वर-पीड़ित व्यक्ति को पिलाए व चमत्कार देखे। व्यक्ति स्वस्थ हो जाते हैं।

(३) पिशाच-स्तम्भन

चंर चंर गणका आज्ञा भूता-प्रेता खवीसा गुर्र गुर्र स्वाहा ।

उक्त मन्त्र भी स्वयं - सिद्ध है। उक्त मन्त्र का १, ३, ११ या २१ बार मानसिक रूप से उच्चारण करने से पिशाच-स्तम्भन होता है।

(४) वृश्चिक-दंश-निवारण

सुरे सुस्वा फट् गणेश आज्ञार्क कोर्र पञ्चाननी स्वस्ति महा-गणाय ।।

'धुर्क'-नामक वनस्पति की लकड़ी लेकर पानी में पीसे तथा २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर उसे अभिमन्त्रित कर दंश-स्थान पर लगाने से विष उतरने लगता है।

(५) इष्ट-फल-प्राप्ति हेतु गणेश-उपासना

यह उपासना निम्न-लिखित दो मन्त्रों द्वारा की जाती है—

(१) ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा ।

(२) ॐ ह्रीं पूर्णदया ॐ ह्रीं फट् स्वाहा ।

उक्त उपासना सङ्कष्टी या अङ्गारकी चतुर्थी से प्रारम्भ करे। प्रथम मन्त्र से श्रीगणेश जी का 'पूजन' करे, दूसरे मन्त्र द्वारा 'हवन' करे। 'हवन - सामग्री' इस प्रकार है—१ लाल कनेर (करवीर) के पुष्प, २ रक्त-चन्दन, ३ गो - घृत व ४ शहद। यथा - शक्ति २१, १०८, १००८ 'हवन' करे। इस प्रकार ११ चतुर्थी - साधना करे। प्रत्येक

चतुर्थी को उपवास करे तथा श्रीगणेश जी से आशीर्वाद माँगे। इस प्रकार उपासना करने से साधक पर लक्ष्मी की प्रसन्नता तो होती ही है, साथ ही उसे आजीवन आनन्द-प्राप्ति होती है।

(६) यक्षिणी-साधना

श्रीर्गगोर्ग गोर्णी शापत कूँटट फट्।

उक्त मन्त्र पाठकों के समक्ष मात्र जानकारी के लिए ही प्रस्तुत है। यह 'यक्षिणी-साधना' अत्यन्त उग्र व भय-प्रद है। अतः गुरु-आज्ञा से ही उक्त साधना करे।

इस साधना में कुल २१ दिनों का विधान है। रात्रि में १२ बजे 'करवन्दी' के पेड़ के नीचे बैठकर नित्य १२५ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे। 'श्रीगणेश-कृपा' से यक्षिणी वशीभूत होती है।

(७) दूर-दर्शन-सिद्धि हेतु गणेश-साधना

श्री जिर्व गणेशुम् शुम् छेद्र पीरं पीरम्।

नित्य निश्चित समय पर बैठकर निश्चित संख्या में उक्त मन्त्र का 'जप' करे। १,२५००० 'जप' से पुरश्चरण होगा और दूर-दर्शन-सिद्धि प्राप्त होगी।

(८) साक्षात्कार-साधना

(१) ॐ गं गणपतये नमः। (२) श्री गजाननाय नमः।

उक्त दोनों मन्त्र अत्यन्त प्रभाव-शाली हैं। किसी भी एक मन्त्र का कुल ६ लाख जप पूर्ण होने से श्रीगणेश जी का साक्षात्कार होता है। कभी - कभी ६ लाख 'जप' पूर्ण होने पर ही अनुभव होने लगते हैं। मन्त्र (१) स्वानुभूत है। 'जप' पोवले की माला पर करना चाहिए।

(९) अजीर्ण-नाशक साधना

वक्र-तुण्ड ! पदे हस्ते सुर्र सुर्र किर्रं नमः।

जिसे अपचन, अजीर्ण हुआ है, उसे सामने बिठाए। निर्गुण्डी की २१ टहनियाँ साथ में रखे। उक्त मन्त्र पढ़ते हुए एक - एक टहनी से सिर पर झाड़े। ऐसा २१ बार करे। पीड़ित व्यक्ति तुरन्त स्वस्थ होता है।

(१०) अभिचार-नाशक साधना

श्रीमहा - गणपतये शां शुं शुं भुं भुं तृ तृ मृ मृ चण्डी नमः ।

उक्त मन्त्र की साधना १२१ दिनों की है। ब्राह्म - मुहूर्त में श्रीगणेश मन्दिर में उक्त मन्त्र का १२५ बार 'जप' कर किसी पवित्र जलाशय, तालाब, नदी आदि स्थान पर जाए व १०१ दूर्वाएं मुँह में रखकर नाभि तक पानी में बाँएँ पाँव पर खड़े होकर दो घण्टे उक्त मन्त्र का 'जप' करे। इससे सिद्धि होती है। मन्त्र - सिद्धि होने पर वशीकरण, मोहिनी आदि अभिचार-प्रयोग दूर किए जा सकते हैं।

(११) सर्व-सिद्धि-साधना

(१) ॐ गं ॐ। (२) श्री ॐ गं।

उक्त दोनों मन्त्र सिद्ध हैं। दोनों में से किसी भी मन्त्र के नित्य जप से समृद्धि, व्याधि-निवारण, ऋण-मुक्ति, अध्यात्म में प्रगति आदि फल प्राप्त होते हैं।

●●

शाबर मन्त्र का अद्‌भुत चमत्कार

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री सुधीरकुमार
बरौनी थर्मल पावर स्टेशन, ग्राम-चकिया, जिला–बेगूसराय (बिहार)

सर्व-कार्य-सिद्धि हेतु शाबर मन्त्र

काली घाटे काली माँ ! पतित-पावनी काली माँ ! जवा फूले-स्थुरी जले। सई जवा फूल में सीआ बेड़ाए। देवीर अनुर्बले। एहि होत करिवजा होइबे। ताही कालो धर्मेर। बले काहार आज्ञे राठे। कालिका चण्डीर आसे।

विधि : उक्त मन्त्र भगवती कालिका का बँगला भाषा में शाबर मन्त्र है। इस मन्त्र को तीन बार 'जप' कर दाएँ हाथ पर फूँक मारे और अभीष्ट कार्य को करे। कार्य में निश्चित सफलता प्राप्त होगी। गलत कार्यों के लिए इसका प्रयोग न करे, अन्यथा हानि होगी।

पूज्य स्वामी तारकेश्वरानन्द सरस्वती जी महाराज की कृपा से प्राप्त

शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री रामगोपाल सिंह
५१७ नई बस्ती, लल्लापुरा, किशनपुरा, मेरठ (उ. प्र.)-२५०००३

(१) नरसिंह उतारने का मन्त्र

जल खोलूँ जलवाई खोलूँ, जल की खोलूँ काई।
चारों पलक आँख की खोलूँ, उतरो नरसिंह भाई॥

विधि : किसी भी सिद्ध - काल में—जैसे अमावास्या, पूर्णिमा, सर्व-सिद्धि-योग आदि से साधना प्रारम्भ करे। नित्य २१ दिनों तक १०८ बार 'जप' करे। पूजन में दीप, धूप, जल का लोटा, सुगन्धित फूल और नैवेद्य का प्रयोग करे। जल के लोटे में तुलसी की पाँच पत्तियाँ डाले। बैठने से पहले स्थान और देह को मन्त्र द्वारा बाँध ले। बाद में प्रयोग करे। मन्त्र - सिद्धि के बाद जब भी 'ग्रहण' पड़े, तो अपनी प्रचलित परम्परा के अनुसार हवन - कुण्ड में साधारण हवन-सामग्री से उक्त मन्त्र जपते हुए ११ आहुतियाँ अर्पित करे।

प्रयोग-विधि : पहले 'हवन'-कुण्ड तैयार करे। बाद में प्रचलित साधारण हवन - सामग्री से उक्त मन्त्र जपते हुए कुछ आहुतियाँ डाले। अब देशी घी से सना हुआ एक 'पान' लेकर उक्त मन्त्र जपते हुए रोगी का उतारा करे। ऐसा पाँच बार करे। कैसा भी बिगड़ा हुआ 'नरसिंह' क्यों न हो, उतर जाएगा।

(२) नरसिंह चढ़ाने का मन्त्र

जल बाँधूँ, जलवाई बाँधूँ, जल की बाँधूँ काई।
चारों पलक आँख की बाँधूँ, बैठो नरसिंह भाई॥

विधि : मन्त्र क्रमाङ्क १ के अनुसार साधना करे। सिद्धि प्राप्त हो जाएगी। जब मन्त्र 'सिद्ध' हो जाए, तो पीली सरसों या पूजा के सिन्दूर पर २१ बार उक्त मन्त्र पढ़ कर शत्रु को मारे।

यह क्रिया 'अभिचार'-कर्म में आती है और दूसरों को छोटी-मोटी बात के लिए कष्ट देना उचित नहीं होता। अतः जब बहुत ही आवश्यक हो, तब किसी अनुभवी से पूछ कर उसके संरक्षण में ही यह क्रिया करे। अन्यथा स्वयं को भी हानि हो सकती है।

(३) आँख-दुखनी आने पर

अर्जुन का बाण, खिदर की मिट्टी। दुखै न आँख, बँधै न पट्टी। खिदर का खिदर मैं चला जाओ। आँखे का आँखे मैं चला जाओ। ढाँके का ढाँके मैं चला जाओ। राही का राही मैं चला जाओ। गोंडे का गोंडे मैं चला जाओ। चोगान का चोगान मैं चला जाओ। हमसै झड़ै ना, झाड़ै हनुमत भाई। लङ्का-सी कोट, समुन्दर-सी खाई। नुना चमारी की आन। गुरू गोरख की आन।

विधि : पहले किसी भी पर्व-काल में पञ्चोपचार - पूजन कर उक्त मन्त्र को १०८ बार 'जप' कर सिद्ध करे। फिर आवश्यकता पड़ने पर 'नीम की डाली' से झाड़े। इससे नरसिंह का उतारा हो सकता है। प्रयोग-विधि मन्त्र १ की ही अपनाएँ।

(४) घाव बाँधने का मन्त्र

धार-धार, महा-धार। पानी बांधुं तीन बार। धारे बाँधुं सात बार। टूट्ट न फुट्ट, लकत्तर न छुट्ट। जो मेरा बन्ध टूट्ट। तीन लोक में गुल फुट्ट। हनुमान जती की आन।

विधि : किसी पर्व - काल में पञ्चोपचार-पूजन कर उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। फिर 'प्रयोग' हेतु पानी या मिट्टी को ११ बार उक्त मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे और रोगी के घाव पर लगाए, तो इससे घाव से खून निकलना बन्द हो जाएगा।

(५) पीलिया का झाड़

तेल्ली का तेल, खारे कूए का पानी, दूब की नाल ।
कोल बाय, जहर-बाद, पीलिया झाडूँ दिन के लिकाड़ी ।

विधि : (१) पहले उक्त विधि अनुसार सिद्ध करे। बाद में काँसे का एक कटोरा ले और उसमें सरसों का तेल भरे। कटोरे को रोगी के सिर के ऊपर रखे तथा दूब से तेल को चलाए। यह क्रिया 'पूर्णिमा' को सूर्य भगवान् के निकलने से पहले करे। इसी विधि से 'कोल-बाय' (बाय के साथ जब बेचैनी बढ़े) अर्थात् 'बाय को' तथा 'जहर-बाद' (पित्त के प्रकोप से शरीर में सूजन अथवा शरीर में बादी का पानी बढ़ना) को भी झाड़ा जा सकता है।

विधि (२) : किसी भी शनिवार, रविवार अथवा सोमवार के दिन सूर्य निकलने से पहले रोगी को पूर्व की ओर मुँह कर बैठाए। रोगी के हाथों में सरसों के तेल से भरा हुआ काँसे का कटोरा दे और उससे उसमें देखने को कहे तथा मन्त्र पढ़ते हुए दूब से तेल को चलाए। जब तेल कढ़ी-जैसा छिछलेदार पीला हो जाए, तब झाड़ना बन्द कर दे। इस प्रकार तीन बार झाड़े।

(६) थैनेला रोग

(१) कँवर फुल्ली काँवर, काँवर फुल्ली जाय। दुद्धी आँकु आपनी, 'फलानी' का थैनेला जाय। नुना चमारी की आन।

(२) फुल्ली - फुल्ली कामणी, फुल्ली - फुल्ली जाय।
हनुमत् मारे मूँगरी, 'फलानी' का थैनेला जाय॥

विधि : पहले किसी पर्व - काल में मन्त्र को १०८ बार 'जप' कर सिद्ध करे। 'ग्रहण'-काल में मन्त्रों का 'जप' अवश्य करे। 'ग्रहण' में चाहे ११ बार ही मन्त्र का 'जप' करे, परन्तु करे अवश्य। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर आवश्यकता पड़ने पर जब कोई रोगी आए, तो उसका नाम पूछे और उसे घर जाने को कहे। रोगी के घर वापस जाने पर साधक अपने स्तन का ध्यान करते हुए मन्त्र में रोगी का नाम लेकर जपे। ऐसा ११ बार करे। ध्यान रहे, रोगी के

यदि बाँएँ स्तन में 'थैनेला'-रोग हो, तो साधक अपने दाएँ स्तन का ध्यान करे और यदि रोगी के दाएँ स्तन में पीड़ा हो, तो साधक अपने बाँएँ स्तन का ध्यान करे।

(७) आधा सीसी रोग-नाशक मन्त्र

(१) फुल्ली-फुल्ली कामणी, फुल्ली-फुल्ली जाय। हनुमत् मारे मूँगरी 'फलाने या फलानी' की आधा सीसी जाय।

(२) काली चिड़िया अञ्जनी, काला ही खड़ खाय। मेरी काट्टी आधा सिस्सी, गङ्गा पार कु जाय। नुना चमारी की आन।

विधि : पहले किसी पर्व - काल में उक्त मन्त्र को १०८ बार 'जप' कर सिद्ध करे। फिर आवश्यकता पड़ने पर किसी चाकू से रोगी के सिर को छुआते हुए झाड़े। इससे आधा सीसी रोग दूर हो जाएगा। रोग दूर होने पर मन्त्र के देवताओं के नाम का 'प्रसाद' बँटवाए।

(८) तैत्याँ का झाड़

(१) काला तैत्याँ, पेला तैत्याँ, ये हैं विष के भैय्या। विष की बाँधु डोर, मेरी बाँधी ना बँधे, तो मुंडी दुँगा तोड़।

(२) सतर का एक भाई। सतर के दो भाई। सतर के तीन भाई। सतर के चार भाई। सतर के पाँच भाई। सतर के छः भाई। सतर के सात भाई। इन सातों की फिरे दुहाई। मारूँ कीड़ा बाँधु साँई। चला जा बिच्छु-तैत्याँ का जहर। राजा रामचन्द्र-भैंरो की दुहाई। नुना चमारी की आन। गुरू गोरखनाथ की आन। काली माई की आन। भुमिया चामुण्डा की आन। महा-देव गौरा पार्वती की आन।

विधि : किसी पर्व-काल में उक्त मन्त्र को १०८ बार जप कर सिद्ध करे। बाद में रोगी को नीम की टहनी से झाड़े। मन्त्र (२) से बिच्छ से पीड़ित को झाड़े।

(९) बिच्छू-विष-नाशक मन्त्र

काला विच्छु कङ्कूर थाला, हरी चोंच सोने की माला। काली घड़ी आई इमृत-भरी, ले ईश्वर के आगे धरी। गोरा ढाले ईशर नाय, बिच्छु का डङ्क निर्मल हो जाय। टुट्टी खाट पुराने बान, बिच्छु उतरो श्रीरामचन्द्र जी की आन। नुना चमारी की आन।

विधि : पहले किसी भी 'ग्रहण'-काल में उक्त मन्त्र को १०८ बार जप कर सिद्ध करे। फिर आवश्यकता पड़ने पर उपलों की राख से रोगी को झाड़े। झाड़ने से पहले किसी अँगोछे या कपड़े से या मोटी रस्सी से जहाँ तक रोगी के जहर चढ़ चुका हो, उसके ऊपर एक गाँठ लगाए, फिर राख लेकर ऊपर से नीचे की ओर मलते हुए झाड़े। रोगी ठीक हो जाएगा।

(१०) विवाह-मन्त्र

ॐ यग्गो पवित्रम् सहजम् रहत प्रजापति स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र की विधि मेरे पास नहीं है। मेरे ताऊ जी को भी इसकी विधि ज्ञात नहीं थी। उन्होंने केवल इतना बताया था कि यह 'विवाह-मन्त्र' है। यदि किसी पाठक को इसकी विधि का पता चले, तो कृपया प्रकाशनार्थ 'चण्डी-कार्यालय' को अवश्य भेजें।

(११) बड़ा दुःख (निनाई) रोग की झाड़

सात सतर के सातों भाई, इन सातों की फिरे दुहाई। झाड़ु-किड़ा बाँधुं सांईं, मेरी बाँधी बँधे, मेरे गुरू की बाँधी बँधे। मेरी भगत सै, गुरू की सकत सै। लङ्का - सी कोट, समुद्र-सी खाईं, जहाँ फिरे रामचन्द्र-हनुमान की दुहाई। नुना चमारी की आन।

विधि : पहले किसी सिद्ध - योग में उक्त मन्त्र का १०८ बार 'जप' कर सिद्ध करे। फिर रोगी को चौखट (देहली) पर बैठाकर तथा साधक चौखट से बाहर बैठकर नीम की टहनी से मन्त्र पढ़ता हुआ झाड़े। यह रोग किसी को भी हो सकता है, जैसे आदमी या पशु। जब रोगी मनुष्य या जानवर आए, तो उसे अपने घर पर न झाड़े। उसे उसके घर पर ही झाड़े। झाड़ने से पहले साधक अपने मुँह पर कपड़ा बाँध ले। यह रोग सिर में होता है। रोगी के कीड़ों को एक करवे में एकत्र कर कहीं एकान्त निर्जन में दबा दे।

औषध हुलाश—(१) कायफल, (२) करञ्जवे की गुट्ठो, (३) वन-तुलसी के पत्ते, (४) नौसादर (इण्डे का), (५) चिरचिटे (अपामार्ग) के पत्ते, (६) गुम्मा के पत्ते – इन सबका हुलाश बना कर मरीज को सूंघने के लिए दे। रोगी के कीड़े मर जाएँगे या बाहर निकल आएँगे।

औषध बोहपारा—(१) वन-तुलसी के पत्ते, (२) गुम्मा के पत्ते, (३) चिरचिटे के पत्ते -१० या १५ ग्राम पत्ते बराबर वजन में ले ले। पत्ते ताजे हों, तो ज्यादा अच्छा होगा। इस बोहपारा को मिट्टी के बर्तन में ले क्योंकि कीड़े बर्तन में गिरेंगे।

(१२) बच्चों की साँस काटने का मन्त्र

अङ्कनी-डङ्कनी कहाँ चली ? इकलास पर्वत पै। इकलास पर्वत पै जा कै क्या करेगी ? चन्दन रूख कटाऊँगी। चन्दन रूख कटा कै क्या करेगी ? कोले कराऊँगी। कोले करा कै क्या करेगी ? छप्पन छुरी घड़ाऊँगी। छप्पन छुरी घड़ा कै क्या-क्या करेगी ? जङ्गल की गादड़ी, गादड़ी के पेट में बच्चा, बच्चे के पेट में नन्वा डिब्बा, नन्वा डिब्बा काटूँगी, उसे खारी समन्दर में बहाऊँगी, बच्चे का पिच्छा छुटाऊँगी। लल्ता माता की आन, नुना चमारी की आन।

विधि : पहले किसी सिद्ध योग में १०८ बार 'जप' कर सिद्ध करे। बाद में चाकू, तीर या मोर-पङ्ख से रोगी को झाड़े।

(१३) अनेक रोगों का नाशक मन्त्र

सींक बाँधुँ, सींक बान, अर्जुन सांधे धनुष-बान। बन में जाई अञ्जनी, जूँ जनमें हनुमन्त। अटठोरी-कटठोरी, बद-कखयारी, झीनवा-लिकाश सा, बेल - बाहला, बिस्सी-थैनेला, कर्णमूल-कर्णफूल, कण्ठे लिकाड़ा, मैं न झाड़ूँ, झाड़ै नीम की डाल। तीन चीज मेरे, अक्कड़-मक्कड़-न्योल का पित्ता। ऐबिस तु गर मन गित्ता। इस बिसवा की लम्बी चोब। बिसवारा पौंहचा पत्ताल। राजा बासक की आन। हनुमान जती की आन। भद्र - काली की आन। भुमिया चामुण्डा की आन। नुना चमारी की आन।

विधि : पहले मन्त्र को शाबर - विधि से सिद्ध करे। बाद में नीम की टहनी से झाड़े, तो मन्त्र में उल्लिखित रोगों से छुटकारा मिलेगा।

(१४) मोहनी मन्त्र

सोहनी-मोहनी-वेशवा इन तीनों का नाम। नङ्गर दोहरै बैठ कै, मोहुँ पराई नार। इसी नगर का राजा मोहूँ, उसकी मोहूँ नार। हाट मोहूँ, बाजार मोहूँ और मोहूँ कमजात। बावन वीर लङ्का को जाओ, लङ्का सै सोरण को लाओ। आगे कलवा पीछे वीर, जातेई मोहुँ 'फलानी' का शरीर। सोती हो सोती को जगा ला, चलती हो चलती को बुला ला। बैठी हो बैठी को उठा ला। धड़ मोहूँ, धोलागढ़ मोहूँ और मोहूँ धरती अक्कास। चलती बार 'फलानी' के पाऊँ मोहूँ, लगो नूर मोहम्मद की आन।

विधि : किसी पर्व-काल जैसे होली, दीपावली, दशहरा, ग्रहण-काल, शबे-रात वा ईद के दिन में सामने धूप, दीप, नैवेद्य, फल-फूल

व जल का लोटा रखकर १०८ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। 'ग्रहण-काल' में फल-फूल व नैवेद्य न रखे। इस मन्त्र से स्त्री-पुरुष दोनों को वश में किया जा सकता है। जिस स्त्री या पुरुष को वश में करना हो, तो 'फलानी' के स्थान पर उसी का नाम ले। इस मन्त्र से २१ बार फूल, धूल व पीली या लाल सरसों को अभिमन्त्रित करके साध्य को मारे या किसी भी युक्ति से उसके शरीर से छुआ दे, तो साध्य वश में होगा।

कुछ कठिन शब्दों के अर्थ

१. जलवाई	नदी, तालाब के जल में कहीं-कहीं गोल घेरा बनता है, उसे 'जलवाई' कहते हैं।
२. गोंडा	सम्भवतः किसी सिद्ध-स्थान का नाम।
३. चोगान	चौराहा।
४. लकत्तर	खून की धार।
५. गुल फुट्ट	फोड़े फूटना, ज्वाला-मुखी फूटना।
६. कूया (कूए)	कूआ।
७. दूब की नाल	दूब की टहनी।
८. लिकाड़ी	निकलने पर।
९. मुँडी	धड़ से ऊपर का हिस्सा।
१०. कङ्कर याला	हीरेवाला।
११. इमृत	अमृत।
१२. खाट	चारपाई।
१३. यग्गो	यज्ञो (यज्ञ)।
१४. सतर	सम्भवतः सगर राजा का नाम।
१५. भगत सै	भक्ति से।
१६. सकत सै	शक्ति से।

तीन शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री सूर्यराज अनन्तस्वरूप टण्डन 'राहंस'
पुत्र श्री कुँवरस्वरूप टण्डन, बड़ा बाजार, मण्डी चौक,
अमरोहा, ज्योतिबा फुले नगर-२४४२२१

१. हनुमान जी का शाबर मन्त्र

[शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ५, पृष्ठ १५ पर हनुमान जी का मन्त्र--'ऐ हनूमान की सूरत ! हाजिर हो'। इसी मन्त्र से मिलता हुआ मन्त्र मुझको एक महात्मा जी ने बताया था। वह मन्त्र सुरक्षित रहे तथा विद्वान् लोग इस मन्त्र के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट कर सकें, इस विचार से हम यहाँ उस मन्त्र को प्रस्तुत कर रहे हैं।—लेखक]

मन्त्र—ऐ हनुमान की सूरत ! जल्द हाजिर ब-हक रामचन्द्र जी महाराज।

विधि : उक्त मन्त्र में और अधिक शीघ्र आने का आदेश - सा है। इस मन्त्र को एकान्त स्थान पर कुश अथवा ऊन के आसन पर बैठकर जपे। मस्तक पर सिन्दूर का टीका लगाए तथा हनुमान जी की मूर्ति के पास लौंग, इलायची का 'प्रसाद' चढ़ाए। ४० दिनों तक रात्रि १२ बजे उक्त मन्त्र का ५००० 'जप' करे। 'जप' के पूर्व 'राम-रक्षा-स्तोत्र' का पाठ करे तथा अपने चारों ओर 'रक्षा-रेखा' 'मामभि-रक्षय रघु - कुल - नायक' यह कहकर खींचे। रेखा जल अथवा शुद्ध कोयले से खींचे। 'गङ्गा-जल' हो, तो अति उत्तम है। यह रक्षा-मन्त्र अकीलित है। चाहें तो १०८ बार 'हवन' कर, पहले सिद्ध कर लें। प्रति-दिन प्रातः १०८ बार 'जप' करने से अकाल दुर्घटनाओं से रक्षा होती है।

२. गौ जोगिन का मन्त्र

आगारी जो गुरु यागे। जोगिन गुरु डण्ड बतियाँ। करिया बलईयाँ। री जोगन मुख अनरिता। गायति रही

रतियाँ। गो जोगिन चल इन अकेलियाँ। गो मारो है तालियाँ। गो जोगिन बाँधऊँ नजरियाँ। गो जोगिन आ पहियाँ। ना आए, तो दोहाई मइया बनिता की। दोहाई सलिमा पैगम्बर की। दोहाई सलाई छू।

विधि : उक्त मन्त्र को शुक्रवार की रात्रि में रात भर जपे। 'जप' के समय चमेली की 'पुष्प-माला' पास में रखे। धूप-दीप जलाए। जब 'गौ जोगिन दर्शन' दें, तो चमेली की माला उनके कण्ठ में पहना कर, जो इच्छा हो, कहे।

३. गणेश जी का मन्त्र

गणपत वीर भूखे मसाण, फल माँगूँ सो फल देत। गणपत देखे, गजपत डरे। गणपत के छात्र से बादशाह डरे, मुख देखे राजा-प्रजा डरे। हाता चढ़े सिन्दूर औलिया, गौरी का पुत्र गूगल खेय करूँगा ढेरी। रिद्ध - सिद्ध गणपत लाए, घणेरी गिरनार पति ओम् नमो स्वाहा।

विधि : किसी एकान्त स्थान में घी का एक 'दीपक' तथा धूप-बत्ती जलाकर रात्रि में उक्त मन्त्र १२५ बार ४० दिनों तक जपे। 'दीपक' ऐसी जगह रखे कि वह पृथ्वी से एक फुट ऊपर रहे। साधना बुध, शुक्र अथवा शनिवार से आरम्भ करे। प्रति-दिन एक लड्डू का भोग लगा कर बच्चों को प्रसाद दे। चालीसवें दिन सवा सेर लड्डू का भोग लगाए। चालीसवें दिन मन्त्र का देवता बालक के रूप में प्रकट होता है, तब उनसे जो चाहे वर माँग ले। कभी - कभी देवता प्रत्यक्ष प्रकट नहीं होते और आवाजें आती हैं, तब 'मेरा काम करिए और मेरे साथ रहिए' ऐसा कहना चाहिए। जप करते समय २ तोला सिन्दूर पास रखे तथा अन्त में उसे एक पुड़िया में रख ले। प्रयोग पूर्ण होने पर एक सप्ताह तक सिन्दूर से काम न ले। एक सप्ताह उपरान्त कोई कार्य हो, तो इसी मन्त्र को सिन्दूर पर सात बार पढ़कर टीका लगा ले। कार्य हो जाएगा।

सर्प-विष-नाशक तुलसी-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री जगदीशनारायण बिलगइयाँ 'मधुप'
संस्थापक चामुण्डा महा-शक्ति-पीठ, दतिया (म. प्र.)

[प्रस्तुत मन्त्र मेरे पूज्य पिता जी श्री कामताप्रसाद एवं ताऊ श्री सीताचरण बिलगइयाँ द्वारा संग्रहीत है। यह बङ्गाली भाषा में है। लोक-हितार्थ इसे यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।—प्रस्तुत-कर्त्ता]

तुलसी-तुलसी-तुलसी पाता, तोमार काछे की सपालता। तोमार रस लागिले, घाय पुड़िए साप अपनी पालाय। डाकिनी साँपिनी - साँपा काकीनी आर 'अमुकेर' अङ्गेर विष छाँड़ शीघ्र छोड़ नाई विष, विषनाई आर पालाय। विष सागरेर पार, किल-किल, हिल-हिल, रां रां, ठः ठः कार आज्ञा दोहाई मानसर आज्ञा।

विधि : एक ही साँस में तुलसी की तीन पत्ती तोड़ लाए और एक-एक पत्ती पर उक्त मन्त्र तीन बार पढ़े और तीन फूंक मारे। फिर सर्प - दंश के स्थान पर तीनों पत्तियों को लगा दे। फिर मन्त्र पढ़कर पत्तियों पर तीन बार फिर से फूंक मारे। जब तक विष शरीर में रहेगा, पत्तियाँ शरीर में चिपकी रहेंगी। विष उतरने पर पत्तियाँ स्वयं ही गिर जाएँगी। मन्त्र में 'अमुकेर' के स्थान पर 'रोगी का नाम' लेना चाहिए। विष-दग्ध तुलसी की पत्तियों को जमीन में गाड़ देना चाहिए।

उक्त मन्त्र को सिद्ध करने के लिए पहले पूर्णिमा, दीपावली को 'जप' करे, फिर नित्य १०८ बार जपना चाहिए।

विलक्षण शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री रजनीशकुमार
४०/६६ लॉ प्रेस बिल्डिङ्ग, परेड, कानपुर (उ. प्र.)

१. अलोप होना

वङ्ग नमो महेश्वरी ! मरे मरे ऐ नइ विदहनी पतेश्वरी कुरु कुरु स्वाहः ।

विधि : रविवार को जब 'अमावस' पड़े, तब 'घुग्घू' या 'उल्लू' का पित्ता लेकर उसे गाय के घी में फेंटकर एक रुई की बत्ती उससे तर कर ले तथा उसी दिन दो आदमियों की खोपड़ी श्मशान से मँगा ले। फिर किसी मरघट में जाकर नङ्गा होकर बैठ जाए। एक खोपड़ी में उक्त बत्ती को रखकर चिराग की तरह जलाए तथा दूसरी खोपड़ी में काजल पारे। जब तक काजल परता रहे, मन्त्र को १०८ बार पढ़कर उस काजल पर फूंके। फिर काजल को ताँबे के ताबीज में भर कर सावधानी से रखे। इस ताबीज को जब मुख में रखकर कहीं जाएगा, तो साधक को कोई देख न पाएगा, परन्तु साधक सबको देखेगा। अगर इस काजल को साधक आँख में लगाएगा, तो जमीन के ऊपर और भीतर की सभी अप्रत्यक्ष वस्तुएं दिखाई देंगी। मुँह से ताबीज निकालने पर साधक फिर से सबको नजर आने लगेगा।

२. चीजें मँगाना

सौहङ्ग चक्र की बावड़ी, गुल मोतियों का हार। लङ्का सा कोट, समुन्द्र की सी खाई। जहाँ फिराए अबीर की दुहाई। कौन-कौन बीर आगे चले ? सुलतानी बीर चले। दुर्रानी बीर चले। नादिरशाह बीर चले। बहादुरशाह बीर चले। मुट्ठी चले। नहीं चले, तो हज़रत की सात दुहाई। शब्द साँचा। चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : नौचन्दी जुमेरात (जब बृहस्पतिवार को दूज पड़े) १००० बार ४० दिनों तक नित्य उक्त मन्त्र जपे। किसी भी दिन नागा न करे। अपने कपड़ों में इत्र लगा ले तथा सुगन्धित वस्तुएँ—अगर-बत्ती, लोबान, धूप इत्यादि जलाए।

साधना करने पर बीर आएँगे। ४० दिनों तक उनसे कुछ न बोले। ४० दिनों का जप पूरा होने पर उनसे कहे कि 'आप हमारे मित्र हैं, आप हमारे लिए वस्तुएँ ला दिया करें।' उससे यह पूछ ले कि 'आपको कैसे स्मरण किया करूँ ?'

३. काम करने, बताने का मन्त्र

हरनी पार बराय, ऐमू आय नमः।

विधि : प्रातः नित्य-क्रिया से निपट कर स्नान कर छत पर खड़ा हो जाए। छाया जब अपने शरीर के बराबर पड़ने लगे, तब शरीर को नाप कर धरती पर निशान लगाए। शरीर पर केवल लँगोट बाँधे। पूर्व की ओर मुख कर, हाथ में 'जप' करते समय थोड़ा गुड़ और काले तिल रखे। आँखें बन्द कर उक्त मन्त्र की ४१ माला ४१ गुरियोंवाली जपे। मन में कोई दूसरा विचार न लाए। ३ दिन ऐसा करे। चौथे दिन आँख खोल कर छाया की बाँईं ओर गरदन पर देखे और उसमें अपनी कल्पना करे। फिर १० मिनट ऊपरवाला मन्त्र जपे, फिर निम्न मन्त्र जपे—

ॐ प्रांग प्रमेंग एंग फुट स्वाहा।

उक्त द्वितीय मन्त्र का 'जप' १००० बार ४० दिनों तक करे। अपने पास गुड़-तिल रखकर जप करे। जब छाया इशारे से माँगे, तब थोड़ा गुड़-तिल फेंक दे। फिर उससे काम पूरा करने का वचन ले ले और उससे पुनः बुलाने की विधि भी पूछ ले।

४. आग पर चलने का मन्त्र

नीचे भैरों किलकिलाए, ऊपर नरसिंह गाजी। इस अग्नी को ठण्डा कर दे अञ्जनी पुत्र लाजी। दुहाई हनुमन्त बीर की। दुहाई है अञ्जनी पुत्र की। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : रविवार के दिन जब अमावस हो, जङ्गली तुलसी के पास बैठ जाए। दो-तीन दिन पहले से उसे पानी डाल कर हिला ले, जिससे वह ढीली हो जाए और उक्त मन्त्र को १००० बार जपे। 'जप' के बाद पेड़ जड़ से उखाड़ ले। किसी पत्थर से जड़ काट ले। जड़ पर एक बार मन्त्र पढ़कर फूंके। फिर उसे घर लाकर जलाए और गधे के मूत्र से उसे बुझा कर कोयला बनाए। जब प्रयोग करना हो, आग जलवा कर यह कोयला या इसका थोड़ा-सा हिस्सा एक बार मन्त्र पढ़कर समय देकर अर्थात् १० मिनट या २० मिनट आदि कहकर कोयला आग में डाले। फिर कोई भी उतनी देर उस आग पर नङ्गे पैर चल सकता है।

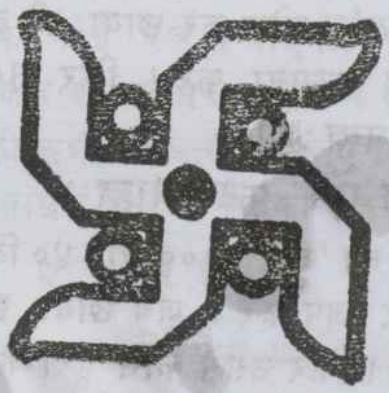

सतत अभ्यास से प्राप्त
बहु-जन-हिताय लोक-कल्याण हेतु

सरल शाबर-मन्त्र-संग्रह

[खण्ड (१६) से (३०)]

संरक्षक-संग्राहक : श्री चन्दूलाल गण्डालाल शाह
एम. ए., बी. एड्. (ऑनर्स)
द्वारा श्री अमीलाल गण्डालाल शाह, ताकफरी, बनियावाड़,
नेमेश्वरदेश स्ट्रीट, जामनगर (गुजरात)–३६१००१

(१६)

वर्षा-सम्बन्धी-मन्त्र

१. अकाल-निवारक अथवा वर्षा-मन्त्र

(१) ॐ ऐं काली-काली ऐं स्वाहा ।

विधि : पीपल की समिधा एवं घृत से उक्त मन्त्र द्वारा १०,००० आहुतियाँ दे । इससे वर्षा का आगमन होता है । अकाल का भय दूर होता है । एक दूसरा अभिगम भी है—

(२) ॐ काली-काली स्वाहा ।

विधि : बताशे या शर्करा व घृत की १०,००० आहुतियाँ देने से वर्षा होती है ।

(३) ॐ श्रीं हुँ ।

विधि : उक्त मन्त्र का 'जप' जल में खड़े होकर करे । इससे महा-वृष्टि होती है और अनावृष्टि या अकाल दूर होता है ।

(४) ॐ ह्रां ह्रीं क्षं क्षां क्षिं क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षं क्षं क्षः हुँ फट् ठः ठः ।

विधि : पूर्व की ओर मुँह कर उक्त मन्त्र का १ लाख 'ज' करे। 'जप' के अन्त में घृत व समिधा से १०,००० आहुतियाँ दे। इ तरह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर प्रयोग करे।

विशेष (१)—'अनावृष्टि' या 'अकाल' हो, तो जल में ख होकर मन्त्र का जप करना चाहिए।

(२) अति-वर्षा हो या महा-वृष्टि हो, तो उसको रोकने के लि बरसते बादलों की ओर देखते हुए मन्त्र जपे। इससे वर्षा का स्तम्भ होता है।

२. अति-वृष्टि-निरोधक-मन्त्र

(१) ॐ नमो हनवन्त वीर अञ्जनी पवन देवता की आण। जहु ऐसी मेघ-मण्डली वर्षसी इत उत फाट फूट सत खण्ड जापसी।

विधि : शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ८, पृष्ठ ७६, क्रम १६ देखिए। उक्त मन्त्र यहाँ पुनः प्रस्तुत है। विधि में भेद है। पहले 'ग्रहण' या 'दीपावली' की रात्रि में मन्त्र को सिद्ध करे। जितना हो सके, उतना अधिक-से-अधिक 'जप' करे। इससे मन्त्र की सिद्धि होगी। फिर जब अति-वर्षा को रोकना हो, तब उक्त मन्त्र का ७ बार 'जप' कर तीन बार ताली बजा कर आकाश की ओर मुँह कर फूंक मारे। अति-वर्षा करते हुए मेघ हट जाते हैं।

(२) ॐ नमो भगवते मेघ-स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र का विधि-वत् १०,००० 'जप' करने से मन्त्र सिद्ध होता है। प्रयोग के समय १०८ बार 'जप' करना चाहिए। पूरी विधि इस प्रकार है-कुम्हार जहाँ ईंट बनाते हैं, वहाँ से दो ईंटे लाए। चिता के कोयले से एक ईंट के ऊपर 'मेघ'-शब्द लिखे। 'मेघ' - शब्द लिखी हुई ईंट के ऊपर दूसरी ईंट रखे। दोनों ईंट इस तरह रखे कि 'मेघ'-शब्द दोनों के बीच में रहे। फिर दोनों ईंटों को उक्त मन्त्र द्वारा

अभिमन्त्रित करे और पृथ्वी में गाड़ दे। इससे मेघों का स्तम्भन होता है।

(१७)

चोरी से सम्बन्धित मन्त्र

१. स्वप्न में चोरी की सूचना पाने का मन्त्र

उद्द मुद्द जल्लज लाल पकड़ चोटी धर पछाड़ भेज कुद्दा लाव मुद्दा या कहुहारो या कहुहारा।

विधि : किसी कुएँ के तट पर या नदी के किनारे (उसके तट पर) बैठकर उक्त मन्त्र को १२१ बार 'जप' कर सो रहे, तो ७ दिनों में चोरी का पूरा भेद स्वप्न में प्राप्त होता है। चोर कौन हैं? चोरी गया सामान कहाँ रखा है? इसका पता मिल जाता है।

२. चोर को पकड़ने का मन्त्र

(१) ॐ नमः किष्किन्धा पर्वत पर कदली वन, तिस्के फल तोड़नेवाला चोर तेरे कुञ्जन को देनी पकड़ दे, इतनी आज्ञा फुरो।

विधि : (१) जिस पर सन्देह हो, उसका नाम कागज पर लिखकर कागज के टुकड़े को आटे की गोली में डालकर जल में डाले। मन्त्र पढ़कर प्रत्येक गोली को जल में डाले, तो चोर के नाम की गोली तैरने लगेगी। बाद में सूझ-बूझ से काम करे।

(२) उक्त मन्त्र को एक कागज पर लिखकर सफेद मुर्गे के गले में बाँध दे और मुर्गे को टोकरे के नीचे बन्द कर, लोगों का हाथ उस पर रखवाए, तो चोर के हाथ रखते ही मुर्गा बोलने लगेगा।

(२) ॐ नारसिंह वीर, हरे कपड़े, ॐ नारसिंह वीर चावल चुपड़े। सरसों के फक-फक करै। आह को छोड़ै चोर को पकड़े। आदेश गुरु को।

(३) ॐ नमो नारसिंह वीर, ज्यूँ - ज्यूँ हूँ चालै पवन चाल, पानी चालै, चोर का चित चालै, चोर के मुख में लोही चालै। काया थांभै, माया परे करै। जो चोर के मुख में लोही न चलावै, तो गोरखनाथ की आज्ञा मेटै। नौ नाथ चौरासी सिद्ध की आज्ञा मेटै।

विधि : दोनों मन्त्रों की विधि एक ही है। सवा पाव चावल को ३ बार जल से धोकर गो-मूत्र में भिगोए। फिर सुखा कर रखे। शनिवार को धरती लीप कर, कपड़ा बिछा कर, चावलों को उसके ऊपर रखे और चावलों के ऊपर १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़े। मन्त्र पढ़-पढ़कर फूंके। फिर बिना छिद्र की चार थालियां लेकर दूध से धोए और उनमें चावल तौलकर रखे। यह चावल सबको चबाने के लिए दे। जो चोर होगा, उसके मुँह से खून निकलने लगेगा।

३. चोरी के सामान को पुनः प्राप्त करने का मन्त्र

(१) ॐ नमो सत्तर सौ पीर, चौंसठ सौ योगिनी, बावन सौ बहत्तर भैरव, तेरह सौ तन्त्र, चौदह सौ मन्त्र, अठारह सौ पर्वत, नौ सौ नदी, निन्यानबे सौ नाला, हनुमान यति और गोरखनाथ रखवाला। कांसे की कटोरी, अंगुल साठ चौड़ी। कहो वीर ! कहाँ ते चलाई ? गिरनार पर्वत से चलाई, अठारह भार वनस्पति चले। लोना चमारी को वाचा फुरो, कानो कुम्हारी चाक ज्यों फिरे। कहाँ-कहाँ जाय ? चोर के जाय। चाण्डाल को ले आए, गड़ो धन बताय। चाल चाल रे हनुमन्त वीर ! जहाँ चले, वहां रहे। न चले, तो गङ्गा-यमुना उल्टी बहे।

विधि : उक्त मन्त्र को प्रति-दिन ११०८ बार जपे। इससे मन्त्र सिद्ध होगा। बाद में जब चोरी का सामान प्राप्त करना हो, तब 'दीपावली' की रात्रि में कांसे की कटोरी को चोक में स्थापित कर

उसका पूजन करे। बाद में मन्त्र जपने से कटोरी चलने लगेगी और जहां चोरी का सामान गड़ा होगा, कटोरी वहाँ चली जाएगी।

(२) ॐ नमो विश्वनाथ वन्दु, हाथ में लेई मारी तुलसी वन्दि के कटोरी साटी। वह मूस की मिट्टी निज बल जाय, तिनके बल ते कटोरी आप चलाय। चल कटोरी, जहां चोर के तम घम। विश्वनाथ वन्दी लेकर गमन, आदेश बड़े ईश्वर पिता धर्म की दुहाई। आदेश सीता श्रीरामचन्द्र सोई।

विधि : सन्ध्या-समय में एक कटोरी में चूहे के बिल की मिट्टी भरकर गाँव के तुलसी चौरा के पास रखे। बाद में १०८ बार उक्त मन्त्र 'जप' कर, वहीं सो जाए। फिर प्रातः - काल १२ साल के एक लड़के के दोनों हाथों को कटोरी के ऊपर रखवाए और चूहे के बिल की मिट्टी अभिमन्त्रित कर उसके ऊपर मन्त्र पढ़कर मारे, तो कटोरी चलकर वहीं जाएगी, जहाँ चोर ने सामान छिपाया है।

(३) ॐ नमो नरसिंह वीर, ज्यूँ-यूँ तेरी चलै पवन, चलै पानी—चलैं चोर। चित चलै थहराय, चोर ही चलै। कथ माया परूँ, करै विश्वनाथ की पूजा। मन्त्र चलै, तो गुरु गोरखनाथ की आज्ञा। न चलै, तो चौरासी सिद्ध का आदेश मिटै।

विधि : ऊपर की ही तरह है। चूहे के बिल की मिट्टी के स्थान पर चावल को अभिमन्त्रित कर १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़कर मारे।

(४) ॐ नमो नाहर वीर, चलते तेग में तेर सीर। बहता-चलता थाँबे नीर, सोए अनपे लागे। तोर ज्यों-ज्यों चालै, तू घर-घरी चलै। पवन अरु चालै नीर, ज्यों - ज्यों चालै—नाहरसिंह वीर, चित चोर का धरै न धीर। चोर का हात काँपे, छाती थर्रावै। जहाँ धरै चुराया धन,

तहाँ सूँ हटन न पावै। दुहाई गुरु गोरखनाथ की, दुहाई चौरासी सिद्धि की [सिद्धों की]। दुहाई पूरन - पूत की, शब्द साँचा, पिण्ड कांचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य नाम, आदेश गुरु को।

विधि : पहले 'ग्रहण' की रात्रि में उक्त मन्त्र का १ लाख 'जप' कर 'सिद्ध' करे। बाद में जब चोरी का सामान निकालना हो, तब वहाँ जाकर उत्तर की ओर मुँह कर काँसे की एक कटोरी अपने सामने रखकर उस पर उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए चावल मारता जाए। कटोरी चलने लगेगी और जहाँ धन छिपा कर रखा गया होगा, वहाँ जाकर रुक जायगी।

(५) ॐ नमो सत्तर सौ वीर, चौंसठ सौ योगिनी, बावन सौ वीर, बहत्तर सौ भैरों, तेरह सौ तन्त्र, चौदह सौ मन्त्र, अठारह सौ पर्वत, सत्तर सौ पहाड़, नौ सौ नदी; निन्यानबे सौ नाला, हनुमन्त यति गोरखनाथ रखवाला। कांसी की कटोरी, अंगुली चार चौड़ी। कहो वीर! कहां ते चलाई? गिरिनार पर्वत से चलाई। अठारह भार वनस्पति चल, लोना चमारी की वाचा फुरै। कानी कुम्हारी चाक ज्यों फिरै, कहां - कहां जाए? चोर के जाय, चण्डाल के जाय। कहां ल्यावै चोर को, चण्डाल को ल्यावै। गड़ो धन को जाय बतावै। चाल-चाल रे हनुमन्त वीर! जहां चलै, तहां रहै। न चलै तो गङ्गा-यमुना उल्टी बहै। शब्द सांचा, पिण्ड कांचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : तीन भार वजन की तथा चार अंगुल चौड़ी एक काँसे की कटोरी बनवा कर 'दीपावली' की रात्रि में 'कटोरी' का पूजन करे। प्रति-दिन धूप-दीप कर उक्त मन्त्र को १०८ बार जपे। २१ दिनों में मन्त्र की सिद्धि होती है। फिर आवश्यकता के समय कटोरी को चौक या चौक न हो, तो आँगन में स्थापित कर, उस पर उक्त मन्त्र

पढ़-पढ़कर उड़द के दाने मारे। इससे कटोरी चलने लगेगी। वह उसी स्थान पर जाकर रुकेगी, जहाँ चोरी का सामान गड़ा हुआ होगा।

४. चोरी न होने का मन्त्र

कफल्लकः कफल्लकः कफल्लकः। जले रक्षतु वाराहः, स्थले रक्षतु वामनः। अटव्यां नारसिंहश्च, सर्वतः पातु केशवः। जले रक्षतु नन्दीशः, स्थले रक्षतु भैरवः। अटव्यां वीरभद्रश्च, सर्वतः पातु शङ्करः। अर्जुनः फाल्गुनो विष्णुः, किरीटी श्वेत-वाहनः। बीभत्सु विजयः कृष्णः, सव्य-साची धनञ्जयः। त्रिस्रो भार्याः कफल्लस्य, दाहिनी मोहिनी सती। तासां स्मरण-मात्रेण, चोरो गच्छति निष्फलः।

विधि : उक्त मन्त्र सिद्ध है। इसको सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। रात को सोते समय केवल एक बार उक्त मन्त्र का सस्वर उच्चारण करने से घर में चोर प्रवेश नहीं कर सकते। यदि चोर आएँगे भी, तो बिना कुछ लिए चले जाएँगे।

विशेष—कहीं-कहीं पहली पंक्ति को कम करके अन्त में जोड़कर भी यह मन्त्र मिलता है।

(१८)

मोहन मन्त्र

१. मोहन करने का सरल मन्त्र

१. ॐ अं आं इं ईं उं ऊं हूँ फट्।

विधि : ताम्बूल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर साध्या को खिलाने से उसे खिलानेवाले के ऊपर मोह उत्पन्न होता है।

२. ॐ नमो भगवती पाद-पङ्कज परागेभ्यः।

३. ॐ भीं क्षां भीं मोहय मोहय।

विधि : किसी भी एक मन्त्र को तीन बार 'जप' करने से आस-पास के व्यक्ति मोहित होते हैं। इन मन्त्रों को सिद्ध करने की

विधि प्राप्त नहीं है। फिर भी सामान्य विधि के अनुसार किसी पर्व-काल में १२५ माला अथवा १२,५०० बार मन्त्र का 'जप' कर लेना चाहिए। बाद में प्रयोग करना चाहिए।

२. श्री कामदेव का मन्त्र
(मोहन करने का अमोघ शस्त्र)

ॐ नमो भगवते काम-देवाय श्रीं सर्व-जन-प्रियाय सर्व-जन-सम्मोहनाय ज्वल-ज्वल, प्रज्वल-प्रज्वल, हन-हन, वद-वद, तप-तप, सम्मोहय-सम्मोहय, सर्व-जनं मे वशं कुरु-कुरु स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र का २१००० 'जप' करने से मन्त्र सिद्ध होता है। कुछ भिन्न मत में ८४००० 'जप' करने से मन्त्र सिद्ध होता है। अतः किसी भी एक संख्या को स्वीकृत कर जप कर पहले मन्त्र को सिद्ध करे। साथ ही मन्त्र-सिद्धि की पूर्णता के लिए दशांश 'हवन-तर्पण-मार्जन-ब्रह्म-भोज' इत्यादि भी करे। 'जप' के समय अनुष्ठान के अन्य सभी नियमों का पालन करे। बाद में नित्य कम-से-कम १ माला 'जप' करे। इससे मन्त्र में चैतन्यता होगी और शुभ परिणाम मिलेंगे।

प्रयोग हेतु फल, फूल, पान कोई भी खाने - पीने की चीज उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर साध्य को दे।

उक्त मन्त्र द्वारा साधक का बैरी भी मोहित होता है। यदि साधक शत्रु को लक्ष्य में रखकर नित्य ७ दिनों तक ३००० बार जप करे, तो उसका मोहन अवश्य होता है। साध्य दुष्ट या दुर्जन चाहे कितना भी हो, वह साधक को देखते ही उसके प्रति मान - सम्मान प्रगट करता है। दुष्ट लोग भी इसके द्वारा मोहित हो जाते हैं।

३. दृष्टि द्वारा मोहन करने का मन्त्र

['शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ४, पृष्ठ १६, मन्त्र ४ 'दृष्टि द्वारा वशीकरण करने का मन्त्र' है। यह मन्त्र यहाँ 'भूल-सुधार'-सहित दे रहा हूँ। निवेदन है कि मन्त्र में पाठ - भेद व विधि - भेद पर विशेष ध्यान देंगे।]

ॐ नमो भगवति, पुर-पुर वेशनि, सर्व-जगत-भयङ्करि ह्रीं ह्रें, ॐ रां रां रां क्लीं वालौ सः वच काम - बाण, सर्व - श्री समस्त नर-नारीणां मम वश्यं आनय - आनय स्वाहा ।

विधि : किसी भी सिद्ध योग में उक्त मन्त्र का १०,००० 'जप' करे ! बाद में साधक अपने मुँह पर हाथ फेरते हुए उक्त मन्त्र को १५ बार जपे । इससे साधक को सभी लोग मान-सम्मान से देखेंगे । साधक जिधर अपनी दृष्टि करेगा, उधर उपस्थित लोग उसके प्रति अनुकूल रहेंगे ।

४. तेल अथवा इत्र से मोहन

['शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ४, पृष्ठ ४६ देखें । यहां ऐसे दो और प्रयोग पाठ-भेद व विधि-भेद सहित प्रस्तुत हैं ।]

१. ॐ मोहना रानी-मोहना रानी चली सैर को, सिर पर धर तेल की दोहनी । जल मोहूँ, थल मोहूँ, मोहूँ सब संसार । मोहना रानी पलँग चढ़ बैठी, मोह रहा दरबार । मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति । दुहाई गौरा-पार्वती की, दुहाई बजरङ्ग बली की ।

२. ॐ नमो मोहना रानी पलँग चढ़ बैठी, मोह रहा दरबार । मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति । दुहाई लोना चमारी की, दुहाई गौरा-पार्वती की । दुहाई बजरङ्ग बली की ।

विधि : 'दीपावली' की रात में स्नानादिक कर पहले से स्वच्छ कमरे में 'दीपक' जलाए । सुगन्धबाला तेल या इत्र तैयार रखे । लोबान की धूनी दे । दीपक के पास पुष्प, मिठाई, इत्र इत्यादि रखकर दो में से किसी भी एक मन्त्र का २२ माला 'जप' करे । फिर लोबान की ७ आहुतियां मन्त्रोचार - सहित दे । इस तरह करने से मन्त्र सिद्ध होगा और इत्र या तेल प्रभाव - शाली बन जाएगा । बाद में जब आवश्यकता पड़े, तब तेल या इत्र को ७ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर स्वयं लगाए । कुछ लोग भाल - प्रदेश पर लगाने

के लिए कहते हैं, तो कुछ लोग उससे तिलक लगाने के लिए कहते हैं। ऐसा कर साधक जहाँ भी जाता है, वहाँ लोग उससे मोहित होते हैं। सभा में, सरकारी कचहरी आदि में, परीक्षा में यह इत्र या तेल लगाकर जाने से मन चाहे रूप से काम बनता है। साधक को सूझ-बूझ से व्यवहार करना चाहिए। मन चाहे कार्य अवश्य पूरे होंगे।

५. फूल से मोहन

['शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ ३३, मन्त्र ६ और पृष्ठ ४४, मन्त्र १२ देखिए। साथ में भाग ५ में पृष्ठ ५६, मन्त्र ११ भी देखिए। पाठ या विधि-भेद-सहित ऐसे ही दो और मन्त्र यहाँ प्रस्तुत हैं।]

१. ॐ नमो कामरू देश कामाक्षा देवी, तहाँ बसे इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी ने लगाई फुलवारी, फूल बीने लोना चमारी, जो इस फूल की सूँघे बास, तीसका जीव हमारे पास। घर छोड़े आँगन छोड़े, लोक-कुटुम्ब की लज्जा छोड़े। दुहाई लोना चमारी की। दुहाई धनवन्तरी की, छू·····।

विधि : २१ दिनों तक नित्य १४१ बार उक्त मन्त्र जपे। पहले स्वच्छ कमरे में लोबान की धूनी जला कर जपे। नैवेद्य में मदिरा या मद्य चढ़ाए। फिर मन्त्र का जप करे। बाद में भी मन्त्र का सतत 'जप' करता रहे। बाद में जब आवश्यकता हो, तब किसी सुगन्धित फूल को ७ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर फूंक लगाकर अभीष्ट व्यक्ति को सुंघाए। इससे व्यक्ति मोहित होगा और उससे जो कार्य लेना हो, वह लेकर उसे छोड़ दे क्योंकि यह प्रयोग अल्प-कालीन है।

२. ॐ मूठी माता, मूठी रानी, गूठी लगावे आग। अमुकी कै चटक लगाय, बेधड़क कलह मचावै। मुख न बोले, सुख न सोवे, कहत मन्त्र उठाय। मारचौ उरझै, क्यों काचा सूत की आटी उरझै, अब देखु नारसिंह वीर! तेरे मन्त्र की शक्ति। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : शनिवार को सायं-काल कनेर के पास जाकर फूलों-वाली टहनी में लाल रङ्ग का डोरा बाँधे और उसे न्योता दे। फिर रविवार को सूर्योदय के पहले डोरेवाली टहनी को तोड़कर घर लाए। घर में एक लकड़ी के पाटे के ऊपर लाल वस्त्र बिछा कर उस पर उसे स्थापित करे। रात्रि में वहाँ दीपक जलाए और धूप करे। दीपक के सामने बैठकर उक्त मन्त्र का १२१ बार 'जप' करे। ऐसा करने से मन्त्र की सिद्धि होती है। बाद में जब आवश्यकता पड़े, तब उसी पेड़ के पास जाए और लाल कनेर का फूल लाए। लाल फूल के ऊपर २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर फूंक मारे। यह फूल जिसको भेंट में दिया जाएगा, वह मोहित होगा। साध्य से जो कार्य लेना हो, वह लेकर उसे छोड़ दे क्योंकि प्रयोग का प्रभाव अल्प-कालिक होता है।

विशेष : दोनों मन्त्रों को 'ग्रहण'-काल में अवश्य जपे। इससे मन्त्र का प्रभाव दीर्घ-कालीन होता है।

६. गुड़ से मोहन

['शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ८, पृष्ठ १५, मन्त्र ६ देखिए। यहाँ एक दूसरा प्रयोग प्रस्तुत है।]

ॐ नमो आदेश गुरु को। गूगल की धूप का धुआं धार। देखु पलमा तेरी शक्ति। तेरस रात को टूटा तारा। ऐसा टूटै, भैरों बाबा का मन गाए। गुड़ मन्त्र पढ़ उसको दे। घर में चक्क, न बाहर चक्क। फिर-फिर देखे मेरा मुख। जीवन सेवे जीव को, मूए सैवे मसान। हमसे आकुल-व्याकुल हो, तो जती हनुमन्त की आन। हमें छोड़ और के पास जाए, पेट फाड़ तुरन्त मर जाए। सत्य नाम, आदेश गुरु को।

विधि : सर्व-प्रथम मद्य, गुड़ की लपसी, कलेजी या मांस—यह सब सामग्री एकत्र कर 'पूजा' के कमरे में रखे। फिर स्वच्छ कमरे में स्नानादि कर आसन पर बैठे। एक लकड़ी के पाटे के ऊपर वस्त्र बिछा कर उसके ऊपर 'दीपक' जलाए। लोबान की धूनी रखे।

एक पात्र में गुड़ सहित अन्य वस्तुएँ दीपक के पास रखे। शनि से शनि तक ४९ दिनों तक नित्य १२५ बार उक्त मन्त्र जपे। प्रयोग का आरम्भ और पूर्णाहुति शनिवार को ही करे। लगातार ४९ दिनों तक 'जप' करने से मन्त्र की सिद्धि होगी।

जब आवश्यकता पड़े, तब पहले से सिद्ध किए हुए गुड़ के टुकड़े को अथवा उसके विकल्प में किसी भी अन्य गुड़ के टुकड़े को ले। उसे ७ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर फूंके। फिर जिस व्यक्ति को यह गुड़ खिलाया जाएगा, वह प्यक्ति मोहित होगा। यदि अकेले गुड़ खिलाना उचित न लगे, तो उसका शरबत बना कर पिलाए अथवा लड्डू-लपसी में डालकर भी इसे खिलाया जा सकता है।

७. लड्डू से सम्मोहन

ॐ नमो जगत गणेश कनककुमार, कामण माला जडि सेवन्ते छटसार कर मोदक आहार। राजा मोह, प्रजा मोह, नर-नारी मोह, पशु-पक्षी मोहे। जीव - जन्तु मोहे, कीट-पतङ्ग मोहे। नारी मोहि जे, श्रीगणेश सरदार की दुहाई। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : गणेश जी की मूर्ति बनाए। बाद में गणेश जी का व्रत करे। मूर्ति की पूजा करे, धूप-दीप-फल-फूल चढ़ाए। फिर यथा-शक्ति उक्त मन्त्र का 'जप' करे। नैवेद्य में २१ लड्डुओं को अर्पित करे। प्रत्येक लड्डू पर ११-११ बार मन्त्र 'जप' कर अभिमन्त्रित करे। इन लड्डुओं को प्रसाद के रूप में दे। साध्य मोहित होता है।

(१९)

आकर्षण मन्त्र

१. सर्व-जन-आकर्षण-मन्त्र

१ ॐ नमो आदि-रूपाय अमुकस्य आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : १ लाख जप से उक्त मन्त्र सिद्ध होता है। 'अमुकस्य' के स्थान पर साध्य या साध्या का नाम जोड़े। 'आकर्षण' - शब्द का अर्थ विशाल दृष्टि से लिया जाना चाहिए। सूझ - बूझ से उक्त मन्त्र का उपयोग करना चाहिए। मन्त्र - सिद्धि के बाद प्रयोग करना चाहिए। प्रयोग करते समय अनामिका उँगली के रक्त से भोज - पत्र के ऊपर पूरा मन्त्र लिखना चाहिए। जिसका आकर्षण करना हो, उस व्यक्ति का नाम मन्त्र में जोड़कर लिखना चाहिए। फिर उस भोज-पत्र को शहद में डाले। बाद में भी मन्त्र का 'जप' करते रहना चाहिए। थोड़े ही दिनों में साध्य वशीभूत होगा।

२ ॐ हुँ ॐ हुँ ह्रीं।

३ ॐ ह्रों ह्रीं ह्रां नमः

४ ॐ ह्रौं ह्रीं ह्रीं ह्रीं इँ नमः।

विधि : उक्त मन्त्र में से किसी भी एक मन्त्र का 'जप' करे। प्रति-दिन १० हजार 'जप' करने से १५ दिनों में साधक की आकर्षण-शक्ति बढ़ जाती है। 'जप' के समय जिसको आकर्षित करना हो, उसका ध्यान करना चाहिए। यहाँ पर उल्लेखनीय है कि 'आकर्षण'-प्रयोग विशाल दृष्टि से करना चाहिए। आकर्षण - शक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपयोगी होती है। 'आकर्षण' के शुभ उपयोग से उत्साह-वर्धन होता है। उदाहरणार्थ दूकान में ग्राहकों का, कचहरी आदि में उच्च अधिकारियों का, शिक्षण-क्षेत्र में छात्रों का, सभा आदि में श्रोताओं का तथा घरेलू समस्याओं में घर के सदस्यों के आकर्षण से शान्ति प्राप्त होती है।

२. श्री कार्तवीर्यार्जुन आकर्षण-मन्त्र

[शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ६, पृष्ठ ६८, क्रम १ का मन्त्र यहाँ भिन्न शीर्षक एवं विधि-सहित प्रस्तुत है।]

ॐ झां झां झां हां हां हां हें हें स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र का १ लाख 'जप' करने से किसी भी वस्तु और मनुष्य को आकर्षित किया जा सकता है। यदि प्रारम्भ में ऐसा होता हुआ न प्रतीत हो, तो भी अश्रद्धा न करे। जब तक कार्य-सिद्धि

न हो, तब तक 'जप' करे। अवश्य कार्य - सिद्धि होगी। विशेष लाभ हेतु नित्य भगवान् कार्तवीर्यार्जुन की पूजा कर 'जप' करे।

३. नृसिंह-चेटक

ॐ नमः श्री नारसिंहाय मणि-भद्राय शोषय वीर पहरे चीर, क्षीर नाव पवन-वेग आव पाटवी पूजाय ठः ठः स्वाहा।

विधि : काली चौदस अथवा 'दीपावली' के दिन आधी रात को उक्त मन्त्र का १००० 'जप' कर दशांश 'होम' करे। फिर 'प्रयोग' करे। इस मन्त्र के प्रयोग की विशेष बात यह है कि 'होम' हेतु आवश्यक वस्तुएँ साधक को अनायास प्राप्त होती हैं। माँ अन्नपूर्णा की कृपा से किसी भी वस्तु की कमी नहीं होती।

४. वीर वैताल का मन्त्र

ॐ नमो वीर वैतालाय मन्दराचल-वासिने अमुक-अमुकी आकर्षय-आकर्षय ह्रीं क्लीं फट् स्वाहा।

विधि : जल से भरी नदी या सरोवर में खड़े होकर उक्त मन्त्र का १ लाख 'जप' करे। 'जप' करते समय जप-कर्त्ता को यदि आग का गोला अपनी ओर आता दिखाई दे, तो जल में डुबकी लगा लेनी चाहिए। डुबकी लगाते समय अपनी कनिष्ठा अँगुली को जल से बाहर रखना चाहिए। इसी अँगुली में 'वैताल का प्रवेश' होगा। बाद में जब कुछ भी कार्य हो, इस अँगुली को झटकने से कार्य पूरा होता है।

५. भागे हुए को वापस लाने का मन्त्र

ॐ नमो काली-कालिका, अमुका-अमुकी को आकर्षय आकर्षय। बड़े वेग आकर्षय, जिण वाटै जाई, सोई वाट खोल्। ॐ श्रीं ह्रीं आकर्षण-आकर्षण स्वाहा।

विधि : बताशे या शक्कर से उक्त मन्त्र को १० हजार आहुतियाँ देने से अभीष्ट व्यक्ति या पशु, जो भागे हों, वे वापस आते हैं।

(२०)

वशीकरण मन्त्र

१. सर्व-जन-वशीकरण मन्त्र

[शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग २, पृष्ठ ५७, मन्त्र १०, भाग ४, पृष्ठ ५३, मन्त्र १५, भाग ७, पृष्ठ ८८, मन्त्र ४ देखें । पाठ - भेद एवं विधि-भेद-सहित ऐसा ही एक दूसरा मन्त्र यहाँ प्रस्तुत है ।]

(१) ॐ नमो आदेश गुरु को । राजा मोहूँ, प्रजा मोहूँ, मोहूँ पण्डित बनिया । हनुमन्त नामे जगत मोहूँ, तो राम-चन्द्र मणि मशिया । गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति । हृदय बिराजी आज । हूँ निर्बल शिष्य तुम्हारो, सफल बनाओ काज ।

विधि : २१ दिनों तक नित्य १ हजार बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे । भगवान् श्रीरामचन्द्र जी का पञ्चोपचारों से नित्य पूजन करे । ध्यान भी भगवान् रामचन्द्र जी का करे । ऐसा करने से मन्त्र की सिद्धि होती है । जब भी मोहन-सम्मोहन-आकर्षण या वशीकरण करना हो, तब २१ बार उक्त मन्त्र का 'जप' कर चौराहे की धूल उठाए और उससे तिलक करे अथवा मस्तक पर लगाकर उन लोगों के समक्ष जाए, जिनका वशीकरण करना है । साधक को देखते ही सब लोग उसका मान-सम्मान करेंगे और उसके वश में रहेंगे । आवश्यकता है—केवल शुभ-कार्य हेतु प्रयोग करने की । प्रयोग के बाद भी उक्त मन्त्र का 'जप' करता रहे । इससे सभी कुछ ठीक रहेगा ।

(२) ॐ ह्रां ह्रीं कालि-कालि स्वाहा ।

विधि : तिराहे पर बैठकर उक्त मन्त्र का १ लाख बार जप करे । इससे मन्त्र-सिद्धि होगी । बाद में प्रयोग के समय जिसे वशीभूत करना हो, उस पर १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़कर फूंके ।

२. महा-वशीकरण-प्रयोग

(१) ॐ पुरुष-क्षोभणी सर्व-शत्रु-विद्रावणी ॐ आम् क्रौम् ह्रीम् जो हि मोहय मोहय, क्षोभय क्षोभय अमुकं (अमुकीं) वशी कुरु—वशी कुरु स्वाहा ।

विधि : पहले रात्रि में नग्न होकर ३००८ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे । फिर प्रयोग के समय मन्त्र में 'अमुकं' के स्थान में साध्य या साध्या का नाम जोड़कर जपे । जब तक कार्य न बने, तब तक जपे ।

(२) ॐ नमो सर्व - स्त्री सर्व - पुरुष वश्य-कारिणी श्रीं ह्रीं स्वाहा ।

विधि : एकान्त में या उचित स्थान में बैठकर उक्त मन्त्र का ७२००० 'जप' करे । बाद में श्रीफल से तद्-दशांश 'होम' करे । फिर प्रयोग के समय जिसका वशीकरण करना हो, उसका नाम मन-ही-मन लेकर स्मरण करे और 'जप' करे ।

३. स्त्री-वशीकरण

(१) ॐ हूं स्वाहा ।

विधि : पहले उचित विधि से मन्त्र को सिद्ध करे । बाद में काली विष्णु-कान्ता की जड़ को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर ताम्बूल में डालकर साध्या को खिलाए । यह स्त्रियों के वशीकरण का मन्त्र है । शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ७, पृष्ठ ८७, मन्त्र ८ पुरुषों के वशीकरण का मन्त्र है । स्त्री-पुरुष से पति-पत्नी का अर्थ नहीं समझना चाहिए । पति-पत्नी के वशीकरण हेतु मन्त्र अलग होते हैं ।

(२) अल्लाह बीच हथेली के मुहम्मद बीच कपार । उसका नाम मोहिनी मोहे जग संसार । मुझे करे मार-मार, उस बाँएँ कदम तरे डार । जो न माने—मुहम्मद की आन, उस पर पड़े बज्र का बान । बहक्क लाइलाह अल्लाह है मुहम्मद मेरा रसूलिल्लाह ।

विधि : उक्त मन्त्र की साधना किसी भी कृष्ण पक्ष के शनिवार से आरम्भ कर तीन शनिवार तक करे । प्रति - दिन २००२ बार

उक्त मन्त्र का 'जप' करे। 'जप' के समय 'दीपक' जलाकर लोबान की धूनी दे और नैवेद्य चढ़ाए। इस प्रकार करने से मन्त्र - सिद्धि होगी। फिर 'प्रयोग' के समय शनिवार को 'साध्या' के बाँएँ पैर के नीचे की धूल लाकर अपने पास रखे। धूल को २१ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर साध्या पर युक्ति से डाले। इससे साध्या वशीभूत होगी।

४. वशीकरण का एक सरल मन्त्र

ॐ हामिले स्वाहा।

विधि : पहले 'ग्रहण' - काल में या किसी अन्य पर्व - काल में उक्त मन्त्र का अधिकाधिक 'जप' करे। फिर 'प्रयोग' हेतु निम्नलिखित दो विधियों में से किसी एक विधि का प्रयोग करे—

(१) अपामार्ग की १७ अंगुल लम्बी लकड़ी को उक्त मन्त्र से ३१ बार अभिमन्त्रित कर साध्य या साध्या के घर में डाले।

(२) शत्रु पर उक्त मन्त्र पढ़कर फूंक मारे।

५. चम्पा के फूल से वशीकरण का मन्त्र

कामरू देश कामाख्या देवी, जहाँ बसे इस्माइल योगी। इस्माइल योगी ने लगाई बारी, फूल चुने लोना चमारी। एक फूल राता, दूजा फूल माता। एक फूल हंसा, दूजा फूल बिहंसा, तहाँ बसै चम्पा का पेड़। चम्पा के पेड़ में रहे काला भैरूँ, भूत-प्रेत ये मरें, मसान ये आवे। किसके काम ये आवे ? टोना-टामन के काम। भेजूँ काला भैरूँ को। लावे मुश्कें बाँध। बैठी हो, तो वेगी लाव, सूती हो, तो उठाय लाव। वह सोवे राजा के महलों, प्रजा के महलों, मुझसे होती राजी। फूल दूँ उसी के हाथ, वह उठ लागे मेरे साथ। हमको छांहि यह घर जाय, छाती काटि वहीं मर जाय। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। वाचा चूके, उमाह सूखे लोना चमारी—

बहरे जोगी के कुण्ड में पड़े। वाचा छोड़ कुवाचा जाए, तो 'अमुक' खखार में पड़े।

विधि : 'शनिवार' के दिन चम्पा के पेड़ की डाली में लाल डोरा बाँधे। 'रविवार' के दिन प्रातः-काल उस डाली को उक्त मन्त्र से ३१ बार अभिमन्त्रित कर लोबान की धूनी देकर, घर में ले आए। फिर रात्रि में डाली के आगे 'दीपक' रखकर उक्त मन्त्र का 'जप' करे। यथा-शक्ति जितना हो सके, उतना 'जप' करे। कम-से-कम १३१ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे। इस प्रकार निश्चित संख्या में ३१ दिनों तक 'जप' करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर आवश्यकता पड़ने पर चम्पा के फूल को उक्त मन्त्र से १५१ बार अभिमन्त्रित कर साध्य या साध्या को युक्ति से सुँघाए।

६. फूल से वशीकरण करने का मन्त्र

गुरु गोरख आगे चल्यो, पीछ चेला जाए। नारी देख गोरख चण्यो, चेला बचावन जाय। गुरु मन्तर चेलो पढ़यो, गोरख जीं अकणाय। गुरु मन्तर ऐसो बलि, सब माया मिट जाय।

विधि : पहले किसी भी सुगन्धित फूल के पौधे या वृक्ष को पसन्द करे। शनिवार को उसके पास जाए और उसे न्यौता दे आए। रविवार को सूर्योदय के पूर्व उस पौधे या वृक्ष के पास जाए और उसकी 'पूजा' करे। सूर्योदय होने पर खिले हुए फूलों में से कुछ फूलों को लेकर अपने घर आए। लाए हुए फूलों के ऊपर ३००० बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे। रविवार को ही सायं-काल उक्त फूलों को लेकर 'शिवालय' में जाए और उन्हें भगवान् शङ्कर को अर्पित करे। ऐसा ७ रविवार करे। सातवें रविवार को नौ साल से कम उम्र की ७ कुमारिओं को मिष्ठान्न - सहित भोजन कराकर वस्त्र, दान - दक्षिणा देकर उन्हें सन्तुष्ट करे। ऐसा करने से मन्त्र की सिद्धि होगी। बाद में जब 'प्रयोग' करना चाहे, तब ऊपर बताई हुई विधि से रविबार को ५ फूल लाए। प्रत्येक फूल के ऊपर १११ बार उक्त मन्त्र जपे। ५ फूलों में से ३ फूलों को शङ्कर जी पर चढ़ाए। १ फूल अपने पास

रखे और उसे सूंघे नहीं। शेष १ फूल साध्य या साध्या को युक्ति से दे या सुंघाए। जो फूल अपने पास बिना सूंघे रखा है, उसको बिना सूंघे रात्रि में जल में विसर्जित करे। वशीकरण का यह प्रयोग यदि पूर्ण आयोजन सहित किया जाए, तो अवश्य कार्य करता है।

७. फूल से वशीकरण करने का मन्त्र

ॐ श्री चामुण्डे जय जय वश्यं कुरु कुरु जय जय सरस्वत्यै नमः।

विधि : पहले उक्त मन्त्र का १० हजार 'जप' कर मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में रविवार या मङ्गलवार को अथवा दूसरे मत से रविवार या सोमवार को किसी भी सुगन्धित फूल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। यह फूल जिसे दिया जाएगा, वह अवश्य वश में होगा।

८. खाने-पीने की वस्तुओं से वशीकरण

अल्लाह बीच हथेली, तो मुहम्मद बीच कपार। उसका नाम मोहिनी, मोहे जग - संसार। मजे करे मार-मार, उसे मेरे बाँएँ कदम तरे डार। जो न माने मोहब्बत की आन, उस पर पड़े वज्र का बान। बहक्क लाइल्लाह है अल्लाह मोहम्मद मेरा रसूलल्लिलाह।

विधि : रविवार से प्रारम्भ कर रविवार तक उक्त मन्त्र का प्रति-दिन ११०१ 'जप' करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। प्रयोग-काल में दीपक जलाए और लोबान की धूनी करे। नैवेद्य में मिठाई चढ़ाए। बाद में खाने-पीने की वस्तुओं को ७-७ बार अभिमन्त्रित कर साध्य को खिलाए।

९. स्त्री-वशीकरण

(१) ॐ चिमि चिमि स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र को प्रातः-काल उठकर १०८ बार जपे। बाद में अपना मुँह धोए। प्रयोग के समय एक कलश में ७ चुल्लू जल भरे। उस जल को यथा - शक्ति उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। इस

अभिमन्त्रित जल को जिसका नाम लेकर पिया जाएगा, वह स्त्री वशीभूत होगी। पर्व-काल में मन्त्र को सिद्ध करने से उत्तम परिणाम होता है।

१०. पड़ोसियों का वशीकरण

१. ॐ चिम चिम स्वाहा। २. ॐ चिमि चिमि स्वाहा।

विधि : सुबह उठते ही एक कलश में स्वच्छ जल लेकर उसके ऊपर १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़कर फूंके। बाद में उस जल को ७ बार उक्त मन्त्र पढ़ते हुए ७ चुल्लू करे और जिस पड़ोसी का वशीकरण करना हो, उसका नाम ले या उसका स्मरण करे। इससे वह वशीभूत होगा।

कभी-कभी निवास के आस-पास ऐसे लोग भी रहते हैं, जो बात-बात में झगड़ा करते हैं। ऐसे लोगों को सानुकूल बनाने में उक्त मन्त्र का उपयोग करना चाहिए। दूसरे मतों से इस मन्त्र का उपयोग स्त्री-वशीकरण हेतु भी होता है।

(२) ॐ द्राविणी स्वाहा। ॐ हामिले स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र का १० हजार जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है। बाद में अपामार्ग या ओंगा के वृक्ष की ७ अंगुल लम्बी लकड़ी को ७ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर उसे साध्या के घर में डाले।

११. स्व-पत्नी-वशीकरण

ॐ नमः क्षिप्र-कामिनी अमुकीं मे वशमानय स्वाहा।

विधि : पहले पर्व-काल आदि में मन्त्र का जप कर मन्त्र सिद्ध करे। बाद में नित्य ७ बार उक्त मन्त्र जप कर अपना मुंह धोए। इससे स्व - पत्नी पति के वश में रहेगी। ऐसा कुछ दिनों तक करते रहना चाहिए। अन्य सभी कार्य सूझ-बूझ के साथ करे।

१२. स्व-पति-वशीकरण

ॐ काम-काम-मालिनी पतिं मे वशमानय ठः ठः।

विधि : पहले मन्त्र सिद्ध करे, बाद में प्रयोग करे।

विशेष : पति को वश में करने के लिए गोरोचन, कुंकुम और खस के मिश्रण को उक्त मन्त्र द्वारा पत्नी ७ बार अभिमन्त्रित करे तथा अपने कपाल में 'तिलक' कर पति के सामने जाए, तो पति वशीभूत होता है। ऐसा कुछ दिनों तक करती रहे।

१३. पान से वशीमरण

(१) श्रीराम नाम खेली अकन कबीरी, सुनिए नारी ! बात हमारी। एक पान सङ्ग मँगाय, एक पान सेज सौं लावै। एक पान मुख बुलावै, हमको छोड़ और को देखे, तो तेरा कलेजा मुहम्मद वीर चक्खे।

विधि : पहले मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में पान के तीन बीड़े लेकर प्रत्येक के ऊपर २१-२१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रण करे। इन बीड़ों को जिसे क्रमशः खिलाया जाएगा, वह वश में होगा।

(२) हरे पान, हरियाले पान। चिकनी सुपारी, श्वेत खैर। दाहिने कर चूना, मोही लेय पान। हाथ में दे हाथ, रस ले ये पेट। पेट रस ले श्री नरसिंह वीर। तेरी शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। दुहाई महादेव की।

विधि : पहले मन्त्र को सिद्ध करे। फिर पान के एक बीड़े को उक्त मन्त्र द्वारा २१ बार पढ़कर अभिमन्त्रित करे। पान के बीड़े को साध्या को खिलाए।

१४. सुपारी से वशीकरण

अमुक गुरु गुफतार, जाग-जाग अल्लाउद्दीन शैतान। सात बार अमुक के जिया आन। जो न माने, तो तेरी अम्मा की तलाक, हमशीरा की तलाक।

विधि : पहले मन्त्र को सिद्ध करे। फिर एक सुपारी लेकर उसके ऊपर २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर उसे अभिमन्त्रित करे। इस सुपारी को पान में रखकर खिलाने से वशीकरण होता है।

१५. जल-पान द्वारा वशीकरण

लाइलाह इल्लिलाह, धरती से आसमान तक। लाइलाह इल्लिल्लाह, अर्श से कुर्सी तक। लाइलाह इल्लिल्लाह, लोह से कलम तक। लाइलाह इल्लिल्लाह, मुहम्मद रसूलिल्लाह। 'अमुक' के बेटे 'अमुक' को, मेरे वश में कर।

विधि : जिस व्यक्ति को वशीभूत करना हो, उसकी माँ के नाम के साथ उसके नाम का उच्चारण करे। स्वच्छ जल को उक्त मन्त्र से ३१ बार अभिमन्त्रित कर जिसे पिलाया जाएगा, वह वशीभूत होगा।

१६. नमक से वशीकरण

एक नमक राता माता, दूसरा नमक विरह से आता। तीसरा नमक अमुक औरी - बौरी, चोथा नमक रहे कर जोरी। यह नमक अमुक खाए, अमुक को छोड़ दूसरा नहीं जाए। दुहाई पीर औलिया की। जो कहे सो सुने, जो माँगे, सो देय। दुहाई गौरा-पार्वती की, दुहाई कामाख्या देवी की। दुहाई गुरु गोरखनाथ की। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले मन्त्र सिद्ध करे। बाद में थोड़ा-सा नमक लेकर उसे १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर खाने - पीने की वस्तुओं में मिलाकर खिलाए। खानेवाले वशीभूत होंगे। यह मन्त्र व्यक्ति-गत तथा सामूहिक वशीकरण—दोनों में उपयोगी है।

१७. काजल से वशीकरण

ॐ नमो आदेश गुरु को, फूल-फूल फूलेश्वरी, फूल गल से बँधाए। एक फूल हँसे, एक फूल विगसे। एक फूल में कलवा वीर, कालकारो वीर। पर नारी सूँ हमारा सीर, आए तो बूटे, नहिं तो काला भैरूँ—नारसिंह छूटे

खाय। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। ॐ ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि : पहले पर्व-काल में उक्त मन्त्र का दश माला जप करे। फिर जब आवश्यकता पड़े, तब एक सुगन्धित 'फूल' और 'काजल' पूजा-स्थान में रखकर १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। फूल साध्या को दे या सुंघाए। साथ ही युक्ति से काजल को साध्या के वस्त्र पर लगाए। इससे साध्या का वशीकरण होता है।

१८. मिट्टी से वशीकरण

काला कलुवा चौंसठ वीर, ताल भागी तोर। जहाँ को भेजूँ, वहीं को जाए। मांस-मज्जा को शब्द बन जाए, अपना मारा आप दिखाए। चलत बाण मारूँ, उलट मूठ मारूँ, मार-मार कलुवा, तेरी आस चार। चौमुखा दीया मार, बादी की छाती। इतना काम मेरा न करे, तो तुझे माता का दूध पिया हराम॥

विधि : जिसे वशीभूत करना हो, उसके बाँएँ पैर के नीचे की मिट्टी लेकर उसके ऊपर १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे। फिर इस अभिमन्त्रित मिट्टी को साध्य के सिर पर युक्ति से डाले।

१९. धूल से वशीकरण

ॐ चण्डी महा - चण्डी दुरितापहारिणी, सर्व-शत्रु-विनाशिनी। खिलणी, मोहणी, स्तम्भिनी, उच्चाटिनी। त्रैलोक्य-स्वामिनी, माया-मोह-बन्धिनी। राजा-प्रजा-वशी-करणी, सर्व-जन-वशीकरणी। ऐं क्लीं ह्रीं ह्रौं सः (स्व) ॐ फट् स्वाहा।

विधि : ब्राह्म - मुहूर्त में उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। फिर अपने थूक से अपने कपाल के ऊपर तिलक करे। सूर्योदय होने पर जिसको पहले देखेंगे, उसका वशीकरण होगा।

२०. धूल या मिट्टी से वशीकरण

धूली धूलेश्वरी धूली माता, परमेश्वरी धूली चञ्चण। जै जै-कार इन रन चोप भरे, अमुक की छाती छोर-छोर तें न हटे। देता घर-बार मरे, तो मसान लौटे। न जीवै, तो पाव पलौटे, वाचा बाँधि। सूती होय, तो जगाई लाव। माता धूलेश्वरी! तेरी शक्ति, मेरी भक्ति। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि : 'रविवार' को मरनेवाले की जब अन्तिम क्रिया हो जाए, उसके बाद चिता-स्थान पर जाए और वहाँ से भस्म या राख तीन मुट्ठी लाए। भस्म को एक डिब्बी में रखे। उसके ऊपर ७ शनिवार तक अर्थात् ४९ दिनों के लिए नित्य १४४ बार उक्त मन्त्र का जप करे। धूप-दीप जलाए। नैवेद्य में मिष्ठान्न रखे। ऐसा करने से मन्त्र की सिद्धि होगी। फिर इस भस्म की एक चुटकी कागज की पुड़िया में रखकर जेब में रखे अथवा अपनी मुट्ठी में रखे और २१ बार उक्त मन्त्र 'जप' कर बाहर जाए। साधक जिस पर भी दृष्टि रखकर मन्त्र-स्मरण करेगा, वह उसके पास आ जाएगा और वह उसके वश में रहेगा। यदि उसे वशीकरण से मुक्त करना है, तो उसको स्नान कराकर 'गायत्री मन्त्र' से अभिमन्त्रित जल पिलाए, वह वशीकरण से छूट जाएगा। उक्त प्रयोग उग्र है। छोटे-मोटे कार्य हेतु इसका प्रयोग न करे। कभी-कभी ऐसे प्रयोग करने में साधक को स्वयं विघ्नों या उपद्रवों का सामना करना पड़ता है।

२१. सिन्दूर से वशीकरण

['शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग १, पृष्ठ ६३, मन्त्र ४ देखिए। यही मन्त्र विधि - भेद सहित यहाँ प्रस्तुत है। विविध प्रयोग भी हैं।—प्रेषक]

ॐ हथेली तो हनुमन्त बसे, भैरू बसे कपाल। नारसिंह की मोहिनी, मोहे सब संसार। मोह, मोह हनुमन्ता वीर! सब वीरन में तेरा सीर। सबकी दृष्टि बाँध के, मोहे

तेल-सिन्दूर। चढ़ाऊँ तोहि तेल-सिन्दूर। तेल-सिन्दूर कहाँ से आया ? कैलाश-पर्वत से आया। कौन लाया ? अञ्जनि-पुत्र हनुमन्त लाया, गौरी-पुत्र गणेश लाया। गणेश ल्याय भैरू न दीन्हा। काला, गोरा, तोतला--तीनों बसें कपाल। बिन्दी तेल-सिन्दूर की, दुश्मन गया पताल। दुहाई कीमिया सिन्दूर की। दूजे को देख्याँ बल जले, हमें देख्याँ शीतल हो जाय (जाएँ)। हमारी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य नाम, आदेश गुरु को।

विधि : (१) भाग १, पृष्ठ ६३ के मन्त्र ४ के अनुसार। विकल्प में क्रम २ के अनुसार मन्त्र की विधि करे, तो भी फल - श्रुति समान रूप से होगी।

(२) ४० दिनों तक नित्य इस मन्त्र की २ माला करने से मन्त्र की सिद्धि होगी। बाद में आवश्यकता होने पर कीमिया सिन्दूर को तेल में मिलाकर—उसके ऊपर ५१ बार मन्त्र जप कर अभिमन्त्रित करे। फिर उसका तिलक मस्तक के ऊपर अर्थात् भाल - प्रदेश या कपाल के ऊपर लगाकर साधक जहाँ भी जाएगा - वशीकरण होगा।

२२. हवन से वशीकरण

ॐ गणपति वीर बसै मसान, जो मैं माँगो (मङ्गौ) सो तुम आनु (आन)। पाँच लड्डवा सिर सिन्दूर, त्रिभुवन माँगे चम्पे के फूल। अष्ट कुलि नाग मोहु, जो नारी (नौ सौ नाड़ी) बहुत्तरि कोठा मोहु। सभा माहे इन्द्र की बेटी मोहुँ। आवती-आवती स्त्री मोहुँ, जाता-जाता पुरुष मोहुँ। डाँबा (डाँवा) अङ्ग बसै नरसिंह जी, वनै क्षेत्रपाल। आवे मार मर करन्ता, सो (सब) जाई हमारे पाँव परन्ता। गुरु की शक्ति, हमारी भक्ति। चलो मन्त्र, आदेश गुरु को।

विधि : पहले 'हवन' हेतु समिधा, घृत, शर्करा और गुग्गल एकत्रित करे। फिर एकान्त कमरे में 'होम - कुण्ड' बनाए। सभी वस्तुओं को समुचित विधि से मिश्रित कर रखे। बाद में उक्त मन्त्र द्वारा ३५१ आहुतियाँ दे। 'हवन' के प्रभाव से साधक में ऐसी शक्ति का सञ्चार होगा कि उसके आस-पास के सभी लोग उसके वश में हो जाएँगे और शत्रु भी वैर-भाव त्याग कर अनुकूल होंगे।

२३. एरण्ड-वृक्ष से वशीकरण

ॐ नमो काल भैरव-काली रात, काला आया आधी रात। चलै तो कतार बाँधूँ, तूँ बावन वीर। पर-नारी सो राखै शीर, छाती धरि के वाको लाओ। सोती होय, जगा के लाओ। बैठी होय, उठा के लाओ। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुंके मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य नाम, आदेश गुरु का।

विधि : पहले पर्व - काल में मन्त्र सिद्ध करे। फिर जब 'रविवार' को 'होली' या 'दीपावली' हो, तब प्रयोग करे। एरण्ड के लाल रङ्ग के वृक्ष को उक्त मन्त्र पढ़ते हुए एक झटके से बाँएँ हाथ से उखाड़े और उसे घर लाए। उसके छोटे-छोटे टुकड़े करे। एक टुकड़े के ऊपर १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे। फिर इस अभिमन्त्रित टुकड़े से जिसे छुआ जाएगा, वह वश में हो जाएगा।

२४. वशीकरण के अनूठे प्रयोग

(१) जति हनुमन्ता, जाय मरघट। पिण्ड का कोन है शोर, छत्तीमय बन पड़े। जेही दश मोहुँ, तेही दश मोहुँ। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : शनिवार के दिन हनुमान जी का विधि - वत् पूजन करे। 'सुखडी' का नैवेद्य चढ़ाए। 'सुखडी' गेहूँ के आटे, गुड़ व घृत से बनती है। नैवेद्य अर्पित कर उक्त मन्त्र का १५०० 'जप' करे। ८ दिनों तक या शनिवार तक 'जप' करे। इससे मन्त्र की सिद्धि होगी। फिर नित्य निश्चित संख्या में 'जप' करता रहे। बाद में जब आव-

श्यकता हो, तो चौराहे की मिट्टी ७ चुटकी या ७ कङ्कड़ लाए और घर में ही रखकर प्रत्येक के ऊपर २५०-२५० बार उक्त मन्त्र जप कर अभिमन्त्रित करे। फिर मिट्टी या कङ्कड़ी को ऐसे जलाशय में या कुएं में या तालाब में डाले, जहाँ से पूरे गाँव को या मुहल्ले को जल वितरित होता हो। जल का पान करनेवाले लोगों का वशीकरण होगा। इस प्रकार के प्रयोग छोटे गाँव के ऊपर करने से ही ठीक परिणाम मिलता है। इसके अतिरिक्त साधक-बन्धु अन्य परिवर्तन स्व-सूझ-बूझ से कर सकते हैं।

(२) जय हनुमन्ता, तेज चलन्ता, शहर-गाँव-मरघट में रमता। भैरव साथ उमा को नमता, मेरे वश में अमुक कु लावता। नमु हनुमन्त बजरङ्ग बल-वीरा, ध्यान धरूँ—हिरदय में धीरा।

विधि : आक के उस वृक्ष के पास जाए, जिसके फूल जामुन के रङ्ग के हों। शनिवार के दिन ऐसे आक के वृक्ष के पास दीप व धूप कर उक्त मन्त्र का १० हजार 'जप' करे। १० हजार 'जप' न हो सके, तो सूझ-बूझ से निश्चित संख्या में 'जप' करे। जब तक 'जप'-संख्या पूरी न हो, तब तक 'जप' सतत करे अथवा शेष 'जप' दूसरे शनिवार को वैसे ही करे। वृक्ष के पास ही हनुमान जी का पूजन करे। नैवेद्य और लवङ्ग-युक्त पान का बीड़ा चढ़ाए। पूजन के बाद पान का बीड़ा स्वयं खाए और प्रसाद को वितरित करे। इस तरह ८ दिन लगातार अथवा ८ शनिवार तक करने से मन्त्र की सिद्धि होती है। जब किसी को भी वश में करने की आवश्यकता हो, तब चिता की भस्म, चौराहे की धूल और सरोवर की या तालाब की मिट्टी—तीनों को शनिवार की रात्रि में अपने सामने रखकर उसके ऊपर १११ बार उक्त मन्त्र जपे। ऐसा ७ दिनों तक करे। आठवें दिन पुनः शनिवार होगा, इस शनिवार को प्रातः-काल इन तीनों अभिमन्त्रित वस्तुओं को सरोवर या तालाब, जहाँ से मिट्टी लाए, वहीं डाले। 'अमुक कु' के स्थान पर जिसका वशीकरण करना हो, उसका नाम लेना चाहिए। जब मन्त्र सिद्ध करे, तब जो मन्त्र ऊपर दिया है, वैसे

ही 'जप' करे। प्रयोग के समय 'अमुक कु' के स्थान पर नाम जोड़कर जपे।

(३) अलफ अलोप एक रहमान, सुन शैतान मेरी शकल बन 'अमुक' को जा रान। न राने, तो तेरी माँ-बहन को तीन सौ तीन तलाक।

विधि : बेसन का एक 'चौमुखा दीपक' बनाकर उसके कोने पर अपने दाएँ हाथ की अनामिका अँगुली का रक्त लगाकर, उसमें तेल भरे या तेल भर कर उसमें लाल रङ्ग की बत्ती रखे। सूझ-बूझ से दीपक या बत्ती जलाकर 'लोबान की धूनी' या 'गुग्गुल की धूनी' करे। साधक अपना मुँह दक्षिण-दिशा की ओर कर बैठे। नैवेद्य में भुने हुए जौ अपने पास रखे। ११०८ अथवा ११ माला उक्त मन्त्र जपे। 'जप' कर साधक वहीं सो जाए। 'दीपक' को जलता रहने दे। इस तरह ७ दिनों तक करे। ७ दिनों में मन - चाहा वशीकरण होता है।

२५. वशीकरण का शैतानी मन्त्र

इन्ना आत्वेना शैताना, मेरी शकल बन '.....' के पास आना। उसे मेरे पास लाना। न लावे, तो तेरी बहिन-भानजी पर तीन सौ तीन तलाक।

विधि : उक्त मन्त्र में रिक्त स्थान '.....' में अभीष्ट व्यक्ति का नाम जोड़े। शनिवार की रात को अपने अलग कमरे में स्नानादि कर नग्न होकर चारपाई लगाए। कमरे में 'दीपक' जलाए और 'लोबान की धूनी' करे। चारपाई के पायदान की ओर बैठकर एक हाथ में गुड़ का टुकड़ा ले। हाथ में गुड़ का टुकड़ा रखना उचित न लगे, तो एक कटोरी में लेकर उसके ऊपर १०१ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे। 'जप' के बाद गुड़ को चारपाई के नीचे रखकर सो जाए। प्रातः-काल गुड़ को बच्चों में बाँटे। 'जप' समय में एवं सोते समय नग्नावस्था आवश्यक है। प्रयोग के समय कुछ दिखे, तो घबराए नहीं और मन को शुद्ध रखकर ७ या २१ दिनों तक उक्त प्रकार से

साधना करे। इससे मन-चाहे व्यक्ति का वशीकरण होता है। प्रयोग उग्र है, अतः समझ कर प्रयोग करना चाहिए।

(२) इन्ना चात्वेना शैताना, मेरी शिकल बन 'अमुकी' के पास जाना। उसे मेरे पास लाना। न लावै, तो तेरी बहिन-भानजी पर तीन सै तीन तलाक।

विधि : मन्त्र क्रमाङ्क (१) के समान!

(३) वड पीपल का थान, जहाँ बैठा अजाजील शैतान। मेरी सबीह मेरी-सी सूरत बन अमुकी को जारा-नरानै, तो अपनी बहन - भानजी के सिर जान पग चलता अमीरान्। जो न रानै, तो धोबी की नाद, चमार की खाल, कलाल की भाठी पड़। जो राजा चाहे राज को, मैं चहूँ अपने काज को। मेरा काम न होगा, तो आनसी में तेरा दामनगीर हूँगा।

विधि : (१) शनिवार के दिनों अर्ध-रात्रि में नग्न होकर राई के बारह दाने हाथ में लेकर प्रत्येक के ऊपर १ बार मन्त्र पढ़कर उसे अग्नि में डाले। ऐसा करने से वाञ्छित वशीकरण होता है।

(२) कृष्ण-पक्ष में शनिवार से ३१ दिनों तक आधी रात में राई के २१ दाने हाथ में लेकर प्रत्थेक के ऊपर २१ बार मन्त्र पढ़कर अग्नि में डाले।

२६. वशीकरण हेतु दुहाई मन्त्र

दुहाई बाबा हनुमान की, मरघटवाली की दुहाई। चौगानवाली की दुहाई, मुरदे खानेवाली की दुहाई। पाँचों पीरों की दुहाई, सैयद बादशाह की दुहाई। ला इलाहो लिल्लाह मोहम्मदीव रस्सूलिल्लाह की दुहाई। पवन की दुहाई, बावरी की—मीर साहिबा की दुहाई। कालका माई की दुहाई, नगर-कोटवाली की दुहाई। बाबा बालक-

नाथ की दुहाई, गुरु गोरखनाथ की दुहाई। अलखिया बाबा की दुहाई, मरघटवाली की दुहाई। भैरों-काली की दुहाई, बङ्गाली बाबा की दुहाई। पहलवान की दुहाई॥

विधि : प्रार्थना-स्वरूप उक्त मन्त्र को, जब 'सूर्य-ग्रहण' हो, तब सिद्ध करे। वर्ष में जब भी सूर्य-ग्रहण हो, तब उसका यथा-शक्ति जप करते रहें। मन्त्र की संख्या गिनने की आवश्यकता नहीं। पूरा मन्त्र याद न रहे, तो 'सूर्य'-ग्रहण में एक सादे कागज पर लिखकर सामने रखकर उसका स्मरण करे। पहले सूर्य-ग्रहण में सिद्ध कर बाद में होने-वाले 'सूर्य-ग्रहण' में उसे चैतन्य बनाए। जब किसी को वश में करना आवश्यक हो, तब खाने-पीने की वस्तुओं पर उक्त मन्त्र २१ बार पढ़कर फूंक लगाए और उन्हें साध्य को खिलाए या पिलाए। साध्य वशीभूत होगा।

२७. वशीकरण हेतु सरल मन्त्र

बिस्मिल्लाह हिर्रमानुर्रहीम आलमोसि हो वल्लाह।

विधि : शुक्रवार से प्रारम्भ कर ४० दिनों तक उक्त मन्त्र का नियमित यथा-शक्ति 'जप' करे। इससे मन्त्र सिद्ध होगा। बाद में खाने-पीने की वस्तुओं को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर फूंक लगाए। जिस व्यक्ति को वश में करना हो, उसे युक्ति से खिलाए या पिलाए।

(२१)

प्रसव-सम्बन्धी मन्त्र

१. गर्भ-स्तम्भन-मन्त्र

(१) ॐ नमो आदेश गुरु को। ॐ नमः आदेश। अङ्ग में बाँध राख। नृसिंह यति मोसते बाँधि राख। श्री गोरखनाथ काँख ते बाँधि राख। हपूलिया राजा सुण्डों से बाँधि राख। दठासन (हठासन) देवी यह मन पवन-काया

को राख। थँभे गर्भ और बाँधे घाव थाँभ। माता पार्वती यह गण्डो बाँधूँ। ईश्वर यति, जब लग गण्डो कटि पर रहे, तब लग गर्भ काया में रहे। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : प्रति-दिन १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे, तो मन्त्र सिद्ध होगा। बाद में निम्न विधि के अनुसार प्रयोग करे—धागा बनाने के लिए पहले तो स्त्री की पूरी लम्बाई अर्थात् चोटी से एड़ी तक सात बार सूत नापे और कुआँरी कन्या से इसे कटवाए। फिर उसके ऊपर मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करे और सात बच्चों से गाँठ लगवाए। इस प्रकार बने गण्डे को जो स्त्री धारण करती है, उसका गर्भ स्तम्भित अर्थात् सुरक्षित रहता है। धागे को कमर में धारण करे। जब सन्तान होने का समय हो, तब धागे को निकाल ले—उतार ले और ध्यान-पूर्वक जल में विसर्जित कर दे अर्थात् धागे को खोलकर जल में डाले।

(२) ॐ नमो गङ्गा डकारे। गोरख बहा घोर घीपार। गोरख बेटा जाया, जयद्रुत पूत। ईश्वर की माया।

विधि : कुवाँरी कन्या के हाथ से कते हुए सूत का गण्डा बनाकर, उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री की कमर में बाँध दे, तो गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है।

(३) हिमबदुत्तरे कूले, 'कीदृशी' नाम राक्षसी।
तस्या स्मरण-मात्रेण, गर्भो भवति अक्षयः॥

ओथो मोथो मेरा कहा कीजिए। 'फलानी' का गर्भ जाते राखि लीजिए। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : उक्त मन्त्र में 'फलानी' - शब्द के स्थान में गर्भिणी स्त्री के नाम का उच्चारण करे। प्रयोग-विधि मन्त्र (२) के अनुसार।

२. गर्भ-सुरक्षा मन्त्र

हिमवन्तोत्तरे कुले, 'कीदृशी' नाम राक्षसी ।
तस्या स्मरण - मात्रेण, गर्भो भवति रक्षितः ।।

विधि : कच्चे सूत के नौ लम्बे डोरे लेकर उन सबको मिलाकर एक मजबूत डोरा बनाए। फिर उस डोरे को लाल रङ्ग के जल में डुबोकर निकाल ले। जिस स्त्री के गर्भ की सुरक्षा करनी हो, उसके पैर के अँगूठे से शिर या मस्तक तक नाप ले। उसमें एक गाँठ लगा दे। तब उस डोरे को स्वच्छ जल में डुबोकर, बाहर निकाले और उसे गुग्गुल की धूनी दे। फिर प्रत्येक गाँठ के ऊपर ११-११ बार मन्त्र जपे और फूंक दे। इस प्रकार सिद्ध डोरे को उस स्त्री की कमर में बाँध दे। नौ मास पूरे हों, तब उसे निकाल कर जल में विसर्जित कर दे। यदि कभी नौ मास के पहले ही प्रसूति हो जाय, तो तुरन्त ही डोरे को निकाल कर जल में डाल दे। गर्भ रहता है, लेकिन गिर जाता है—ऐसे लक्षणवाली बहनों के लिए यह प्रयोग बड़ा लाभ-दायक है।

३. सुख-प्रद प्रसव-दायक मन्त्र

(१) ॐ मुक्ताः पाशा विमुक्ताशा, मुक्ताः सूर्येण रश्मयः ।
मुक्तः सर्व-भयाद् गर्भः, एहि मा चिर मा स्वाहा ।।

विधि : स्वच्छ जल को १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर गर्भवती स्त्री को पिला दे, तो उसका प्रसव बिना किसी कष्ट के सरलता से सुख-प्रद ढङ्ग से शीघ्र हो जाता है।

(२) ॐ रुं द्रां भीं द्रव ह्रीं ह्रां हः हः ॐ क्लीं ।

विधि : रवि या मङ्गल की शाम को गुग्गुल का धूप करे। साधक गर्भवती स्त्री को अपने सामने बिठाए और उक्त मन्त्र का १२१ बार उच्चारण करे। ऐसा क्रम तीन बार कथित दिनों में करे अथवा आवश्यकता के अनुसार करे। इस प्रकार करने से उस स्त्री का गर्भ सुरक्षित रहेगा। प्रसव - समय में भी कोई बाधा नहीं होगी। प्रसव सुख-पूर्वक होगा।

विशेष : उक्त मन्त्र में सुधार की आवश्यकता है। जिन किन्हीं पाठकों के पास यह मन्त्र हो, वे 'चण्डी-धाम' को सूचित करें।

(२२)

स्त्री-सम्बन्धी मन्त्र

१. स्त्री के पैर थामने का मन्त्र

(१) गौरी गण्डा दे गई, ईश्वर दे गया वाचा। महादेव थापा चर, गया हुआ शब्द साँचा। इस स्त्रिया की (त्रिया की) चिन्ता मेटा दश मास। दश मास बाँधूँ—बीस पाख बाँधूँ। इसका खिसे, तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरै। ईश्वर गोरा दिया ताला या घटे पिण्ड का गुरु गोरखनाथ रखवाला। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। सत्य नाम, आदेश गुरु का।

विधि : उक्त मन्त्र को २१ दिनों तक प्रति-दिन एक-एक हजार जप कर सिद्ध कर ले। फिर आवश्यकता के समय सात बार जप कर गण्डा को अभिमन्त्रित करके बाँधे, तो पहननेवाली स्त्री के पैर थम जाते हैं।

(२) जल बाँधूँ, जलवाई बाँधूँ—बाँधूँ जल की तीर। पाँचों काचा कलुआ बाँधूँ, बाँधूँ हनुमत वीर। सहदेव! तेरी लाकडी, अर्जुन! तेरा बाण। रावण रणतर थाम दो, जती हनुमन्त की आन। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। सत्य नाम, आदेश गुरु का।

विधि : पहले 'शीरनी' से हनुमान जी का भोग लगाए। फिर यथा-शक्ति पञ्च - रङ्ग रेशम अथवा क्वारी कन्या के हाथ का कता हुआ सूत ले। उसे शिर से पैर तक नाप कर, गण्डा बनाकर, उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर स्त्री की कमर में बाँध दे, तो पैर थम जाय।

(३) ॐ नमो गङ्गा उकारे, गोरख घोर धियार। गोरख बैठा जाय, दूध-पूत ईश्वर की माया। पड़तार मात्र थँमाय। गौरा काते कातनी, ईश्वर मेले गण्डा। थाँमि-थाँमि हो हनुमान जी! वरती पडदा अण्डा, अन्धा कूबै सियालै छाया। नख-शिख सोधा, पूतला बनाय—पड़ै न पैर भींजे। चीर थाँमि - थाँमि हो हनुमान वीर! शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। सत्य नाम, आदेश गुरु का।

विधि : क्वारी कन्या के हाथ से पौनी कतवा कर, उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर गाँठ लगा कर स्त्री की कमर में बाँध दे, तो पैर थम जाय।

२. पैर चलाने का मन्त्र

ॐ नमो हुकाली। चौंसठि योगिनी हुङ्करती। बावन वीर दश गाँठि लोहा की झरै। मैना झरै, तो मरि-मारिरै रक्तिया वीर। जाको होयो, धरै न धीर। रक्त्यो-रक्त्यो रक्त जडी रक्त्यो, चाव मांस की बड़ी। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : शनिवार की रात्रि में श्मशान - भूमि से सात कङ्कड़ लेकर उक्त मन्त्र से प्रत्येक को २१ बार अभिमन्त्रित करे। फिर उन्हें जिस स्त्री के ऊपर डालेगा, उसी का पैर चलने लगेगा।

(२३)

विष-निवारक मन्त्र

१. गरुड़-मन्त्र

ॐ क्षिप ॐ कृशानुभार्या स्वाहा। ॐ गरुड़ ! प्रभञ्जय प्रभञ्जय, प्रभेदय प्रभेदय, वित्रासय वित्रासय, विमर्दय विमर्दय—स्वाहा। हुँ उग्र-रूप-धर—सर्व-विष-हर ! भीषय भीषय, सर्वं दह दह, भस्मी-कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : शुभ योग में या दीवाली की रात में या ग्रहण के समय उक्त मन्त्र को यथा-विधि सिद्ध करे। बाद में साँप, बिच्छू अथवा अन्य किसी विषैले जीव - जन्तु के काटने पर नीम की टहनी लेकर झाड़ दे, तो विष उतर जायगा और रोगी को आराम होगा।

२. हरि-मरकट मन्त्र

ॐ हरि-मरकट ! मरकटाय शेष-नागाय विष स्वाहा। दुहाई भोलेनाथ नाग-राज की।

विधि : उक्त मन्त्र की साधना का सर्वोत्तम दिन है—'नाग-पञ्चमी।' उस दिन अथवा किसी भी मङ्गलवार को उक्त मन्त्र का एक हजार जप करे और १०८ बार मन्त्र से आहुति दे, तो मन्त्र सिद्ध होगा। दूसरे मत के अनुसार मन्त्र से १०८ आहुतियाँ देने से ही मन्त्र-सिद्धि होगी, लेकिन पहली बात ही ठीक है। बाद में जब भी साँप या बिच्छू ने काटा हो, तो मन्त्र द्वारा झाड़ने से विष उतर जायगा।

३. बिच्छू-विष चढ़ाने का मन्त्र

टूटे खाट पुराने बान। चढ़ जा बिच्छू शिर के तान॥

विधि : जिस स्थान पर बिच्छू ने काटा हो, वहाँ उक्त मन्त्र को पढ़कर फूंक मारने से विष चढ़ जाता है।

विशेष : उक्त मन्त्र की और अधिक जानकारी यदि किन्हीं पाठक को हो, तो कृपया 'चण्डी-धाम' को सूचित करें।

४. बिच्छू-विष-निवारक मन्त्र

(१) ॐ झं हुं दं कं डं वं यं लं क्षं एं ऐं ओं औं हं हः।

विधि : मौलसरी की छाल अथवा बीजों को पानी में पीस कर जहाँ बिच्छू ने काटा हो, वहाँ लगा दे और उक्त मन्त्र से झाड़े, तो तुरन्त ही विष का प्रभाव कम हो जायगा।

(२) ॐ नमो सुरही गाय, खाती फिरै—दूब-पर्वत पर जाय। डोलती ताल - तलैया, पानी पीए सुरही गैया। सुरही गाय जब गोबर करै, तामे बिच्छू सात करै। नीले-पीले-काले-लाल रङ्ग-बिरङ्गे और हराल। उतर रे उतर बिच्छू का जाया! नहीं तो गरुड़ जी उड़ के आया। सत्य मन्त्र गुरुदेव का बताया, उतरो नहीं, तो गरुड़ जी ने खाया।

विधि : दीपावली की रात में उक्त मन्त्र को एक सौ आठ बार जप कर सिद्ध करे। दूसरे मत से दस माला या एक हजार जप करने से सिद्ध होता है। जब किसी को बिच्छू काटे, तो उसे मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित जल पिलाए, तो विष उतर जाता है।

(३) जे सन्देह लेह आवे, तेहि पानी परोरि पियाई देव। कायो पाए शिर मानिक रामुप मोडो, मरि जासी अन बाँधनो। पानीं पीवै बाँधि उतरि जसि।

विधि : मन्त्र को पढ़ते - पढ़ते काटने के स्थान पर सात बार हाथ फेरने से विष उतर जाता है।

(४) काला बिच्छू कपड़े पाय, उतर बिच्छू पाताल कु जाय। जो गुरु गोरख की आन न माने, तो जोगिनी-भैरव तुमकु खाय।

विधि : काल - रात्रि या शिव - रात्रि में—रात को मसान में जाय और योगिनी तथा भैरव की पूजा करे। धूप-दीप-सह उड़द के

बाकुले (वाकला) धराए (उड़द को गरम पानी में उबाले, तो उड़द के दाने नरम हो जाते हैं—उन्हें 'बाकला' या 'बाकुला' या 'बाकले' कहते हैं)। बाद में मन्त्र का दस हजार जप करे, तो मन्त्र सिद्ध होगा।

बिच्छू के काटने से यदि विष चढ़ गया हो, तो वहीं तक साधक अपनी अँगुली रखे और मन्त्र पढ़ते - पढ़ते नीचे उतारे। विष थोड़ा नीचे उतरेगा ही, तो फिर वहीं से मन्त्र पढ़ते हुए और नीचे उतारे। ऐसा करते-करते लगेगा कि विष केवल काटने के स्थान में आ गया है। तब तीन बार मन्त्र बोलकर साधक अपनी अँगुली को जमीन के ऊपर छंटकारे—मानो विष को निकाला जा रहा हो। इसके बाद दंश-स्थान में यदि थोड़ी - सी पीड़ा रहे, तो मन्त्र से २१ बार अभि-मन्त्रित भस्म को दंश - स्थान पर मसल दे, वह पीड़ा भी दूर हो जाएगी। दर्दी को यथा-शक्ति कुछ दान-पुण्य करना चाहिए। कुत्ते को रोटा या रोटी अवश्य खिलाए।

५. विष-स्तम्भन अथवा विष नष्ट करने का मन्त्र

(१) ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ । हं-हं-हं-हं-हं । सः-सः-सः-सः-सः ।

विधि : उक्त मन्त्र की १२५ माला करने से स्थावर और जङ्गम—दोनों प्रकार के विषैले जीवों का विष नष्ट होता है।

(२) ॐ ह्रीं ।

विधि : मन्त्र (१) के अनुसार। इसके प्रयोग से विष का स्तम्भन होगा।

विशेष : एक मत से १२० माला ही करने को कहा है, किन्तु ज्यादा करने से अधिक लाभ होता है—यह एक सत्य है। अतः अपनी सूझ-बूझ के अनुसार काम करना चाहिए।

(२) 'प्रयोग' तो ठीक ही बताए जाते हैं, लेकिन यदि विधि समझने में कुछ कठिनाई अनुभव हो, तो अपने प्रयत्न द्वारा उस कठिनाई को दूर करना चाहिए। उदाहरण के लिए मन्त्र सिद्ध तो हो गया, किन्तु उसके द्वारा विष को नष्ट कैसे करे? 'झाड़ा' दे या 'फूंक'? 'डोरा' दे या 'ताबीज'? इस विषय में स्वयं निर्णय कर लेना चाहिए।

(२४)

सर्प-स्तम्भन मन्त्र

१: सर्प-स्तम्भन मन्त्र

(१) सर्पायसर भद्रं ते, दूरं गच्छ महा - विष !
जनमेजय-यज्ञान्ते, आस्तिक्य-वचनं स्मर ॥
आस्तिक्य-वचनं स्मृत्वा, यः सर्पो न निवर्तते ।
सप्तधा भिद्यते मूर्ध्नि, शिश-वृक्ष-फलं यथा ॥

विधि : रात्रि में सोते समय उक्त मन्त्र को पढ़कर तीन बार ताली बजा देने से सर्प का भय दूर हो जाता है ।

(२) सर्पासर्प भद्रं ते, दूरं गच्छ महा-विष !
जन्मेजयस्य यज्ञान्ते, आस्तिकं वचनं स्मर ॥
आस्तिकस्य वचं स्मृत्वा, यः सर्पो न निवर्तते ।
सप्तधा भिद्यते मूर्ध्नि, वृक्षात् पक्व-फलं यथा ॥

विधि : पर्व-काल में उक्त मन्त्र की दस माला या एक हजार बार जप ले, तो यह सिद्ध हो जाएगा ।

विशेष : १. रात में सोते समय मन्त्र पढ़कर तीन ताली बजाने से या तीन ताली तीन बार बजा देने से उस स्थान में सर्प का भय नहीं रहता । २. सिद्ध मन्त्र को दीपावली की रात्रि में एक सौ आठ बार जप कर जल को अभिमन्त्रित करे । इस जल को घर में छिड़क देने से एक वर्ष तक उस घर में सर्पादि का प्रवेश नहीं होगा । ३. प्रत्येक वर्ष उचित समय में मन्त्र को चेतन करते रहना चाहिए । ४. उक्त प्रकार अभिमन्त्रित जल को घर के सभी लोगों को थोड़ा-थोड़ा पिला दे, तो जल पीनेवालों को किसी भी प्रकार के विष (जहर) का भय नहीं रहेगा । ५. कुत्ते के काटने से चमक का दर्द होता है, जिससे सरकारी आँकड़ों के अनुसार २५ हजार लोग प्रति वर्ष मर जाते हैं । इसी प्रकार सर्प के डँसने से भी हजारों की अकाल मृत्यु होती है । अतः उक्त मन्त्रों द्वारा बचने का उपाय करना आवश्यक है ।

३. सर्प-विष झाड़ने का मन्त्र

खं खः ।

विधि : जब कोई व्यक्ति सर्प के काटने की सूचना दे, तो उक्त मन्त्र द्वारा पानी को एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित कर, सूचना देने-वाले व्यक्ति को वह पानी देकर कह दे कि जाकर यह पानी पिला दो। इस पानी को पीने से सर्प का विष उतर जाएगा।

विशेष : पर्व-काल में बारह हजार पाँच सौ बार उक्त मन्त्र का जप कर उसे सिद्ध कर ले। तब उक्त प्रकार प्रयोग में उपयोग करे। तभी परिणाम शीघ्र-प्रभावी होगा।

(२५)

हिंसक जीव-जन्तु-सम्बन्धी मन्त्र

१. हिंसक जीव-जन्तु से भय-मुक्ति का मन्त्र

फकीर चले परदेश, कुतक मन में भावे। बाघ बाँधूँ, बघाइन बाँधूँ, बाघ के सातों बच्चा बाँधूँ। साँपा चोरा बाँधूँ, वाँत बँधाऊँ, बाट बाँधिदऊँ। दुहाई लौना चमारी की।

विधि : ग्रहण के समय उक्त मन्त्र का दस माला जप करे। बाद में जब भी मङ्गलवार आए, तब एक सौ आठ बार पुनः इस मन्त्र का जप कर ले, तो सिद्ध होगा। मार्ग में जहाँ भी सर्प या व्याघ्र आदि हिंसक पशु देखने में आएं, इस मन्त्र का सात बार स्मरण कर पशु के ऊपर फूंक लगाए, तो वह पशु या साँप इत्यादि अपना रास्ता बदल लेंगे। आप भय से मुक्त हो जाएँगे।

२. हिंसक जीव-जन्तु स्तम्भन-मन्त्र

ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रा - गणपतये वर-वरद, सर्व-जन्तु-हृदय-स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : प्रति रात्रि को गुप्त भाव से श्मशान में बैठकर उक्त मन्त्र का जप करे। कम-से-कम एक या सवा लाख जप करे, तो मन्त्र सिद्ध होगा। फिर किसी समय यदि कोई हिंसक प्राणी—सिंह, व्याघ्र, भालू, भेड़िया, कुत्ता या सर्प आदि आपके सामने आक्रमण करें, तब उक्त मन्त्र को एक सौ आठ बार पढ़े। हिंसक पशु - प्राणी या जीव—जैसे सर्प आदि पीछे की ओर भाग जाएँगे या अपना रास्ता बदल देंगे।

३. व्याघ्र-स्तम्भन-मन्त्र

(१) क्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं। (२) ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं स्वाहा।

विधि : पर्व-काल में उक्त दो में से किसी एक मन्त्र का दस हजार बार जप करे—मन्त्र सिद्ध होगा। बाद में आवश्यकता होने पर लोहे की वस्तु को एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित कर व्याघ्र की ओर फेंक दे, तो उसका मुँह बंध जाएगा।

४. हिंसक पशु बाँधने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को। गुरु गोरखनाथ वनखण्ड-राव। चो ने भेंटे बाघ न खाय। दिन कू राखे सूर्य देवता, रात कू राखे चन्द्रमा। काल-कण्टक दुर अञ्जी हो कुत्ता। बाँधूँ तेरी गरदन, बाँधूँ चारों पाँव, पाँचवीं बाँधूँ पूछड़ी, छठी बाँधूँ डाढ़। कोण-कोण-सा ? अधिया, बधिया लतिया जतिया, सत सुनहरा शीतल—बारा जात—बारा वर्ण कीलु डाढ़। चार कोष आगे, चार कोष पीछे। चार कोष बाँएँ, चार कोष दाहिने। सोलह कोष से धैन धावता। माता पार्वती के चरणों की आण। माता बाखणी के दूध पिए हराम। ईश्वर कुञ्जी, ब्रह्मा ताला। हमारे नख-शिख का गुरु गोरखनाथ रखवाला।

विधि : ग्रहण की रात में दस माला उक्त मन्त्र का जप कर सिद्ध करे। बाद में भी, मन्त्र की शक्ति बनी रहे, इसके लिए नित्य एक सौ आठ बार जप करता रहे।

विशेष : (१) साधकों को, वन - वासियों को, पर्वतीय प्रदेशों या वनों में रहनेवालों को, हिंसक पशुओंवाले प्रदेशों में रहनेवालों को और जैन आदि साधुओं को, जो चातुर्मास के सिवा अन्य समय में इधर-उधर भ्रमण किया करते हैं और वह भी पैदल, उक्त मन्त्र बड़ा उपयोगी है।

(२) जब आवश्यकता हो, तीन तालियाँ बजाए या भूमि के ऊपर गोलाकार घेरा खींचकर बीच में रहे और उक्त मन्त्र का जप करे, तो किसी आपदा की आशङ्का नहीं रहती।

५. भय-निवारक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं चक्रेश्वरी मम रक्षां कुरु-कुरु स्वाहा।

विधि : नित्य एक सौ आठ बार उक्त मन्त्र का जप करे। इससे सब प्रकार के भय का निवारण हो जायगा।

विशेष : (१) जैन मन्दिरों में 'चक्रेश्वरी' देवी का स्थान होता है। सम्भव हो, तो दर्शन करने को जाए। (२) 'चण्डी-पाठ' में देवी-कवच में ३६ वें श्लोक में 'धनं विद्यां च चक्रिणी'—ऐसा पाठ मिलता है। 'चक्रेश्वरी' देवी के मन्त्र भी प्रचलित हैं।

(२६)

अग्नि-सम्बन्धी मन्त्र

१. अग्नि-स्तम्भन का मन्त्र

(१) ॐ लोहा जउन प्रजलै को भाव हो, चरुवा के दार का लाहा परैत सारु। अग्नि-स्तम्भनं। ॐ ह्रीं महिष-वाहिनी जम्भय, मोहय, छेदय, अग्नि स्तम्भय, अग्नि स्तम्भय, ठः ठः। श्रीमहा - देव की आग्या, हनुमान की आज्ञा, नारायण-सूर्य की आज्ञा।

विधि : शुभ समय में उक्त मन्त्र का दस हजार बार जप कर सिद्ध करे। अगले मन्त्र (२) की विधि का अनुसरण करे।

(२) ॐ अग्नि दहन्ती को धरै, समह वहै, कलाह तापिनी, ताप चोरी, इष्टि द्रव्ययते अस्तभ। श्रीमहा-देव की आज्ञा।

विधि : मन्त्र (१) का जप करने के बाद जब आवश्यकता हो, तब इस मन्त्र (२) का एक सौ आठ बार जप करे, तो जप-कर्ता गरम तेल से नहीं जलता। साधक को गरम तेल ठण्डा लगेगा—अथवा गरम तेल को स्पर्श करने पर भी साधक को जलन नहीं होगी।

(३) ॐ तवा तवा अङ्गरी, हेम-पथ की किलवारी। महिन्द्र सीशलं गोर महा-देव की आज्ञा। ॐ नमो कम्बल कोषिलनिद्रयति। काठि जले सले पूर्वते तारनु। महा-देव की पूजा खाय पाय टेलै। ॐ अग्नि वपरति को धरै। मै धरौ गल हंथ्थ, वाम माया योन की जो, सो कीन्हों हंथ्थ जलय। प्रजल पदम यंयेय आवेजः। महा-देव की पूजा पावै, पाय डालै जः। ॐ अग्नि जलती मै धरि जहाहर दीन्हों हंथ्थ वै मै स्वाद रथ भियौदे नारायण साखी। श्री सूर्य की आज्ञा। अग्नि-कुण्ड ब्रह्माण्ड जला। उपर आनौ पानी रैला आनि वैस्वादर नाचौ। मेरी आदिनाथ के जभ मरो जी महम्मद। ॐ हंगुरु गतीसै लिखति काक महय्यं ईद्रगस्त्रिह वोरीति।

विधि : उक्त मन्त्र को 'अग्नि - मुक्त मन्त्र' कहा जाता है। १०८ बार जपने से यह सिद्ध होता है। 'गोरस' और 'रनि' पीसकर मनुष्य की हड्डी में लेप कर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे, तो गरम तेल या अग्नि में न जले। शनिवार को उक्त मन्त्र का जप करे और कुक्कुट की बलि दे। रविवार को उसका मांस मदिरा में छोड़े। फिर

मांस को खरल कर तिलक करे और अग्नि के बीच जाए, तो उसमें न जले।

(४) अग्नि बाँधौ, बाह बाँधौ, कुलाहा बाँधौ, बाँधौ बीच की आयु। चारिहु खुटै बैसन्दर बाँधौ—आतस मेरा भाव। ऊपर देखे उमगे, हमहि देखे शीतल होइ जाई। अग्नि मलि गण लकड़ी बाँधौ, बहिनी बाँधौ। शाल-हाथ जरै न जिह्वा और अनिवेत वीर की आज्ञा फुरै। देखि वायु-वीर हनुमन्त! तेरी शक्ति, गुरु की भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६, पृष्ठ १४०, मन्त्र १११ (२) पाठ-भेद-सह यहाँ प्रस्तुत है। मन्त्र की विधि यहाँ संक्षिप्त दी गई है। एक या दो लाख जपने से उक्त मन्त्र सिद्ध होता है। बाद में आवश्यकता के समय एक सौ आठ बार जप करने से अग्नि-बाधा नहीं रहेगी।

भूल-सुधार

१. 'शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग ६, पृष्ठ १४१, मन्त्र ११२। यह अग्नि को शीतल करने का मन्त्र है। इसे यहाँ 'अग्नि-स्तम्भन-मन्त्र' शीर्षक से दुबारा देना आवश्यक है क्योंकि पूर्व - कथित मन्त्र में दो पंक्तियाँ भूल से छूट गई थीं। पूरा मन्त्र अब नीचे दिया जा रहा है—

ॐ नमो कोरा कखवा। जल सों भरिया ले गौरा के शिर पर धरिया। ईश्वर ठोले, गौरा न्हाय। जलती आग शीतल हो जाय। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य नाम आदेश, गुरु को।

२. 'शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग ६, पृष्ठ १४०, मन्त्र १११ में भी कुछ भूल है। पूरा मन्त्र यहाँ दुबारा दिया जा रहा है। विधि पूर्व-वत् है—

अज्ञान बाँधो, विज्ञान बाँधो, बाँधो घोर घाट। आठ कोटि बैसन्दर बाँधै, अस्त हमारा भाई। आते देखे झझके, मोहि देखि बुझाई। हनुमन्त बाँधो पानी होइ जाई। अग्नि भयतके भवे, जस मत्ती हाथी होई। बैसन्दर बाँधा, नारायण साखि। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विशेष : विकल्प की विधि भी प्राप्त है। एक या दो लाख जप कर ले। आवश्यकता होने पर एक सौ आठ बार मन्त्र जप कर अभिमन्त्रित जल को छिड़के, तो अग्नि-स्तम्भन होगा।

(२७)

शत्रु-त्रासन-मन्त्र

विशेष निर्देश : (१) क्रूर कर्मों की साधना के अन्तर्गत यहाँ कुछ शत्रु-त्रास के प्रयोग मात्र संरक्षण और संवर्धन हेतु दिए जा रहे हैं। जिन बन्धुओं को ऐसे प्रयोगों की आवश्यकता हो, उन्हें प्रयोगों को स्वतः सावधानी-पूर्वक करना चाहिए। सफलता या निष्फलता के लिए स्वयं को जिम्मेदार समझना चाहिए।

(२) प्रयोगों को करने से पूर्व अनुभवी ज्ञानी की अनुमति लेना चाहिए, इससे प्रयोग-कर्ता को हानि होने की सम्भावना न रहेगी। कुछ प्रयोगों में 'वारण' नहीं है, तो स्वयं सूझ-बूझ से काम करे अथवा उन प्रयोगों को न करे। मन्त्र या विधि में किसी भी सुधार की आवश्यकता ज्ञात हो, तो अवश्य लिखें। आपके पास यदि इसी प्रकार के अन्य प्रयोग हों, तो कृपया 'चण्डी - धाम' को लिखकर भेजें, जिससे उन्हें भी संग्रह में सम्मिलित किया जा सके।

(३) प्रयोग एक और दो के सम्बन्ध में भाग नौ के पृष्ठ २०-२१ पर मन्त्र ६ को लें क्योंकि कुछ विधि-भेद है। दोनों में से किसी एक का प्रयोग करें।

(४) अगले भागों में भी शत्रु-सम्बन्धी कुछ प्रयोग हैं। उन्हें भी अवश्य देख लें। तभी इन प्रयोगों पर विचार करें। ऐसा करने से पूर्ण जानकारी हो सकेगी।

१. शत्रु को चौकी बांध कर वश में करना

(१) ॐ वीर वीर महा-वीर, सात समुद्र का सोखा नीर। अमुका के ऊपर चौकी चढ़, लियो फोड़ चोटी चढ़। सांस न आवे—पड़यो रहे, काया मांही जीव रहे। लाल लँगोट तेल-सिन्दूर, पूजा माँगा महा-वीर। अन्तर कपड़ा तेल-सिन्दूर, हजरत वीर की चौकी रहे। हजरत वीर की चौकी रहेवे।

विधि : मङ्गलवार को उक्त मन्त्र पढ़ते-पढ़ते हनुमान जी को तेल, सिन्दूर और लाल वस्त्र चढ़ाकर उनकी पूजा करे। साथ में चने की दाल, जो पहले से ही स्वच्छ जल में भिगोकर रखी हो, नैवेद्य के रूप में हनुमान जी के पास रखे। तब पुनः मन्त्र का यथा - शक्ति जप करे। बाद में लाल वस्त्र का दूसरा टुकड़ा ले। उसके ऊपर तेल व सिन्दूर मन्त्र जपते हुए लगाए। इसके बाद 'अमुका' के स्थान पर शत्रु का नाम जोड़कर उस टुकड़े में सात सुइयाँ क्रमशः मन्त्र जपते हुए चुभो दे। फिर एक छोटी 'कुलड़ी' (हाँडी) में सुइयाँ लगे हुए उस लाल कपड़े को रख दे और 'हाँडी' का मुँह ढक्कन से बन्द कर दे। उस 'हाँडी' को 'जाजरुल' के बगल में जमीन में गाड़ दे। अथवा जमीन में ऐसे स्थान में उतार दे, जो गन्दा हो और लोग जहाँ कचरा कूड़ा-करकट या बेकार वस्तुएँ इत्यादि फेंकते हों। ऐसा करने से शत्रु का शरीर ठण्डा पड़ जायगा। उसके मन में बेचैनी होगी और उसे ऐसी घबराहट होगी कि उसकी नींद हराम हो जायगी। उसकी इस निर्बल अवस्था में साधक उसे अपने वश में कर सकता है। यह कार्य युक्ति-पूर्वक सूझ-बूझ से करे। अपना जो काम उस शत्रु से करवाना है, उसे बुद्धिमानी के साथ उससे करवा लेना चाहिए। यदि साधक को उस पर दया आ जाय और उसे प्रयोग के दुष्प्रभाव से मुक्त कराना चाहे, तो वह स्वयं या साधक स्वयं हनुमान जी की पूजा

करके उस हाँडी को निकाल कर कपड़े में लगाई हुई सुइयों को क्रमशः निकाल ले और उस कपड़े को धोकर साफ करके पूर्व - वत् कर दे। ऐसा करने से शत्रु पहले जैसा स्वस्थ प्रसन्न हो जायगा। साथ ही साधक की आज्ञा भी मानेगा।

(२) ॐ वीर, वीर, महा - वीर ! महा - कील, महा-कील, बुबु-बोल, किलकार, चुचुकार। न चुचुकारे, तो—न कील करे, तो आपका खाया-पिया हराम करे।

विधि : मन्त्र (१) के अनुसार ही विधि है। दोनों प्रयोगों की फल-प्राप्ति अर्थात् शत्रु पर दुष्प्रभाव भी समान रूप से ही होगा। प्रयोग का वारण भी मन्त्र (१) के अनुसार ही है।

२ शत्रु की गुदा से लहू बहाने का मन्त्र

ॐ नमो गँडिया भैरव। गलत हाथ माँथे गघरी-मसक-दारू। जहाँ भेजूँ, तहाँ जाव, अमुक की गांड में रङ्गा डमेलो ही चलाव। न चलावे, तो लोना चमारी की कुण्ड में जाय। फुरो मन्त्र, फट् स्वाहा।

विधि : सवा सेर शराब (दारू या वाइन), सवा सेर काले उड़द और थोड़े तिल—ये सब लेकर भैरव की पूजा करे। बाद में सर्प (सरप, साँप) की हड्डी की माला से प्रति-दिन उक्त मन्त्र का पाँच सौ बार जप करे। ऐसा करते रहने से शत्रु को हैजे की बीमारी होगी। साथ ही उसकी गुदा से लहू (खून) भी बहता रहेगा।

३. शत्रु-पत्नी को रक्त-स्राव कराने का मन्त्र

ॐ सूर्य-वरण निर्मल तारा, सुई का काटा नीम्बू मारा।
आकाश से तारा तूटा, अमुकी तेरा पैर छूटा॥

विधि : उक्त प्रयोग शनि-रवि या मङ्गल की मध्य - रात्रि में करे। कुएं के पास जाकर—नग्न होकर—कुएं में अपने पैर लटकाकर बैठ जाय। बाँएं हाथ में नीम्बू रखे और दाएं हाथ में काँटा (कण्टक)। जिस स्त्री पर प्रयोग करना है, उसकी ओर अपना मुंह करके बैठे।

उक्त मन्त्र को बराबर पढ़ता रहे। साथ ही आकाश की ओर देखता रहे। जब कोई तारा टूटे, तब नीम्बू में मन्त्रोच्चार - सह काँटा भोंक दे या लगा दे। ध्यान रहे कि काँटा नीम्बू की दूसरी ओर बाहर न निकल जाय,। बाद में उस नीम्बू को शीतल स्थान में रख दे। इससे उस स्त्री को रक्त - स्राव होने लगेगा। विशेष बात यह है कि स्त्री निर्बल नहीं होगी। रक्त (लहू या खून) बहने से भी उसका शरीर निर्बल नहीं होगा। फिर उस नीम्बू को उष्ण (गरम) स्थान में रखे, तो वह निर्बल हो जायगी। ('प्रयोग' अत्यन्त क्रूर है। कोई भी मात्र पढ़कर न करे।)

वारण : यदि उस स्त्री को बचाना है, तो पहले की तरह ही बैठे और जब तारा टूटे, तब काँटे को नीम्बू में से धीरे से निकाल ले। ऐसा करने से स्त्री को आराम हो जायगा। काँटा निकालने के बाद नीम्बू के छिद्र को मोम से बन्द कर देना चाहिए।

४. शत्रु पर दबाव लाने का मन्त्र

(१) धार-धार महा-धार, धार बाँध सात बार। राति (रात्रि) प्रहर प्रहरै के, गावें मङ्गल चारउ। धर्म-पुत्र खत्री लोहार, जेता घडिया तेता सार। ना वैर के तन भीजै चीर, धार बाँधे हनुमत वीर। न काटै तलवार, न लागै बरछा, न लागै तीर, न काटै छूरी। श्रीरामचन्द्र की आज्ञा। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि : श्री हनुमान जी का विधि-वत् पूजन करे। फिर उनकी मूर्ति के सामने बैठकर कम - से - कम दस हजार बार जप करे। इस प्रकार कृष्णा चौदस (नर्क चतुर्दशी) या ग्रहण के समय जप करके मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में उसका प्रयोग करे। साधक के सामने जब शत्रु आए अथवा साधक जब शत्रु के सामने जाए, तब मन्त्र जप करता रहे। ऐसा करने से शत्रु की शत्रुता क्रमशः नष्ट होती जायगी।

वह जितना ही मन्त्र के प्रभाव में आएगा, उतना ही साधक को देखते ही वह निर्बल और निस्तेज होता जायगा। यदि उसके मन में क्रोध होगा, तो भी वह शान्त रहेगा। इस प्रकार उसके दबाव में आने पर साधक जो काम उससे लेना चाहे, उससे करवा ले। इस प्रयोग से शत्रु का दमन होगा—वह आपके विरुद्ध कुछ न कर सकेगा। शत्रु कष्ट दे या त्रास पहुँचाए, तब उसका दमन करना पाप नहीं है।

(२) आदि-भैरो ! आदेश गुरु को। मणि बाँधो, धार बाँधो। मानुस की क्या लागे ! लोह न फाटे, धाई रक्षा करे। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि : सात रविवारों तक उक्त मन्त्र की साधना करनी चाहिए। भैरव जी की पूजा विधि-पूर्वक करे। धूप-दीप, फल-फूल व नैवेद्य से उन्हें प्रसन्न करे। नैवेद्य में 'एलची मसाला' अच्छी तरह डालना चाहिए। प्रत्येक रविवार को पूजन कर मन्त्र की १५ माला (१५०० जप) करे, किन्तु सातवें या साधना करने के अन्तिम रविवार को केवल दस माला (१००० जप) करे। मन्त्र का प्रयोग करते समय जिस शत्रु को दबाना हो, उसका नामोच्चारण सङ्कल्प के साथ करे। सात रविवार पूरे होने पर शत्रु के ऊपर वाञ्छित प्रभाव देखने में आएगा। वह निर्बल होगा, उसकी बुद्धि नष्ट हो जायगी। यहाँ तक कि वह आपका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेगा।

५. शत्रु-उच्चाटन—शत्रु में भय उत्पन्न करने का मन्त्र

(१) आऊ भैरू ! भैंसा चढया, शत्रु-मारणनी के पटचा। चल चल, हल हल, आउँ आउँ, नारसिंह साथ ल्याउँ। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि : काल-रात्रि, ग्रहण - जैसे पर्व - दिनों में उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। जप-संख्या दस हजार है। यह भैरव - मन्त्र है, अतः जप के पूर्व भैरव जी का पूजन अवश्य करे। धूप-दीप करके गुड़ का नैवेद्य दे। रक्त वर्ण (लाल रङ्ग) के फूल चढ़ाए।

(२) आओ नारसिंह ! आओ, शत्रु उचाट करावा धाओ। पकड़ो बांका शीश, मारो बांको पँदरा वीश। घर ते काठो वन में जाय, उहाँ ही पीछे पड़े बलाय। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि : ग्रहण के पहले नारसिंह वीर का पूजन करे। ग्रहण लगे, तब उक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करे। कुल दस हजार बार जप करे। ग्रहण-काल में जप पूरा न हो, तो जप पूरा कर ग्रहण पूरा करे। बाद में नारसिंह वीर का पुनः पूजन करे। सब कार्य पूरा करके ही आसन छोड़े। मन्त्र-प्रयोग के लिए १ चातक (एक पक्षी), २ सर्प; ३ नोलीवा— इन तीनों की विष्ठा और ४ यज्ञ की भस्म, ५ चिता की भस्म, ६ चकला या चौराहे की धूल तथा ७ पीपल की लकड़ी की राख—इन सात चीजों को एकत्र करे। प्रत्येक के ऊपर सात-सात सौ बार मन्त्र जपे। फिर सभी चीजों का मिश्रण कर उसके ऊपर सात सौ जप और करे। इस मिश्रण की एक चुटकी जिसके सिर (मस्तक) पर डाली जायगी, वह पागल - जैसा हो जायगा। उसे मालूम नहीं होगा कि उसे क्या हो रहा है ! उसे उच्चाटन होगा। साधक को यदि उस पर दया आए, तो उसके मस्तक (शिर) को धो दे या उसे अच्छी तरह स्नान करा दे, तो वह अवश्य ही मन्त्र के प्रभाव से मुक्त होकर पूर्व स्थिति को प्राप्त कर लेगा।

(३) ॐ नमो भैरव ! जग के तुम राया।
अमुक को उच्चाटय, छोड़ के माया॥

विधि : (१) सोमवार या मङ्गलवार को पीपड़े वृक्ष (पीपणे) को न्यौता दे। अगले सप्ताह में उसी दिन उसी वृक्ष के पास जाकर दस अंगुल लम्बी एक टहनी (शाखा) तोड़ ले। उसके ऊपर उक्त मन्त्र का दस हजार जप करे। उस टहनी का पूजन कर जिसके द्वार के पास उसे गाड़ देंगे, उस व्यक्ति का उच्चाटन हो जायगा।

(२) कृष्णा चतुर्दशी को भैरव जी का पूजन करे और उड़द के आटे से बने रोटे या भाखरे का नैवेद्य दे। वन में पीपड़े (पीपणे) के वृक्ष के पास या श्मशान में जलती हुई चिता के पास बैठकर उक्त

मन्त्र का जप करे। दस हजार जप करने से मन्त्र की सिद्धि होगी। तब शनिवार को चिता की भस्म और जले हुए शव की हड्डी ले आए। रात को उन्हें उक्त मन्त्र से एक हजार बार अभिमन्त्रित करके उन दोनों चीजों को जिसके निवास में फेंक दिया जाय अथवा युक्ति से रख दिया जाय, तो उस निवास में रहनेवालों का उच्चाटन होगा। उन लोगों को शान्ति नहीं रहेगी और कहीं भी भाग जाने की इच्छा होगी।

वारण : उक्त प्रयोग के प्रभाव को हटाने का कोई उपाय ज्ञात नहीं है। यदि किसी पाठक को ज्ञात हो, तो कृपया 'चण्डी-धाम' को सूचित करें।

(४) ॐ नमो क्षेत्रपाल विकराल! मम शत्रु उच्चाटय उच्चाटय, हुं फट् स्वाहा।

विधि : एक कटोरी में थोड़े चावल रखकर उसके ऊपर उक्त मन्त्र का ग्यारह माला जप करे। बाद में उस चावल को शत्रु के घर में युक्ति से बिखेर दे, तो उस घर में रहनेवालों का उच्चाटन हो जायगा। यदि शत्रु के घर में जाने का काम कठिन हो, तो उसके निवास के प्रवेश - द्वार के पास भी उक्त चावल डाल कर देखना चाहिए अथवा उसके आने-जाने के मार्ग में सरलता से बिखेर दिया जाए, तो भी कार्य होगा—लेकिन ये दोनों मात्र विकल्प हैं। पूरा काम तो घर में डालने से ही होता है।

(५) ह्रां ह्रीं ह्रं फट् ठः ठः ठः।

विधि : सात अंगुल लम्बी मानव हड्डी को उक्त मन्त्र से एक हजार बार अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में डाले या गाड़ दे। जिसका नाम या जिनके नाम यह प्रयोग किया जाएगा, उन सबका उच्चाटन होगा।

वारण : बाद में जब आवश्यकता हो, तब उस हड्डी को निकाल ले, तो उच्चाटन का वारण हो जाएगा। उच्चाटित लोग वापस आएँगे और सब कुछ पूर्व-वत् हो जायगा।

६. शत्रु को उन्मत्त (पागल) कर देने का मन्त्र

ॐ नमः उन्मत्त-कारिणी विद्ये! ठः ठः।

विधि : उक्त मन्त्र को सूझ - बूझ से सिद्ध करके ही प्रयोग में लाए। मन्त्र सिद्ध कर लेने के बाद जो तन्त्र - प्रयोग नीचे दिए हैं, उनके अनुसार करे—

(१) हरताल, धतूरे के बीज और मोथ का चूर्ण—इन तीनों का मिश्रण या संयोजन करके युक्ति - पूर्वक शत्रु को खिला दे, तो शत्रु उन्मत्त (पागल)-जैसा हो जायगा। बाद में साधक यदि उसे अच्छा कर देना चाहे, तो शर्करा - युक्त दूध उसे पिला दे। वह अच्छा हो जायगा—पूर्व-स्थिति प्राप्त कर लेगा।

(२) मोथ का चूर्ण या पाउडर, करञ्ज के बीज और गुड़ — सबको अभिमन्त्रित करके फल या फल के रस में शत्रु को पिला दे, तो वह उन्मत्त हो जायगा। साधक उसे अच्छा करना चाहे, तो शत-पुष्या के चूर्ण या पाउडर को घृत-युक्त दूध में पिला दे। वह पूर्व-वत् स्वस्थ हो जायगा।

७. शत्रु का चित्त भ्रमित करने का मन्त्र

(१) ॐ नमो टकिप्रमोट गोरी, अमुकस्यामुकस्य अरुव कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : आक के फूल हाथ में लेकर उक्त मन्त्र को १०८ बार जपने से शत्रु का चित्त भ्रमित हो जाता है। 'अमुक'-शब्द के स्थान में शत्रु का नाम जोड़कर जप करे। ग्रहण के समय मन्त्र को सिद्ध करके प्रयोग करे, तो वाञ्छित फल मिलेगा। [बाद में क्या करना, यह ज्ञात नहीं—किन्हीं पाठक को ज्ञात हो, तो भेज दें।]

(२) हाथ खड़ग मूशल लै, कमला गरुड़ पाय परति आवै। ताहि मारि हो नरसिंह वीर वायु। नरसिंह वीर की प्रचण्ड शक्ति लै लै लै लै त्रिशुला उत्तमूला गजि ज्ञाइ। छढ़ाउ ताहि छाड़ि।

विधि : उक्त मन्त्र का दस हजार जप करके लाल 'कदपल' तथा घृत मिलाकर हवन करे, तो शत्रु का चित्त भ्रमित हो जायगा। 'लाल कदपल' कोई लाल रङ्ग का फूल है। इसका स्पष्टीकरण नहीं है। यदि किसी पाठक की जानकारी में हो, तो कृपया अवश्य 'चण्डी-धाम' को सूचित करें।

८. शत्रु की बुद्धि-स्तम्भन का मन्त्र

अंगुलीला त्रिधा आशय आगल स्वाहा ।

विधि : शत्रु की बुद्धि का स्तम्भन करना चाहे, तो साधक स्वयं नदी के जल में प्रवेश करे और १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे तथा जल में ही अञ्जलि छोड़े । इससे शत्रु की बुद्धि का स्तम्भन होगा ।

मन्त्र सिद्ध करने की विधि प्राप्त नहीं है । अतः सूझ-बूझ से सिद्ध कर ले ।

९. शत्रुओं में झगड़ा (विद्वेषण) कराने का मन्त्र

(१) कालिका माता, पुत्र कौल वीर । वाँका राज-वैद चल चल, अमुक के घर चल । रामचन्द्र लङ्का पर चढ़े, वहाँ हनुमान पत्थर चलावे । तैसे अमुक के घर चले—चल-चल रे वाट । वैताल पीछे, कल्लु आगे चल । महा-देव की आज्ञा, पारवती का चलाया चल । आज्ञा भङ्ग करे, तो माँ मैहण की सेज पर पग धरे । मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा ।

विधि : देवी कालिका और कौल वीर—ये दोनों मन्त्र से सम्बन्धित हैं । अतः सर्व-प्रथम इन दोनों की विधि - वत् पूजा करनी या करवानी चाहिए । बाद में मन्त्र की सिद्धि करे । यथा—

पर्व - काल में पीपल के वृक्ष के आस - पास या देव - मन्दिर या श्मशान-भूमि में उक्त मन्त्र का दस हजार जप करे, तो मन्त्र की सिद्धि होगी । उक्त स्थानों में रात्रि के समय जिस भी मन्त्र का दस हजार जप करे, वह सिद्ध हो जाता है ।

विशेष विधि यह है कि श्मशान में जाकर किसी हाँडी के एक भाग या टुकड़े या उसकी ठीकरी में अग्नि जलाए । श्वेत सरसों और गुग्गुल को मिश्रित करे तथा उसके द्वारा मन्त्रोच्चार के साथ होम करे । जिन दो व्यक्तियों के बीच लड़ाई या झगड़ा या कलह कराना है, उनके नाम 'अमुक'-शब्द के स्थान में जोड़कर १०८ आहुति दे, तो

उन दोनों के बीच लड़ाई या झगड़ा या कलह हो जाता है। कभी-कभी दोनों के शरीर में जलन या दाह होती है।

वारण : साधक को दया आए या वह शत्रुओं को कष्ट से बचाना चाहे, तो उक्त मन्त्र से ही घृत की १०८ आहुतियाँ अग्नि में दे। बाद में उस अग्नि को दूध से बुझा दे। ऐसा करने से दोनों के बीच में पूर्व-वत् अच्छा सम्बन्ध हो जाएगा।

(२) यहाँ बेहडा करो केहडा, अमुकामुका का करो तद्दितडा। वहाँ जा पहोंच वीर डोलीया नारसिंह! मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : नारसिंह वीर का यथोपचार यथा-शक्ति पूजन करे। धूप-दीप-नैवेद्य इत्यादि करके उक्त मन्त्र का दस हजार जप करे, तो मन्त्र सिद्ध होगा। बहेड़ा या विभीतक लाकर उसके पचास टुकड़े करके श्मशान में जाए और उक्त मन्त्र के उच्चारण के साथ एक-एक टुकड़े को क्रमशः अग्नि में डाले। इस प्रकार पचास दिनों तक करे। जिन व्यक्तियों के बीच कलह करवाना हो, उन दोनों के नाम 'अमुका-मुक' के स्थान में जोड़कर आहुति दे। फल यह होगा कि दोनों के बीच कलह होगा—दोनों परस्पर-विरोधी बन जाएँगे।

उक्त हवन की राख या भस्म अपने पास रखे। जिन दो लोगों के बीच लड़ाई-झगड़ा या कलह कराना हो, उनके आने-जाने के मार्ग में यह भस्म डाल दे, तो दोनों में झगड़ा हो जाएगा। 'विभीतक' या 'बहेड़े' के सम्बन्ध में किन्हीं भी वैद्य या आयुर्वेद के ज्ञाता से जान सकते हैं।

१०. शत्रु-मर्दन का मन्त्र

['शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग ४, पृष्ठ ५३, मन्त्र १४ शत्रु का आकर्षण करने का मन्त्र है। दूसरे मत से शत्रु को तङ्ग करने का भी कार्य उससे होता है। शीर्षक में भेद है, लेकिन सामान्य पाठ-भेद के साथ यहाँ दिया है।—प्रेषक]

ॐ नमो आदेश गुरू को। बैरी बाधूँ—जोग फैले वाके घर में रोग, कभी न आवे आगे तेरे। गुरू के मन्त्र फिरेंगे।

रक्त-बिन्दु की बाँधूँ धारा। अम्बर बाँधूँ, बाँधूँ तारा। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। पूरे मन्त्र, साचा पिण्ड, वाचा ईश्वरी। बाधा हन हन फट् स्वाहा।

विधि : शनिवार से उक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करे। नित्य १०८ बार जप करे। २१ दिनों तक ऐसा करने से मन्त्र की सिद्धि होगी। जब तक प्रयोग चले, तब तक नित्य हनुमान जी का पूजन करे और लड्डुओं का भोग लगाए। प्रसादी बच्चों में बाँटता रहे। प्रयोग-काल में ही शत्रु स्वयं भयभीत होकर आपकी शरण में आएगा। यदि प्रयोग-काल में ऐसा न हो, तो नित्य उक्त मन्त्र का जप करता रहे। दुबारा या तिबारा प्रयोग करने से निश्चय ही शत्रु झुकेगा और आकर आपको नमस्कार करेगा। प्रयोग की बात कभी किसी से न करे।

११. मूठ का मन्त्र

['शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ३, पृष्ठ ३६, मन्त्र ४४ और भाग ७, पृष्ठ ४७, मन्त्र ३ में 'मूठ' लौटाने के प्रयोग हैं। वैसे ही भाग ८, पृष्ठ ७८ में मन्त्र १७ है, जो 'मूठ' उतारने का मन्त्र है। अब तक 'मूठ' मारने के मन्त्र - प्रयोग नहीं आए हैं। यदि आए भी हैं, तो भिन्न शीर्षक से दिए होंगे। यहाँ 'मूठ' मारने सम्बन्धी मन्त्र दे रहा हूँ।

—प्रेषक]

(१) ॐ नमो वीर सो हनुमन्त वीर। सूर्य का तेज, शत्रु की छाया—जदीठ चक्र-देवी कालिका चलाया। चल रे वादी, न कर वाद। मैं करिहों तेरे जीव को घात। मैं न डरूँ तेरे गुरू पीर सूँ। मारूँ ताने एक तीर सों। मेरा मारा ऐसा घूमै, जैसे भुजग की लहर पर। तोहि गिरता मारूँ! फेरि बाण चलौ, तो यति हनुमन्त की आन। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले मन्त्र को यथा - विधि सिद्ध करे। फिर प्रयोग करे। उक्त मन्त्र से उड़द के दानों को अभिमन्त्रित करके मारे, तो शत्रु या वैरी पछाड़ खाकर गिर पड़ेगा।

(२) ॐ नमो बीर, हनुमन्त वीर ! भूरि मूठि चलावे तीर। मैं को रुख नाखी तोड़ि, लोहु सोखि। मेरा बैरी भषहि, तोड़ि कलेजा चराव। सब धर्म की हाथई बाजै, धर्म की लाल। मैं बलि तुम्हारे, कहाँ गए माथे भूरे बाल। उलटि पछाड़। न पछाड़ै, तो माता अञ्जनी की आनि। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : होली की रात में उक्त मन्त्र से होली का पूजन करके उक्त मन्त्र का एक हजार जप करे, तो मन्त्र की सिद्धि होगी। फिर जिस वैरी या शत्रु से बदला लेना हो, तब उसकी छाती पर काले उड़दों की एक मूँठ मन्त्र पढ़कर मारे, तो वह शत्रु पछाड़ खाकर गिर पड़ेगा।

१२. शत्रु को जूते की मार देने का मन्त्र

[शत्रु को परास्त करने या उस पर डण्डे की मार पड़े—ऐसे कुछ मन्त्र-प्रयोग 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के भाग ४ के अन्त में आए हैं। भाग १, पृष्ठ ३१, मन्त्र १ देखें। इसी प्रकार भाग ६, पृष्ठ ३७, मन्त्र २, भाग ७, पृष्ठ २७, मन्त्र ३ भी देखें। यहाँ शत्रु को कष्ट हो—पीड़ा हो, उसका एक मन्त्र दिया जाता है।—प्रेषक]

ॐ नमो हनुमन्त बलवन्त, माता अञ्जनी - पुत्र हण-हणन्त। आओ चढ़न्त आओ, गढ़ किल्ला तोडन्त आओ। लङ्का जारी वारी, भस्म करी आओ। लै लङ्का लंगुर (लंगूर) ते लपटाय, सुमेर ते पटकाओ। चन्द्री चन्द्रावली भवानी, मिल गाओ मङ्गल - चार। जीते राम - लक्ष्मण-हनुमान जी, आओ जी—तुम आओ। सात पान का बीड़ा चाबत, मस्तक सिन्दूर चढ़ाओ। आओ मन्दोदरी के सिंहासन डुलन्ता आओ, यहाँ आओ। हनुमान - माया जागे, नृसिंह-माया आगे। भैरव किल - किलाय, उपर हनुमन्त गाजे। दुर्जन को डार, दुष्ट को मार, सङ्गार। राजा

हमारे सत-गुरु, हम सत-गुरु के बालक। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि : मन्त्र की सिद्धि के लिए २१ या ४१ दिनों में मन्त्र का दस हजार जप करे। जब तक मन्त्र - जप करे, तब तक प्रति - दिन हनुमान जी का पूजन करता रहे। धूप - दीप देकर लड्डू का नैवेद्य लगाए। पूजा में सिन्दूर अवश्य चढ़ाए। सुगन्ध - युक्त फूलों की माला पहनाए। माला के अभाव में फूल चढ़ाए। फूल भी यदि प्राप्त न हों, तो इत्र का फाहा लगाए। मुख - वास के लिए पान के सात बीड़े बनवा कर सम्मुख रखे। प्रयोग-काल में यम-नियम का पालन आवश्यक है। स्त्री-सङ्ग न करे। नियत समय में मन्त्र की सिद्धि होगी।

मन्त्र की सिद्धि के बाद जब प्रयोग करना हो, तब निम्न प्रकार प्रयोग करे—

शत्रु की आकृति बनाकर उसकी छाती या हृदय के ऊपर शत्रु का नाम लिखे। आकृति में दो पैर, दो हाथ, दो आँख, दो कान, मस्तक, पेट या उदर एवं गुप्त भाग बना कर इन सबके ऊपर 'ह्रूं' बीज लिखे। बाद में ऊपर लिखा मन्त्र पढ़कर आकृति के ऊपर साधको अपना जूता मारे। यह क्रिया दो बार करे। ऐसा करने से शत्रु क ऐसी पीड़ा होगी, जो किसी को वह बता नहीं सकता। मन्त्र पढ़कर मस्तक के ऊपर जूता मारे, तो उसके मस्तक में चोट पहुँचेगी। अच्छी तरह से मस्तक के ऊपर जूता मार दिया जाय, तो उसके दिमाग में पीड़ा होगी। वह पागल-जैसा बन जायगा।

ध्यान रहे कि अपने प्रयोग के विषय में किसी को भी—कुछ भी न बताए। प्रयोग जितना प्रभावी है, उतना ही खतरनाक भी है, तो बिना समझे न करे। 'वारण' के विषय में कुछ बताया नहीं गया है, अतः सूझ-बूझ से काम करे।

१३. क्रूर मन्त्र

दर-दरी सुपारी, नागर पान। कत्था चूना, लौंग मरतान। लाग-लाग तू ऐसा लाग, दिन नहीं चैन, रात नहीं काल है। आसमान से तारा टूटे, अमुक पर छूटे।

विधि : एक लाख जप करने से उक्त मन्त्र सिद्ध हो जाता है। 'अमुक' के स्थान पर वह नाम ले, जिसके प्रति यह क्रूर प्रयोग करना है। शेष विधि अप्राप्त है। यदि किन्हीं पाठक को इसकी जानकारी हो, तो अवश्य सूचित करें। सामान्य साधक ऐसे प्रयोगों से दूर रहें क्योंकि प्रयोग अपूर्ण है—समय व्यर्थ न करें।

(२८)

शत्रु-त्रासन के कुछ टोटके

(१) शत्रु का कार्य बिगाने का टोटका

शुक्रवार को जब 'पूर्वा फाल्गुनी' या 'पूर्वा भाद्रा'-नक्षत्र हो, तब बबूल के ७ काँटे लाए। उन्हें ७ विभिन्न रङ्गों के रेशमी डोरों या धागों से बाँधकर शत्रु के घर में फेंके या डाले। इससे शत्रु के सभी कार्य बिगड़ जाते हैं।

(२) शत्रु के घर में कलह कराने का टोटका

रविवार को जब पञ्चमी तिथि हो, तब श्मशान में जाए और चिता की भस्म लाए। उसे गुग्गुल की धूनी देकर शत्रु के निवास-स्थान में डाले। इससे शत्रु के निवास में रहनेवालों में कलह हो जायगा। शत्रु को सम्भवतः ऐसा तनाव होगा कि वह भाग जाए।

(३) शत्रु और शत्रु के मित्र के बीच वैर हेतु टोटका

शनिवार या रविवार को जब गधा पेशाब कर रहा हो, तब उसे एक बरतन में लाए। पेशाब में राई के दाने डालकर ३ दिन तक रखे। चौथे दिन राई के दाने निकाल कर सुखाए। बाद में जब रविवार हो, तब उन दानों को गुग्गुल की धूनी देकर शत्रु या शत्रु के मित्र के बीच डाले। इससे दोनों की मित्रता सदा के लिए समाप्त हो जाएगी।

विशेष : श्मशान की भस्म को घर में न रखे। बाहर-ही-बाहर कार्य करे।

(२९)

'वशीकरण' हेतु टोटका

रविवार को जब 'पुष्य'-नक्षत्र हो, तब किसी ब्राह्मण के पाँव-तले की धूल, गाय के खुर के तले की धूल और गधे के खुर के तले की धूल-ये तीनों धूलों को एकत्र करे। बाद में जब कभी किसी व्यक्ति को अपना बनाना आवश्यक हो, तब मौका मिलने पर युक्ति से उस व्यक्ति के मस्तक पर वह धूल डाले। इससे वह वशीभूत होगा। मस्तक के ऊपर धूल अत्यन्त सूझ - बूझ से डालना चाहिए। मोहन-आकर्षण-वशीकरण इत्यादि के मन्त्रों के साथ यह कार्य अच्छी सूझ-बूझ से करे, तो निश्चित रूप से सफलता मिलती है।

(३०)

ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त करने हेतु टोटका

भाद्रपद मास के 'कृष्ण'-पक्ष में जब 'भरणी'-नक्षत्र हो, तब मिट्टी के ४ नए छोटे कलश लाए। चारों कलशों को स्वच्छ जल से भरे और अपने निवास के एक कमरे में रखे। दूसरे दिन जिस 'कलश' का जल समाप्त हो गया हो, उसमें गले तक अनाज भर कर रखे। अनाज किसी भी प्रकार का ले सकते हैं। बाद में इस कलश को 'पूजा'-स्थान में रखे और उसका पूजन करे। शेष कलशों का जल उसी कमरे में बिखेर दे। ऐसा करने से प्रयोग-कर्त्ता के ऊपर माँ अन्नपूर्णा प्रसन्न रहती हैं और उसके घर में उन्नति होती है।

विशेष : जब नया मकान बनाए, तब उक्त 'प्रयोग' अवश्य करे। पुराना मकान यदि फिर से नए रूप में बनवाना प्रारम्भ करे, तब भी उक्त प्रयोग कर सकते हैं। जिस मकान में रहते हों, यदि उसमें करना चाहें, तो अलग कमरे में यह 'प्रयोग' करे। 'कलश' का पूजन विधि-वत् करना चाहिए। हो सके तो किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण को 'दक्षिणा' आदि देकर कराए। इससे विशेष लाभ होगा। अन्यथा स्वयं यथा-शक्ति पूजन करे।

शाबर-मन्त्र-प्रयोग

प्रस्तुत-कर्त्ता : सैयद महम्मद सादिक कादरी बापु
सर्विस चौक, सीफ्फा, जिला जामनगर (गुजरात)-३६११४०

विशेष सूचना : प्रस्तुत प्रयोगों को ध्यान से पढ़ें। प्रयोगों को मात्र पढ़कर क्रिया न करें। अच्छी तरह समझने के बाद ही मनचाहा प्रयोग करें। प्रस्तुत प्रयोग भक्ति-मार्ग के नहीं हैं, जिसमें देवी-देवता त्रुटियों के लिए क्षमा करते हैं। इन प्रयोगों में थोड़ी भी भूल न करें अन्यथा कष्ट उठाना पड़ सकता है और सजा भी हो सकती है। दूसरे शब्दों में विधि में त्रुटि होने पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में कष्ट की प्राप्ति हो सकती है। ऐसी हानि के लिए प्रस्तुत-कर्ता या प्रकाशक या सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। जो लोग 'प्रयोग' करना चाहें, वे स्वयं की जिम्मेदारी से करें। अपनी शक्ति का अनुमान लगाकर ही प्रयोग करें। योग्य मार्ग-दर्शक के परामर्श बिना कुछ भी न करें।

१. श्रीकाली-साधना के प्रयोग

[निम्न-लिखित प्रयोग मुझे बङ्गाल के बसीर बाबा की कृपा से प्राप्त हुए थे। शाबर-मन्त्र-प्रेमी बन्धुओं के लिए मैं उन्हें प्रस्तुत कर रहा हूँ।—प्रस्तुत-कर्त्ता]

(१) ऐ काली कङ्काली, नौ से भैंसा करे ब्याली। मरी खाए, मरघट जाए। नौ से दबोला करे, बाती तब कङ्काली कहेलाती। मेरी शक्ति, गुरु की भक्ति। काहन से निरमला बसे समन्दर तिर, बेनी महा-बेनी चले दीन-कार। घी की कडाई, मद्य की धारा। बनीया बेठी जात मे। सभा - कचेरी मोहुँ, कुएँ की पनिहारी मोहुँ। चरखा काते रण्डी मोहुँ, मोहे-मोहे देख के ठण्डी हुई। दुहाई खवाजा मोहीय्युदीन की। दुहाई झाहीरुद्दीन की। दुहाई समाउद्दीन की। दुहाई दहन्तर बेद की। दुहाई गोरा-

पार्वती जी की । दुहाई महा-देव की । दुहाई लुना चमारी जी की ।

विधि : पहले एक हवन - कुण्ड तैयार करे । प्रयोग प्रारम्भ करे, तब हवन-कुण्ड के समक्ष एक लकड़ी के पट्टे पर भगवती कङ्काली का चित्र रखे । इस स्थान पर किसी को भी आने न दे । चित्र के पास कड़ुवे तेल का एक दीपक जलाए । दीपक के पास एक थाल में या बरतन में अत्तर या इत्र, पुष्प, मद्य, कबाब, सुरमा, मसी, सिन्दूर, कपूर और एक नया कपड़ा रखकर नवचन्दे रविवार से रात्रि में प्रयोगारम्भ करे । नित्य १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे । ४० दिनों तक जप करे । मन्त्र-जप कर मद्य और कबाब हवन-कुण्ड में डाल कर 'होम' भी करे । इससे मन्त्र-सिद्धि होती है । बाद में प्रति - दिन २१ बार उक्त मन्त्र का जप करता रहे । इससे कङ्काली माई साधक के सभी कार्यों में सहायक होंगी और जो कार्य साधक उनसे कहेगा, वे कार्य देवी की कृपा से पूरे होंगे । ऊपर थाल में कबाब या मद्य रखने के लिए कहा गया है । यह 'हवन' - कुण्ड में डालने से समाप्त हो जाएगा । अतः दूसरे दिन ये वस्तुएँ पुनः रखनी चाहिए, पुष्प भी नित्य ताजे चढ़ाने चाहिए । शेष वस्तुएं बार-बार बदलने की आवश्यकता नहीं है ।

(२) काली - काली, जुग - जुग काली । भेजा जावे, चेयती आवे । नाथ के मन भहावे । मोहन मन्दर ऐसी करन, तिनों के एक ही नाम । बांएँ हाथ खडक धने, दाएँ हाथ खप्पर । मास की डली, गुग्गल की बास । जब समरु, तब काली खड़ी मेरे पास । मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति । चल काली ले उठा सतर, हन हन फट् स्वाहा । जिस काम को कहु, न कर लाए, भैरव के रक्त से नहाए ।

विधि : सर्व-प्रथम किसी निर्जन - एकान्त स्थान को खोजे । ऐसे स्थान में एक 'हवन-कुण्ड' बनाए । उसमें अग्नि प्रज्वलित करे । फिर एक बकरा लाए, जो पूर्णतः काले रङ्ग का हो । उसका एक भी

बाल श्वेत नहीं होना चाहिए। बकरे को पहले स्नान करवाए। फिर उसके गले में फूल का एक हार डाल कर उसे हवन - कुण्ड के पास बाँध दे। लकड़ी के पट्टे के ऊपर एक बरतन रखकर उसमें तेल, सिन्दूर, इत्र, कर्पूर, फूल, कङ्घी, सुरमा, मसी, मद्य, कलेजी आदि रखकर उक्त मन्त्र का जप करे। १०८ बार जप करने के बाद कलेजी और मद्य को अग्नि में डाले। दूसरे दिन भी बकरे को हवन-कुण्ड के पास बाँधे। ऐसा चालीस दिन तक करे। ८-८ दिन के अन्तराल में कलेजी और मद्य द्वारा 'होम' ५ बार करे। ४१ वें दिन उक्त सामग्री बकरे को भोग स्वरूप दे। फिर प्रति - दिन उक्त मन्त्र का कुछ जप करता रहे। जब कोई कार्य हो, तब उक्त मन्त्र का जप कर बकरे को भोग लगाए। इससे सभी कार्य सम्पन्न होंगे।

२. सैयद बरहीना की साधना

सैयद बरहीना, बाला - भोला। उल्टी पीठ, पलाने घोड़ा। असी कोश के धावे लगावे। सवा सेर का तोशा खावे। मरी बांधे, मसान बांधे। भूत बांधे, चुड़ैल बांधे। नौ नारसङ्ग बांधे, परनारी चीर बांधे लाकर आवे। आकाश बांधु, पताल बांधु। पुरब बांधु, पश्चिम बांधु, उत्तर बांधु, दक्खन बांधु। नवत पीर का अखाडा बांधु। भरी कचेरी राजा की बांधु। उल्टी पञ्चायत बांधु। जिसको कहु बांध के न लाए, तो अपनी मां का दूध हराम करे। कसम हे कलमा (कल्मा) मोहम्मद सल्लल्लाहो अलय है वस्सलम की लाइलाहा ईल्ललाह मोम्मदुर्रसुल्लाह।

विधि : शुक्ल (सुद) पक्ष के प्रथम गुरुवार को सवा सेर आटे की दो रोटियाँ पकाए। उस पर बकरे के गोश्त के कबाब रखकर फातेहा देकर सैय्यद बरहीना को चढ़ाए या किसी से चढ़वाए। फिर इस भोग को साधक स्वयं खाए या किसी को दे। अथवा, नदी या तालाब आदि में छोड़े। बाद में किसी एकान्त स्थान में जाए। वहाँ लोबान की धूनी या अगरबत्ती कर पश्चिम की ओर मुख कर बैठे

और उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। ऐसा चालीस दिनों तक करे। इससे मन्त्र सिद्ध होगा। फिर प्रति-दिन मन्त्र का स्मरण करता रहे। जब कोई भी कार्य मन्त्र द्वारा करना हो, तब पहले की तरह सवा सेर की दो रोटियाँ और कबाब पर फातेहा देकर 'प्रार्थना' करे। ऐसा करने से कार्य शीघ्र पूरा होगा। जब-जब कार्य लेना हो, तब-तब इसी तरह फातेहा करनी होगी।

३. गुड़-मोहन-प्रयोग

(१) ॐ नमो आदेश गुरु को। गुगल - धूप की धुंओ धार, देखु पल मां तेरी शक्ति। तरस रात्रि को टूटा तारा, रसा टूटा भैरव बाबा काम-नगारा। गुड़ मन्त्र पठउ को दे। घर में सुख न बाहर सुख। फीर-फीर देखे हमारा मुख। जीवत सेवे जीव को, मुवत सेवे मशाण। हमसे आकुल-व्याकुल, जति हनुमन्त की आण। हमें छोड़ ओर के पास जाए, पेट फाट—तुरत मर जाय। सत्य नाम, आदेश गुरू का।

विधि : मन्त्र सिद्ध करने के लिए सात शनिवारों को—प्रति-दिन १२१ बार जपे। कलेजी, मद्य और लपसी (लापशी) का नैवेद्य लगाए। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध होगा। जब जिसका वशीकरण करना हो, उसको अभिमन्त्रित गुड़ युक्ति - पूर्वक खिला दे। उस 'गुड़' के खाते ही वह वश में हो जायगा। यह 'भैरव-साधना' का प्रयोग है।

(२) ॐ नमो आदेश गुरु को। गुड़ राती-गुड़ माती, गुड़ आवे पाया पड़ती। जो मागु प्रयोजन पाउँ, सुती तिर्या जगाकर लाउँ। चल आगीया वैताल ! फलानी को चलावे, रात्री को चैन, न दिन को सुख। फीर - फीर जोवे (देखे) हमारा मुख। जेम कड़ी मकड़ी से टले, शीश फाट दो टुक हो पड़े। काला कल्वा—काली रात, कल्वा चला आधी रात। चल-चल रे कल्वा, सोधन चाटे हमारा तलवा।

आक के पान क्यारी बसे, धन जोबन सो खरी प्यारी रे तरग ! गुड़ करे गिरास, अमुकी आवे फलानी पास। हनुमन्त की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि : सीधे हाथ यानी दाएं हाथ की सबसे छोटी उँगली के रक्त में थोड़ा गुड़ मिलाकर उसे २१ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। गुड़ जिस स्त्री को खिलाया जायगा, वह वश में होगी।

४. स्त्री-वशीकरण का अनुभूत प्रयोग

प्रेम कजला प्रेम सलाइ, प्रेम जोगन बन बन मोहन आइ। मुई मिट्टी कीजिए गुलाम, पड़ी बैठां करे सलाम। भगत कबीर भक्त चलाई, खेड़दी खोड़दी पकड़ मँगाई। पर हां, जादू लिख्खा तावीज्ञ, चरकयुं लावे, लाईला आनिस ईल्लाह आन मलीस। महम्मदुर्रसुल्लाह मे बाक्ष, 'फलानी' शख्सानी को घड़ी पल आराम नवीस।

विधि : नौचन्दी मङ्गलवार की रात में सोते समय कब्रिस्तान में जाए। किसी भी कबर के पास बैठकर १४१ बार उक्त मन्त्र का जप करे। ४१ रातों तक क्रमशः उक्त प्रकार जप करने से मन्त्र सिद्ध होगा। बाद में श्मशान में जाए और ताजी जली हुई चिता की राख, जिस पर पानी न गिरा हो, लेकर उसके ऊपर ४१ बार उक्त मन्त्र का जप करके उसे अभिमन्त्रित करे। यह राख या भस्म जिस स्त्री के मस्तक पर जरा-सी लगा दी जाएगी, वह तुरन्त वश में हो जायगी। मस्तक पर भस्म को लगाने का काम युक्ति से करना चाहिए। मन्त्र में 'फलानी'-शब्द के स्थान में साध्या का नाम ले।

५. पति-वशीकरण हेतु शेख शदु का मन्त्र

शेख शदु—बीबी आशीया के लाडले ! मदा के फौजदार, कमर खट झंझीर झुमता आवे। शदु पीर ! मेरे पति को वश करो, दुहाई तख्त सुलेमान की।

विधि : नौचन्दी रविवार की रात में १२ बजे के बाद एकान्त कमरे में यह प्रयोग वही स्त्री करे, जिसका पति उसके वश में न हो। बिलकुल नग्न होकर पश्चिम की ओर मुख करके--सामने एक 'बाजड़' या 'पहीया' रखे। उसके ऊपर श्वेत रूमाल या वस्त्र बिछाए। उसके ऊपर गुलाब के फूलों की एक माला रखे। पास में इत्र की एक शीशी मुंह खोलकर रख दे, जिससे कमरे में सुगन्ध फैल जाय। पास में गुलगुले का प्रसाद व एक प्याले में थोड़ी-सी शराब रखे। यह सब तैयार करके उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। प्रातः - काल गुलगुले के प्रसाद को बच्चियों में बाँट दे। शराब की भी उचित व्यवस्था स्व-सूझ-बूझ से करे और फूल की माला को जल में विसर्जित कर दे। गुलगुले व फूल की नई माला और शराब को नित्य रखना होगा। ४० दिनों तक इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध होगा। बाद में जब भी पति को वश में करना हो, तब खाने-पीने की किसी भी वस्तु के ऊपर १०८ बार मन्त्र का जप कर उसे अभिमन्त्रित करे। उस वस्तु पर फूंक मार कर पति को खिला दे। उसका 'वशीकरण' हो जायगा।

प्रयोग-काल में प्रयोग करनेवाली पत्नी को किसी भी सम्भोग से दूर रहना आवश्यक है। प्रयोग या जप - काल में कुछ आकृति या शकलें सामने आएंगी, लेकिन उससे डरना नहीं चाहिए। ४० दिन पूरा करके पति को वश में करने के लिए अभिमन्त्रित खाद्य या पेय पति को खिलाने या पिलाने के बाद ही पति के साथ उचित व्यवहार करे—बीच में नहीं। यह प्रयोग उग्र है, सावधानी से प्रयोग करे।

६. पुरुष को नपुंसक बनाने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को। अबेर बाँधो-तारा बाँधो, रक्त - विन्दु की धारा ऊपर बाँधो, कामसेन ताले बाँधो हनुमन्त! पाँचो पाडे साख दे, 'अमुक' की काया बँधे हनुमन्त! गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : शनिवार की रात्रि में तारा टूटने पर नीले धागे में सात गाँठ लगाए। उसके ऊपर उक्त मन्त्र १०८ बार जप करके खाट

के पाए के नीचे उसे दबा दे। खाट के ऊपर सोनेवाला पुरुष पुरुषत्व-हीन अर्थात् नपुंसक बन जाएगा। मन्त्र में 'अमुक'-शब्द के स्थान पर अभीष्ट पुरुष का नाम जोड़कर—अभिमन्त्रित नीले धागे को खाट के पाए के नीचे दबाने से वह पुरुष नामर्द बनेगा। यदि उस पुरुष को पुनः ठीक करना चाहे, तो उस धागे को निकाल ले। वह पुरुष पुनः मर्द हो जायगा।

७. स्त्री को खून बहाने या खून बन्द करने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु का। काला कल्वा वासक्या वीर, तल्वा शीर सो चाटे शरीर। लट झाड़े मुँह भटकावे, रक्त कल्वा पेर चलावे। चलाय - चलाय मशानी कल्वा, अमुकी झूमे चाटे हमारा तलवा। लगा के फूल तराको साखी, अमुकी चलती को खड़ी कर राखी। सत साहेब आदेश।

विधि : ताम्बे की सुई में नीले रङ्ग का धागा पिरोकर एक हाथ में रखे और दूसरे हाथ में नीम्बू रखे। वैसे ही ऐसे स्थान पर बैठे, जिससे दोनों पाँव पानी में रहें। पास में धूप जलाए रखे। शत्रु स्त्री का ध्यान कर मन्त्र का जप करता रहे। जब तारा टूटे, तब नीम्बू में धागा पिरो दे। बाद में उसे मिट्टी के बर्तन में रखकर मोरी में गाड़ दे। उस स्त्री का मासिक शुरू हो जायगा अर्थात् उसका खून बहने लगेगा। यदि बहते खून को रोकना चाहे, तो वह चीज, जो मोरी में गड़ी हुई है, उसे निकाल ले। उस स्त्री का मासिक बन्द हो जायगा अर्थात् खून बहना रुक जायगा। पानी में जब पैर रखे, तब इस प्रकार बैठे कि अपना मुख दक्षिण की ओर रहे।

८. किराए का मकान खाली कराने का मन्त्र

'या कहारो' अथवा 'या कहहारो'।

विधि : कृष्ण-पक्ष में 'शनि' के दिन बारह बजने से पहले अपने गाँव या नगर से बाहर हनुमान जी के ऐसे मन्दिर में जाए, जहाँ आपके सिवा कोई न हो। दिन के ठीक बारह बजे 'आक' का एक फल हनुमान जी के शिर के ऊपर या उस मूर्ति के मस्तक के

ऊपर रखे। फिर मूर्ति के सामने खड़े होकर एक घण्टे तक उक्त मन्त्र का जप करे। मन्त्र जप करते समब यदि भय हो या घबराहट हो, तो भी डरे नहीं। जप के बाद मूर्ति के समक्ष अपने कार्य का ध्यान करे या अपना सङ्कल्प कहे। ७, १४, २१ या ४० दिनों तक उक्त प्रकार करने से कामना पूर्ण हो जाएगी। यह प्रयोग भूल कर भी बस्ती में न करे। निर्जन स्थान में ही यह प्रयोग करना चाहिए।

९. शत्रु के कारोबार को बन्द करने का मन्त्र

हामान लइन, नमरुद लइन, कारुन लइन, सदाद लइन, दुहाई इब्लीस की। 'फलाँ' का कारोबार बन्द करो।

विधि : 'कृष्ण-पक्ष' में बारह हजार जप कर उक्त मन्त्र सिद्ध कर ले। जब भी प्रयोग करना हो, शत्रु के घर (निवास - स्थान) की मिट्टी युक्ति से प्राप्त करे। उस मिट्टी में स्त्री के मासिक का खून मिलाए। फिर शनि या मङ्गलवार को श्मशान में जाकर उस मिट्टी को जलती हुई चिता में डाल दे। बाद में उसी जलती हुई चिता में से उतने ही तौल की मिट्टी निकाल कर उसके ऊपर १०८ बार उक्त मन्त्र का और जप करे। इस मिट्टी को शत्रु के कारोबार (धन्धे) की जगह में युक्ति से डाल दे। इस प्रकार करने से शत्रु का धन्धा—कारोबार बन्द हो जाएगा—एक भी ग्राहक नहीं आएगा। शत्रु के घर की मिट्टी यदि न मिल सके, तो उसके दरवाजे के पास की मिट्टी लेनी चाहिए, जहाँ से वह बार-बार आता-जाता हो। बिना कारण किसी को परेशान न करे, अन्यथा उल्टा असर भी होता है।

१०. शत्रु-निवास को वीरान बनाने का मन्त्र

या इतराईलो या अत काईलो दुहाई काबीदो की।

विधि : 'कृष्ण - पक्ष' में अन्तिम मङ्गलवार की दोपहर के समय अपने निवास में खिचड़ी पकाए और उसके ऊपर दही डालकर कब्रिस्तान में ले जाए। प्रत्येक 'कब्र' पर एक-एक लुक्मा ('कौर' या हाथ में जितना आ सके) रखकर एक - एक कङ्कड़ी उठा ले। इस प्रकार २३ कब्रों में से २३ छोटी - छोटी कङ्कड़ियाँ एकत्र करे। इन सबको किसी कपड़े में लपेट कर उसके ऊपर उक्त मन्त्र का एक हजार

जप करके—मन्त्र जप करते-करते शत्रु के निवास या घर में फेंक दे। इस प्रकार अभिमन्त्रित कङ्कड़ियों को फेंकने से शत्रु का निवास बीरान हो जायगा। बिना कारण यह प्रयोग किसी पर न करे, अन्यथा प्रयोग-कर्ता को कष्ट होगा।

११. शत्रु-नाश का मन्त्र

(१) या इतराईलो, या दोराईलो, या इसराफीलो, या अमवाकील दुहाई या कहारो कौं।

विधि : श्मशान की मिट्टी, कब्रिस्तान की मिट्टी, चौराहे की मिट्टी, उजड़े कुएँ की मिट्टी, बीरान (उजड़े) निवास-स्थान (घर) की मिट्टी, बीरान मन्दिर की मिट्टी, बीरान मस्जिद की मिट्टी, अंग्रेजों के कब्रिस्तान की मिट्टी, यहूदियों के कब्रिस्तान की मिट्टी, पारसी लोग जिस कुएं का जल पीते हों, उस कुएं की मिट्टी अर्थात् पारसी कुएं की मिट्टी, उल्लू के पङ्ख के बाल, शीहा (शेढाई) का कांटा, गधे के लोटने की जगह की मिट्टी, चील (समड़ी) के घोंसले के नीचे की मिट्टी, उजाड़ 'बाव' (कुएं) की मिट्टी, उजड़ी मीनारे की मिट्टी—इन सभी मिट्टियों को किसी भी मास के कृष्ण-पक्ष में शनि या मङ्गल के दिन इकट्ठा करे। फिर इस सारी मिट्टी को जङ्गल में किसी भी सुरक्षित जगह पर सँभाल कर रख दे। इन मिट्टियों को भूल कर भी अपने निवास - स्थान (घर) में न रखे। जब भी प्रयोग करना हो, तब किसी भी 'अमावस' की रात में उन रखी हुई मिट्टियों में से थोड़ी-सी मिट्टी के ऊपर मन्त्र का १३७७ जप कर ले, तो वह मिट्टी सिद्ध हो जाएगी। सिद्ध मिट्टी से विविध प्रकार के प्रयोग आप स्वयं कर सकते हैं अथवा अन्य व्यक्ति के द्वारा करवा सकते हैं। यथा—(१) शत्रु को या उसकी शक्ति को समाप्त करने के लिए उक्त मिट्टी को उसके रहने के स्थान या घर में डाल दे। वह स्थान उजड़ कर बीरान हो जायगा। (२) उक्त मिट्टी को शत्रु के स्थान पर या उसकी दूकान फैक्टरी आदि में डाल देने से वह व्यापार - धन्धा बन्द हो जाएगा। उसकी समृद्धि मिट जाएगी। (३) यदि किसी भी व्यक्ति को उक्त मिट्टी खिला दे, तो खानेवाला उद्विग्न हो जाएगा। (४) दो व्यक्तियों में शत्रुता करवाना चाहे, तो दोनों को अलग - अलग उक्त

मिट्टी खिला देने से दोनों में वैर या कलह हो जायगा। (५) शत्रु को निर्बल करने के लिए या उसे समाप्त करने के लिए यह प्रयोग एक अचूक उपाय है, किन्तु यह अति भयानक प्रयोग है। प्रयोग - विधि जैसी दी है, वैसे ही करे। किसी भी निर्दोष को परेशान न करे, अन्यथा स्वयं को ही कष्ट होगा। क्रमाङ्क १ और २ में जिन स्थानों का निर्देश किया है, वहाँ यदि 'मिट्टी' न फेंक सके, तो कम-से-कम उन स्थानों के प्रवेश - द्वार (दरवाजे) के पास अवश्य डाले, जहाँ से वह व्यक्ति बार-बार आता-जाता हो।

(२) अलीफ अल्लाह, अलफ रहमान, आदम शफी, आदम सुब्हान। अझाझील शैतान करे हमारा काम—ना करे, तो तेरी माँ-बहेन पर ३०३ तलाक—तीन तलाक—तीन तलाक—तीन तलाक।

विधि : ४० दिनों का यह प्रयोग है। नव-चन्दी रविवार की रात में १२ बजे के बाद खाली कमरे में नग्न होकर अपनी पीठ के पीछे सरसों के तेल का एक दीपक रखकर अपनी छाया के ऊपर अपनी दृष्टि जमाए और उक्त मन्त्र का ३०३ बार जप करे। इस प्रकार ४० दिनों तक करता रहे, मन्त्र सिद्ध हो जायगा। इस मन्त्र के प्रयोग से दो व्यक्तियों के बीच लड़ाई - झगड़ा (विद्वेषण) करा सकते हैं। किसी का धन्धा (कारोबार) बन्द करवा सकते हैं। किसी भी अवाञ्छित व्यक्ति (गुण्डे आदि) को गाँव-नगर या अपने मुहल्ले से भगा सकते हैं। अपने निवास से अवाञ्छित किराएदार को भगा सकते हैं। किसी भी व्यक्ति को अपने वश में कर सकते हैं। विधि यह है कि उक्त प्रकार अपनी छाया पर दृष्टि जमा कर मन-ही-मन उस व्यक्ति के सम्बन्ध में, जिससे जो भी काम करवाना हो, सङ्कल्प करके मन्त्र का जप करे। इस प्रकार अपनी ही छाया पर ध्यान जमा कर जप करने से स्व - शक्ति अन्दर से बाहर जाकर अभीष्ट काम करती है। इस प्रयोग से विद्वेषण, स्तम्भन, उच्चाटन और वशीकरण होता है। यह 'शैतानी' प्रयोग है। अच्छे काम में यह प्रयोग उपयोगी नहीं है। शैतानी कार्यों की सिद्धि के लिए ही यह प्रयोग प्रभावी होता है।

१२. विद्वेषण या अचूक मन्त्र

[किन्हीं दो व्यक्तियों को अलग-थलग करना हो, तब यह 'प्रयोग' करे। बिना विशेष कारण प्रयोग न करे। दुरुपयोग से हानि होती है।]

बारा सरसों तेरा राई, पाट की माटी मशान की छाई। पटक मारु, कल दलवार। अमुक टुटे, न देखे अमुक का द्वार। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य नाम, आदेश गुरु का।

विधि : पहले सरसों, राई, श्मशान की राख और आक की लकड़ी को १०६ बार उक्त मन्त्र पढ़कर 'आहुति' दे। जब 'प्रयोग' करना हो, तब कृष्ण-पक्ष के अन्तिम मङ्गलवार को उक्त 'हवन' की भस्म या राख को लेकर दोनों अभीष्ट व्यक्ति जहाँ बैठते हों, उस स्थान या दूकान या मकान के दरवाजे के आगे या पास में डाले, जहाँ से वे आते-जाते हों। मन्त्र में 'अमुक' - शब्द है, जो दो पुरुषों के लिए है। यदि विद्वेषण दो स्त्रियों के बीच कराना हो, तो 'अमुकी'—'अमुकी का द्वार' ऐसा जोड़ना चाहिए। यदि एक पुरुष या एक स्त्री हो, तो क्रमशः 'अमुक-अमुकी का द्वार' या 'अमुकी - अमुक का द्वार' जोड़ना चाहिए।

१३. स्त्री को रक्त-स्राव कराने का अधम-पीर का मन्त्र

जल की मछली दरीया जाए, खोल-खाल लहु बहाए। उद्धम सुद्धम सरजन सरनज, आसमान का तारा टूटे, 'फलानी' का पेड़ा छूटे। दीखा अधम वीर, तेरे इलम का तमाशा।

विधि : किसी भी ग्रहण-काल में उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। जब प्रयोग करना हो, तब दाहने हाथ में 'शीहा' का काँटा और बाँएँ हाथ में एक नीम्बू लेकर नदी या तालाब में कमर तक पानी में खड़े होकर उक्त मन्त्र का जप करे। जप करते समय पानी में देखता रहे। आकाश में तारा टूटे और

उसका बिम्ब पानी में दिखाई दे, तब तुरन्त काँटे को नीम्बू में चुभो दे और पानी से बाहर आ जाए। इस नीम्बू को किसी सुरक्षित स्थान में रख दे—किसी की परछाईं भी उस पर न पड़े, इसका ध्यान रखे, अन्यथा प्रयोग निष्फल हो जाएगा। जिस स्त्री के लिए प्रयोग किया जाएगा, उसका मासिक खुल जाएगा, मासिक स्राव को बन्द करना हो, तब काँटे को नीम्बू में से निकाल ले—खून बहना रुक जाएगा।

मन्त्र सिद्ध करते समय जैसे मन्त्र लिखा है, वैसे ही पढ़े। प्रयोग करते समय 'फलानी' के स्थान पर उस स्त्री का नाम जोड़ ले, जिसके ऊपर प्रयोग करना है। साथ ही प्रयोग-समय में उस स्त्री का ध्यान करे अर्थात् उसकी छवि या चित्र को सामने रखे। मासिक स्राव बन्द कराने को इस प्रयोग का 'वारण' कहते हैं।

१४. उल्टी-सीधी बिस्मील्लाह हमजाद साधना

महोरर्रनिमाहेर्रहीहल्लास्मी बिबहप्फे बिस्मिल्लाह हीर्रहेमानिर्र रहीम।

विधि : रात्रि में बारह बजे के बाद कुएं में अपने पाँव लटका कर उक्त मन्त्र का ११ बार जप करे। दूसरे दिन १०० बार, तीसरे दिन १०१ बार जप करे। इसी प्रकार प्रति - दिन एक - एक संख्या बढ़ाते-बढ़ाते २१ दिनों में पूरा करे। बाद में आनेवाला दिन बाइसवाँ होगा। २२ वें दिन से एक-एक संख्या घटाना प्रारम्भ करे—घटाते-घटाते यहाँ तक आगे जाए कि ११ पर आ जाए। यह एक 'चीतला' या 'क्रम' पूरा हुआ अथवा प्रथम अनुष्ठान हुआ। जब २२ वें दिन से एक-एक मन्त्र-जप घटाना प्रारम्भ करेंगे, तो ऐसी अनुभूति होगी कि आपके साथ दूसरा भी कोई है। जब घटाते-घटाते ११ की संख्या पर पहुँचेंगे, तब कुछ शकलें दिखाई देंगी। वे बात नहीं करेंगी। जब उक्त प्रकार तीन 'क्रम' या अनुष्ठान कर लेंगे, तब वे शकलें आपसे बात भी करेंगी और आपकी इच्छा के अनुसार काम भी करेंगी। आप अपना मनचाहा काम उनसे करवा सकेंगे।

प्रयोग-काल में या उसके पहले या बाद में कोई भी नियम पालन करने की आवश्यकता नहीं है। तथापि शराब व मांस - मछली का त्याग करना चाहिए। कुआं ऐसा चुने, जिसके पानी का उपयोग कोई

न करता हो। मन्त्र का जप करते समय यदि किसी ने कुएँ में से जल भर लिया, तो प्रयोग निष्फल हो जाएगा।

१५. मामदा (महम्मदा) वीर की साधना

जल की जोगणी, पाताल का नाग ! उठ अबीर जहाँ लगाऊँ, दौड़ के मार दौड़ के मार। दुहाई महम्मदा वीर की, तुर्कनी के पूत की, दुहाई माला चक्रवी की। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : किसी भी ग्रहण-काल में मन्त्र को सिद्ध कर ले। बाद में जब मन्त्र से काम लेना हो, तब जल-पूर्ण नदी या तालाब के पास जाए। नागरबेल के बड़े 'पान' में, जो पूजा में प्रयोग किया जाता है, थोड़ा-सा 'अबीर' रखकर उसे 'गूगल' की धूनी दे। उस पान के बीड़े को मुँह में रखकर नदी या तालाब के जल में जाए और सात बार डुबकी लगाए। उस समय उक्त मन्त्र का जप भी सात बार कर लेना चाहिए। फिर उस अबीर को पान में से निकाल कर सुरक्षित रख ले। इस अबीर को शत्रु के मुँह पर मारने से शत्रु को घोर कष्ट होगा।

१६. शत्रु को परास्त करने का मन्त्र

साहतिल वजोह !

विधि : उक्त मन्त्र के दो प्रकार के अनुष्ठान हैं—१ छोटा, २ बड़ा। छोटा अनुष्ठान १० दिनों का है, बड़ा अनुष्ठान एक वर्ष का। इन अनुष्ठानों से शत्रु का पराभव होता है। शत्रु को परास्त करने और उस पर विजय प्राप्त करने के लिए यह एक अमोघ शस्त्र है। शत्रु एक हो या अनेक हों—सभी पर पूरा प्रभाव होता है।

छोटा अनुष्ठान : ठीक मध्याह्न के समय (दिन के १२ बजे) किसी निर्जन जङ्गल में जाकर ऐसा स्थान चुने, जहाँ से लोगों का आना - जाना न होता हो। सिर नङ्गा कर खड़े होकर १००१ बार उक्त मन्त्र का जप करे। आँखें बन्द रखे। जप के बाद भूमि के ऊपर पश्चिम की ओर मुख करके बैठ जाए। फिर दाहिना हाथ उल्टा कर भूमि पर पाँच बार मारे और उक्त मन्त्र का उच्चारण करे। मन्त्र के उच्चारण के साथ शत्रु की आकृति का ध्यान करे। इसके बाद बाँयाँ

हाथ उल्टा कर भूमि पर पुनः पाँच बार मारे और हर बार मन्त्र का उच्चारण करे। साथ ही शत्रु का ध्यान करे। १० दिनों तक यह अनुष्ठान करे। इस प्रकार कुल १० हजार जप होगा। इससे मन्त्र सिद्ध हो जायगा। इस छोटे अनुष्ठान में किसी भी प्रकार के नियम-पालन की आवश्यकता नहीं है। जब कोई शत्रु परेशान करे, तब उसका ध्यान कर उक्त प्रयोग का पुनरावर्तन करे। अथवा पहले दाहना हाथ उल्टा कर पाँच बार भूमि पर मारे, फिर बाँयाँ हाथ उलटा कर पाँच बार भूमि पर मारे। साथ ही मन्त्र-जप और शत्रु का ध्यान करता रहे। ऐसा करने से वह शत्रु परास्त होगा, साधक की विजय होगी।

हाथ उलटा करने पर हथेली आकाश की ओर होगी और हथेली के पीछे का भाग भूमि की ओर होगा।

बड़ा अनुष्ठान : यह चार 'चिल्लों' में पूरा होता है। पहला 'चिल्ला' ४० दिनों में पूरा करे। बाद के ४० दिन छोड़ दे। फिर दूसरा 'चिल्ला' करे और ४० दिन खाली छोड दे। अन्त में चौथा 'चिल्ला' करे।

उक्त चार अनुष्ठान (चिल्ला) हो जाने से साधक की जिह्वा (वाणी) में ऐसा प्रभाव आ जाएगा कि चारों तरफ से गोलों या या गोलियों की वर्षा हो और अनेक शत्रु साधक को मारने के लिए आ जाएँ, तो साधक केवल एक बार उन सबको सम्बोधन कर दाहने हाथ से सङ्केत करेगा और उक्त मन्त्र का उच्चारण करेगा, तब तुरन्त सब गोले-गोलियाँ बेकार हो जाएँगी और सभी शत्रु भाग जाएँगे। यही नहीं, इस मन्त्र का साधक यदि उड़ती हुई चीलों, कौओं या हिंसक पशु-पक्षियों की ओर हाथ से सङ्केत कर मन्त्र का उच्चारण करेगा, तो आकाश में उडते पक्षी नीचे भूमि पर गिर पड़ेंगे और जङ्गली पशु इत्यादि वश में आ जाएँगे।

विशेष : १. चाँद की १७ तारीख से पहला 'चिल्ला' (अनुष्ठान) प्रारम्भ करे और ४० दिनों में उसे पूरा करे। बाद में ४० दिन 'अनुष्ठान' न करे।

२. चाँद की १८ तारीख से दूसरा 'चिल्ला' (अनुष्ठान) प्रारम्भ करे और ४० दिनों में उसे पूरा करे। बाद के ४० दिन न करे।

३. चाँद की १६ तारीख से तीसरा 'चिल्ला' (अनुष्ठान) प्रारम्भ करे और ४० दिनों में उसे पूरा करे। बाद के ४० दिन न करे।

४. चाँद की २० तारीख से चौथा अर्थात् अन्तिम 'चिल्ला' (अनुष्ठान प्रारम्भ करे। बाद के ४० दिन अनुष्ठान न करे।

उक्त प्रकार ३२० दिनों का बड़ा अनुष्ठान होगा। इन सब दिनों में यम-नियम का पालन निम्न प्रकार करना चाहिए—

(१) मांस-मछली-अण्डा आदि आमिष भोजन का त्याग करे। निरामिष खान-पान करे। सीधा-सादा सात्विक भोजन एक बार करे।

(२) ब्रह्मचर्य का अखण्ड पालन करे।

(३) सूर्योदय से सूर्यास्त तक मौन व्रत का पालन करे। न इशारे से, न जबान से या सङ्केत से, न और किसी भी तरह से किसी को कुछ बोलने या कुछ समझाने की मनाही है।

(४) प्रत्येक ४० दिन की जप-संख्या सवा लाख है। प्रति-दिन ३१२५ बार जप करे, तो ४० दिनों में सवा लाख जप होगा। ऐसा चार बार करना है। 'चिल्ले' के बाद ४० दिनों में मन्त्र का स्मरण बराबर करता रहे।

(५) प्रति-दिन जङ्गल में—निर्जन स्थान में दोपहर के समय जाए और सिर नङ्गा करके खड़े रहकर मन्त्र का जप करे। संख्या ऊपर बताई है।

(६) चार अनुष्ठानों व चार बिना अनुष्ठान के दिनों में कोई भी नियम यदि भङ्ग होगा, तो पूरी साधना निष्फल होगी। अतः पूरी सावधानी रखे।

(७) 'फल-श्रुति' के अनुसार शक्ति प्राप्त करना प्रयोग-कर्ता पर—उसकी आन्तरिक सूझ-बूझ पर निर्भर है। इस प्रयोग से ऐसी अपूर्व शक्ति प्रगट होती है कि जिन्नात, हमजाद, यक्षिणी, भूत-प्रेत-प्रेतिनी व कर्ण-पिशाचिनी जैसी शक्तियाँ साधक के आस-पास रहकर उसका मन-चाहा कार्य करने में सहायिका होती हैं।

दुर्लभ शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री भूपेन्द्रदत्त शर्मा
१४५ नया बाँस, नदी मार्ग, मुजफ्फर नगर (उ. प्र.)-२५१००२

१. वशीकरण-मन्त्र

(१) काला - कलुवा काली रात, काला भेजूँ आधी रात। जब वह आवे आधी रात, तन मुझ लागे सारी रात। कलुवा वीर अमुक को, बैठी को उठा लाओ। सोती को जगा लाओ, खड़ी को दौड़ा लाओ। हाल लाओ—फिलहाल लाओ। जो न लाओ, तो सगी बहन - भाञ्जी की सेज पर पग धरे।

विधि : अमावास्या-से-अमावास्या तक उक्त मन्त्र का 'जप' करे। 'जप' करते समय साधक का मुख साध्य-स्त्री के निवास-दिशा की ओर होना चाहिए। जब 'जप' करे, तब एक-मुखी सरसों के तेल का 'दीपक' प्रज्वलित करे। एक पान व दो लौंग और पाँच लड्डू 'कलुवे' के नाम रखे। मन्त्र में जहाँ 'अमुक'-शब्द है, वहाँ साध्या का नाम लेना चाहिए। यह ध्यान रहे कि साधक का साध्या से शत्रु-सम अथवा मित्र-रूप में परिचय अति आवश्यक है।

(२) फैल के चन्द्र मुखे, सति का वर पड़े, धन कढ़े सलाम कर बीम जारी फैल के धलीम, तोड़े फल लाग-तार, सवा स्तूर बड़ियाँ लाग, मेरी अडियाँ लाग, सुन्दर कास्का बड़े फल के दिया जाम कड़े, असत नाम आदेश करे।

विधि : उक्त मन्त्र की साधना-विधि-प्रयोग ज्ञात नहीं है।

२. शत्रु-त्रासन-मन्त्र

(१) बार बाँधो बार निकाले, जाकाट धारनी सूजाए। लय बहरना चौ हाथ से, तौ काट दाँत से। दुहाई मामा हवा की।

विधि : किसी भी दिन से उक्त मन्त्र की साधना आरम्भ करे। 'पूजा'-स्थल जहाँ जप करना हो, वहाँ पर चौका लगाए। उस पर सफेद चादर बिछाकर पश्चिम की दिशा की ओर मुँह करे। अपने सम्मुख शुद्ध घृत का 'दीपक' प्रज्वलित करे। साथ में थोड़ा हलवा, दो पूड़ी, मेवा, इत्र व गाँजे की चिलम भी रखे। लौंग के दो जोड़े 'दीपक' के सम्मुख रखे। लोहबान की धूप दे। एक सौ एक मन्त्र से एक नीम्बू को अभिमन्त्रित कर अन्त में उस नीम्बू में सुई चुभो दे। ध्यान रहे कि नीम्बू में शत्रु की भावना होनी चाहिए। तत्पश्चात् सम्पूर्ण सामग्री को नदी में डाल दे। नीम्बू व दीपक वहीं रहने दे। चालीस दिन ऐसा ही करे। अन्त में जब नीम्बू को सुई से छेदा जाएगा, तो शत्रु को पीड़ा होगी।

(२) ॐ नमो काल भैरूँ, कङ्काल का वीर। मार-तोड़ दुश्मन की छाती घोट। हाथ काल जो काढ़ बत्तीस दांत तोड़। यह शब्द न चले, तो खरी जोगिनी का तीर छूटे। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य नाम आदेश गुरु का।

विधि : होली-दीपावली-ग्रहणादि किसी विशेष पर्व में श्री-भैरव जी की यथोपचार पूजा करे। जप के समय सरसों के तेल का चौमुखा 'दीपक' व गुग्गल की 'धूप' का प्रयोग आवश्यक है। 'मन्त्र' का जप दस हजार की संख्या में होना चाहिए। 'प्रयोग' के समय रक्त वर्ण के कनेर के इक्कीस पुष्प और गुग्गल की इक्कीस गोली लेकर, उनको सरसों के तेल में डुबोए। प्रत्येक पुष्प व गोली को मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर अग्नि में 'होम' करे। होम करते

समय शत्रु का ध्यान रखना चाहिए। इस प्रकार इक्कीस दिन करते रहने से शत्रु को अत्यधिक कष्ट भोगना पड़ता है।

ॐ क्लीं-क्लीं-क्लीं-क्लीं मार-मार, भक्ष - भक्ष काली माता, महा-काली तेरी मार, उलटन्त वेद, पलटन्त काया। फुर काली देवी दुहाई।

विधि : मन्त्र की साधना-विधि-प्रयोग ज्ञात नहीं।

३. चोर ज्ञात करने के मन्त्र

(१) ॐ नमो काला भैरूँ, खेचर भैरूँ, भूचरा भैरूँ। आदि भैरूँ-जुगादि भैरूँ। जल भैरूँ, थल भैरूँ। अवला-वला सर्व जीता रण भैरूँ, एक गुग्गल धूप - धार भैरूँ। आई त्रिपुरा देवी, ऋद्ध-सिद्ध लेती आई। चोर का मुख सोखत आई, साह का मुख पोखत आई। देखो भैरूँ जाति तेरी।

विधि : ग्रहणादि-पर्व में श्रीभैरव जी की यथोपचार पूजा करे। रक्त-पुष्प, उड़द की दाल का बड़ा व मद्य अर्पित करे। तत्पश्चात् एक हजार बार उक्त मन्त्र का जप करे। जपान्त तक गुग्गल की धूप और श्रीभैरव जी के सम्मुख चौमुखा दीपक प्रज्वलित रखे। २७ चावलों को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर उन व्यक्तियों को चबाने को दे, जिन पर सन्देह हो। जो भी चोर होगा चावलों के प्रभाव से उस व्यक्ति के मुख में रक्त आने लगेगा। कुछ ग्रन्थों में मन्त्र की अन्तिम पंक्ति में 'देखो' के स्थान पर 'देवो' व 'जाति' के स्थान पर 'जीति' पढ़ने को भी मिलता है।

(२) ॐ नमो आदेश गुरु जी को। ॐ काली - काली महा-काली, केसरी काली महादेववाली। पञ्च-पण्डवों की विडाली, जिए चोर पकडि दिजिए। चोर छूटे, महादेव को मत फूटे। खण्डा नी कालजा, सोसा बीर-कलुवा वीर, दोनों भाई हृदय बैठे कलेजी खायै। फुर मन्त्रों, ईश्वरी वाचा।

विधि : उक्त मन्त्र भी हस्त-लिखित चर्म-ग्रन्थ पर लिखा हुआ है। अति प्राचीन ग्रन्थ होने के कारण स्पष्ट रूप से विधि-प्रयोग प्राप्त नहीं है।

४. बुद्धि-वृद्धि का मन्त्र

ॐ नमो देवी कामाख्या, त्रिशूल-रब-हस्त-पाद्या-पाती, गरुण सर्व लखी तु प्रीतये, समाङ्गन तत्त्व - चिन्तामणि, नरसिंह चल-चल, क्षोन कोटी कात्थानी तालव प्रसाद के ॐ ह्रीं ह्रीं क्रूं त्रिभवन चालिया-चालिया स्वाहा।

विधि : 'रोहिणी'-नक्षत्र से 'रोहिणी'-नक्षत्र तक उक्त मन्त्र का 'जप' साधन करे। भगवती कामाख्या की यथोपचार पूजा कर मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करे। जप - काल में पवित्रावस्था होनी चाहिए और जपान्त तक शुद्ध घृत का दीपक प्रज्वलित रखे। जप के पश्चात् 'प्रति - दिन' इक्तालीस तुलसी - पत्रों को मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर खा लेना चाहिए। इस प्रकार मन्त्र-साधना-विधान से बुद्धि में आश्चर्य-जनक-रूप से वृद्धि होती है।

५. बेताल-साधना-मन्त्र

ॐ नमो वीर बेताल, माई काली के लाल। सङ्कट भगाओ, देर मत लगाओ। जल्दी आओ, कुरु-कुरु फट् स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र का जप श्मशान में अर्द्ध-रात्रि के समय से करे। प्रति - दिन इकतीस हजार 'जप' व दशांश 'हवन' भी करे। 'हवन' में समिधा आक की और चरु कड़वे तेल - मिश्रित राई की रखे। 'जप' के समय बाकला व मद्य अपने सम्मुख बेताल के नाम से रखे। इक्कीस दिन इस विधि से 'जप' करने पर बेताल साधक के सम्मुख भय-प्रद-रूप में उपस्थित होता है। इससे साधक को विचलित नहीं होना चाहिए और तुरन्त ही मद्य व बाकला बेताल को भेंट-स्वरूप दे देना चाहिए। इससे बेताल प्रसन्न होगा। तब साधक उससे सङ्कल्प कराए कि जब भी मन्त्र द्वारा आवाहन करूंगा, वह उपस्थित

हो, मेरे सद् कार्यों में आई बाधाओं का निवारण करेगा। जन-हित में ही इस साधना का उपयोग करे, अन्यथा हानि होती है।

६. शैतान-वशीकरण-मन्त्र

शे अजमतो आलैकुम या शैतानुल असवदी व या शैतानुल अवियाजी व या शैतानुल सअसकी व या शैतानुल अहमरी व या शैतानुल रजीम हाजिर शौ, हाजिर शौ, हाजिर शौ।

विधि : जुमेरात (वृहस्पतिवार) को रात्रि के समय किसी कब्रिस्तान अथवा दरगाह में जाए, जहाँ एकान्त हो। पश्चिम दिशा की ओर मुँह कर उक्त मन्त्र का ग्यारह माला मुस्लिम रीति से करे। 'जप'-काल में पवित्रावस्था होनी चाहिए। जब जप करे, तब एक पत्थर के 'दीपक' में कड़वा तेल भर कर और रुई में उक्त मन्त्र को कागज पर लिख-लपेट कर 'दीपक' प्रज्वलित करे। जब तक 'जप' होता रहे, तब तक 'दीपक' प्रज्वलित रखे। दूसरे दिन प्रातः उस 'दीपक' को देखे। उसमें जो तेल शेष रह जाए, उस तेल को एक बोतल में संग्रह करे। ऐसा इक्कीस दिन करे। शैतान उपस्थित होगा। यदि इक्कीस दिनों में शैतान उपस्थित न हो, तो चालीस दिन 'जप' करना चाहिए। इस अवधि में शैतान जप-कर्ता के सम्मुख अवश्य ही उपस्थित होगा। जब शैतान आए, तब बोतल में संग्रह किया हुआ तेल शैतान को पीने के लिए दे। उसके आने पर साधक भयभीत न हो क्योंकि वह 'खाउँ - खाउँ' करके आता है। यदि साधक भय के कारण आसन छोड़ भागता है, तो जीवन भर पागलपन की अवस्था भोगनी पड़ती है। जब शैतान खाउँ-खाउँ करके दौड़े, तभी उसको पीने के लिए तेल दे। जो तेल शेष रहे, वह वहीं गिरा दे।

प्रत्येक दिन 'जप' के अन्त में कहे—'या शैनातुल या इवलीस आवो—हमसे दोस्ती करो, हमसे मिलो, मेरा सब काम करो, हमसे मत छिपो।'

उपयोगी प्रकाशन

हिन्दुओं की पोथी	२५.००
वर्ण-बीजाक्षर-साधना	४०.००
भैरवोपदेश	१००.००
अनुभूत साधना	२५.००
बीजात्मक सप्तशती	२५.००
श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्र	२५.००
दीक्षा-प्रकाश	३५.००
साधना-रहस्य	६०.००
स्वर-विज्ञान	७५.००
मन्त्र-कोष	३००.००
सचित्र मुद्राएँ एवं उपचार	३०.००
श्रीबगला-साधना, पुष्प १	६०.००
नव-ग्रह-साधना	१००.००
महा-पर्व नवरात्र-विशेषांक	१००.००
महा-पर्व दीपावली-विशेषांक	४५.००
सौन्दर्य-लहरी के यन्त्र-प्रयोग	२०.००
श्री श्रीविद्या-साधना, पुष्प १ से ५	२००.००
श्रीयन्त्र-रहस्य	२०.००
विशुद्ध चण्डी (श्रीदुर्गा सप्तशती)	४५.००
सप्तशती के विविध प्रकार	२५.००
श्रीबाला-कल्पतरु	३५.००
श्रीसूक्त-विधान	३५.००
श्रीरमा-पारायण	३५.००
श्रीकमला-कल्पतरु, पुष्प १ से ३	१२०.००
श्रीदुर्गा-साधना, पुष्प १ व २	५५.००
मन्त्र-कल्पतरु, पुष्प १ व २	७०.००

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज - २११००६